॥ श्रीनाथजी ॥

गोविन्द मणिमाला—
चतुर्थमणि

श्रीघनश्याम सागर ।

रचयिता
कवि घनश्याम

सम्पादक
वागरोदी कृष्णचन्द्र शास्त्री

प्रकाशक
विद्याविभाग नाथद्वारा ।

प्रथमावृत्ति | सं० २००८ | मूल्य ५)

कृष्ण जयन्ती

व्यवस्थापक—
बागरोदी कृष्णचन्द्र

मुद्रक—
श्रीनन्दलाल उपाध्याय
श्रीसुदर्शन यन्त्रालय,
“ श्रीनाथद्वारा ”

गोस्वामितिलकायित श्री १०८ श्रीगोविन्दलालजी महाराज
श्रीनाथद्वारा

 प्रकाशक—विद्याविभाग नाथद्वारा

श्रीसुदर्शनयन्त्रालय, "श्रीनाथद्वारा" [राजस्थान]

समर्पणम्

त्वदीयं वस्तु गोविन्द ?
तुभ्यमेव समर्पये

परम कारुणिक पूज्य **श्रीगोविन्द** ! मुझ अकिञ्चन के पास ऐसी
कोई भेट योग्य वस्तु नहीं जिसे चढा आपको प्रसन्न कर सकूं
इसी से दयालु प्रभु आपके समाश्रित भोले ब्रजवासी
कवि घनश्याम की भक्ति भाव भाषा भरित
कविताओं को ही "घनश्याम सागर" के
रूपमें कर कमलोंमें समर्पित
कर अपने को
धन्य मानता
हूँ।

आपका
बागरोदी कृष्णचन्द्र

घनश्याम सागर

अनुक्रमणिका

उदयपुर तरङ्ग ।

कांकरोली तरङ्ग

कृष्णलीला तरङ्ग १२७

ऋतु तरङ्ग

शृङ्गार तरङ्ग १८५

श्रीजी के झापटिया श्री गोपीलालजी गोरवा

प्रकाशक—विद्याविभाग नाथद्वारा

श्रीसुदर्शनयन्त्रालय, " श्रीनाथद्वारा "

श्रीगोपीलालजी गोरवा

आपका जन्म सं० १९३८ श्रावणी अमा है । पिता श्रीजमना दासजी गौरवा, माता जडाव बाई है आपके पूर्वज श्रीनाथजी के पधारनेके समय यहां आये और तब से ही आज तक आपका कुटुम्ब श्रीनाथजी की सेवामें संलग्न है ।

आपकी साधारण शिक्षा लालूजी पण्डित से हुई और साहित्य की और अभिरुचि कविवर घनश्यामजी ने उत्पन्न की और अपना निज स्नेही बना लिया । तबसे आप साहित्य के सच्चे पुजारी बन गये

आपने अपने पिताके परलोक प्रयाण के अनन्तर से ही दश वर्ष की अवस्था में सारा गृहभार संभाल लिया । और परम स्नेह कूकाजी उस्ताद की सहायता से आगे बढ चले । और कूकाजी उस्ताद को ही अपने पिताके समान मानते रहे । आपने अपने चार विवाह किये उनमें एक पत्नी और तीन पुत्रियाँ अवशिष्ट है ।

आपने श्रीविठ्ठलनाथजी में झापटिया, पानघर, फूलघर, दूधघर, एवं अन्यान्य छोटे वडे कार्य किये, फिर श्रीनाथजी की सेवामें आगये और यहां वडे बाग के मुखिया, झापटिया का कार्य किया संप्रति कुवेरकी पोली पर पोलिया का कार्य करते हैं, श्रीसुदर्शनजी के इत्र चढाना ध्वजका चढाना भी आपका कार्य है ।

आप त्यागी सफल सांझी आदि के कलाकार मन्दिरकी अनेक पद्धतियों के विशेषज्ञ है । दर्शनों की व्यवस्था में आप विशेष सह-योग देते हैं आप स्वभाव के सरल एवं गम्भीर है । यह विशाल संग्रह आपके सञ्चय का फल है ।

सम्पादक

वागरोदी कृष्णचन्द्र शास्त्री

प्रकाशक—विद्याविभाग नाथद्वारा
श्रीसुदर्शनयन्त्रालय, "श्रीनाथद्वारा"

सम्पादक का वक्तव्य

जब मैंने २००३ की कृष्ण जयन्ती पर साहित्य रसाल का सम्पादन साहित्य मण्डल की ओर से किया उस समय उस की भूमिका में मैंने यह उल्लेख किया था कि मुझे श्रीगोपीलालजी जमनादासजी गोरवा जोकि श्रीनाथजी के पोलिया एवं एक साहित्य प्रेमी है, मुझे नाथद्वारीय अन्य कवियों का साधारण परिचय देते हुए स्वर्गीय कविवर श्रीघनश्यामजी की कविताओं का संग्रह दिया है और मैं उसी के आधार पर 'घनश्याम सागर' का सम्पादन कर रहा हूँ। और शीघ्र ही इस कार्य को पूरा कर साहित्य रसिको एवं कविता प्रेमियों के समक्ष अमूल्य निधि लेकर उपस्थित होऊँगा।

पर समयाभाव या परिस्थिति बस ऐसा न हो सका उसका कारण एक ओर तो मुझे साहित्य सम्मेलन की प्रथमा, मध्यमा, उत्तमा तथा कलकत्ता बनारस की परीक्षाओं के साथ अंग्रेजी की बी. ए. एम. ए. तक की परीक्षाओं का अधिक समय तक अध्यापन कराना और वह भी निस्वार्थ निःशुल्क एकाकी मुझे ही साथ ही अन्य साहित्यिक कार्य एवं संस्थाओं के गुरुतर कार्यों को करना।

दूसरे कवि के बहुत से अव्यवस्थित और अस्त व्यस्त संग्रह को जुटाना सुधारना संवारना एवं अपने हाथों से ही उसकी प्रति लिपि करना आदि; किन्तु यह कहे बिना नहीं रह सकता कि श्रीगोपीलालजी गोरवा ने घनश्यामजी के प्रति प्रेम अटूट श्रद्धा से युक्त हो समय २ पर मुझे प्रोत्साहन दिया तथा अपना अमूल्य समय देकर मेरी आगत कठिनाइयों को दूर कर कवि की कविताओं के प्रेमी कांकरोली निवासी बालमुकुन्दजी से भी इस कार्य में आवश्यक सहायता दिलाई।

इनके अतिरिक्त अपने साथी श्रीनन्दलालजी सनाढ्य जोकि कवि-घनश्यामजी के सच्चे उपासक पूर्ण प्रेमी साहित्य के रसिक कृतश्रम व्यक्ति है इनसे मुझे कवि के अनेक संस्मरण दिलाये और कविताओं को सुधराया और सचेत किया इससे मुझे सब कार्यों के होते हुए भी समय निकाल कर इस कार्य में जुटना ही पडा परन्तु सब कुछ होने पर भी इस सागर के संग्रह में मुझे पूर्ण सन्तोष नहीं हुआ, क्योंकि कविके ग्रन्थ महबूब सागर, 'घनश्यामविलास' 'वैराग्य पचासा' और अनेक फुटकल कविताएं उपलब्ध न हो सकी।

सुना गयाहै कि यद्यपि ये पुस्तकें अभी व्यक्तियों के पास है पर वे इनका मूल्य नहीं समझते और संसार की निधिको अपनी निधि मान बैठे है। उसमें कवि की तो कुछ हानि नहीं उनके कुछ कवित्त ही कवित्वके परिचायक होंगे किन्तु न देने वाले व्यक्ति अपने जीवन को अवश्य अन्धकार में डाल चुके हैं।

अस्तु जब मैं 'घनश्याम सागर' के संग्रह में जुटा तो मेरे हृदय में अनेक विचारों की उत्ताल तरंगे उठने लगी कि इसका संग्रह किस प्रकार किया जाय और वह कितनी तरंगो में बांटा जाय, अन्त में प्रभु प्रेरणा से हृदय ने निर्णय करलिया और उसीके अनुरूप मैंने इसको लिखना प्रारम्भ कर दिया।

सागर के प्रारम्भमें मैने मङ्गलाचरण लिख कर प्रथम स्तुति तरङ्ग को स्थानदिया है जिसमें कविके स्तुति सम्बन्धी आवश्यक पद्य है और उन्हों से कविकी भक्ति भावना स्फुट होती है।

दूसरी तरंग नाथद्वार है क्योंकि कवि यहां विशेष रूपसे रहे थे अतः इसमें नाथद्वार सम्बन्धित सभी कविताएँ और कविका प्रकाशित "छप्पन भोग" वर्णन भी सम्मिलित किया है।

तीसरी उदयपुर तरंग है इसमें नृप वर्णन उदयपुर वर्णन, आखेट, विवाह प्रसंग का वर्णन है ।

चोथी कांकरोली तरंग है इस में रायसमुद्र कांकरोली आदिका वर्णन मोई ग्रामके दीपसिंह कोठारा रावजी आदि के वर्णन है ।

पांचवी कृष्णलीला तरंग है इसमें कृष्णलीला युक्त सभी पद्य विशेषतः रक्खेगये हैं ।

छटी ऋतु तरंग है इस में कवि की सुन्दर भाव भरी षट्‌ऋतुओं की कविताएँ सजी है ।

सातवीं शृङ्गार तरंग है इस में मुग्धा मध्या प्रोढा और अभिसारिकादि के वर्णन बडे मधुरतम हुए है ।

आठवीं वैराग्य तरंग है इस में वैराग्य से संवलित सभी अनुपम कविताएँ लिखी है ।

नवमी तरंग आनन्द रक्खी है इसमें बची हुई सभी विषयों की कविताओं का संग्रह है क्योंकि प्रत्येक प्राणी को सभी रसोंकी सभी प्रकार के हावोभावों की आवश्यकता समय समय पर होती है ।

इस ग्रन्थ के इस रूपमें सम्पादन करने का यही भावहै कि स्तुति से प्रारम्भ आनन्द में जीवकी परिणति होती है शृंगारादि रस मध्य में आते हैं वही ढंग मैंने अपनाया है ।

सागरमें भाव भाषाशब्दों की तोड मरोड आदि सब कविकी है केवल इन तरंगों के पूर्व के दोहे मैंने लिखे है और स्थान २ पर जो जो कविताएँ अपूर्ण रही उस में कुछ शब्द मैंने रक्खे हैं। क्योंकि कवितोंमें रिक्त स्थान अच्छा नहीं रहता अतः इस धृष्ठता के लिए रसिक एवं कविजन क्षमा करेंगे । जो कुछ त्रुटियां है वह मेरी है और सौन्दर्य सब कविका है ।

इस प्रकार प्रथम भाग की समाप्ति कर मैंने श्रीगोपीलालजी से इसे प्रकाशन कराने के सम्बन्धमें बातचीत की और उसी समय से पोलियाजी भी इधर उधर उसकी छपाने की चिन्ता में लगे पर जैसा उचित मार्ग मिलना चाहिये था वह न मिल सका न किसी प्रकार का किसी से बचन ही मिला क्योंकि इसके प्रकाशन का द्रव्य खर्च कौन करे। तब एक दिन प्रसंगोपात्त मैंने महाराज श्रीकी दयालुता एवं साहित्य रसिकता का परिचय दिया और कहा कि आप श्रीमानों में मेरे साथ चलकर इस ग्रन्थ के प्रकाशन की प्रार्थना करें। अन्त में वही किया गया और श्रीचरणों में पहुँच श्रीमानों को कुछ कविताएँ कवि की सुनाते हुए प्रकाशन की आज्ञा मांगी तो गोस्वामि तिलकायित श्रीगोविन्दलालजी महाराज श्रीने साहित्य रसिक, दीनोपकारक परम कृपालु गुणज्ञ एवं व्रजवासियों के साथ अपूर्व स्नेह होने के नाते अपने श्रीसुदर्शनयन्त्रालय में ग्रन्थके मुद्रण की आज्ञा प्रदान करदी और मुझे कृतार्थ कर मेरे श्रम को भी आंका।

अतः मैं तो यह निःसन्देह लिख सकता हूं कि यह महाराज श्री की ही कृपा का फल है कि एक भोले ब्रजवासी की अस्तमित कविताएँ आज समाज के समक्ष प्रस्तुत हो रही हैं।

यदि श्रीमानों की इसी प्रकार की आगे भी कृपा रही तो इसका दूसरा भाग भी तय्यार करूंगा जिसमें लावनी गीत खेल आदि का संग्रह होगा।

विनीत—

बागरोदी--कृष्णचन्द्र शास्त्री

साहित्यरत्न

श्रीनाथद्वारा।

कृष्णजयन्ती

सं०२००८

रचयिता--कवि घनश्यामजी

प्रकाशक—विद्याविभाग नाथद्वारा
श्रीसुदर्शनयन्त्रालय, "श्रीनाथद्वारा"

कविपरिचय

कवि घनश्यामलाल का जन्म विक्रम सम्वत् १९१६ में कांकरोली (उदयपुर मेवाड) में हुआ था, आप जाति के सनाढ्य ब्राह्मण थे, पिताका नाम चतरजी था। इनके पूर्वज सातस्वरूपों में तृतीय पीठ श्रीद्वारिकाधीशके मन्दिर तथा गाम में पण्ड्यापन [पुरोहिताई] की आजीवका करते थे वंशानुसार उसी कार्य में आप भी प्रवृत्त हुए। पर बालकाल से ही आपका कविता के प्रति प्रेम था। यद्यपि आप पढे विशेष नहीं थे और न लिखने में ही कुशल थे पर आप में प्रतिभा पूर्ण थी। इसीसे कांकरोली के महाराजा गोस्वामि श्री बालकृष्णलालजी की माता को प्रति दिन अपनी अभूत पूर्व रचनाएँ सुनाया करते थे। माजीको कविताएँ सुननेका बडा अनुराग था अतः वे कविकी प्रतिभा को बढाने एवं प्रकट करनेके लिये नवीन एवं प्राचीन कवियों के अनेक भाव पूर्ण कवित्त सुनाने पर पारितोषिक भी दिया करती, कवि घनश्याम को प्राचीन कवियों के अनेक सरस कवित्त उपस्थित थे इन्ही कवित्तों की उपस्थिति ने आपकी सुप्त कवित्व शक्तिको जागृत कर दिया और आप बडे अनूढे ढङ्गकी कविताएँ करने लगे मित्रमण्डली या किसी भी स्थान पर आप बैठते वहीं अविच्छिन्न रूपसे वाक् धारा निकल पडती कोई भी विषय चलता कोई समस्या दी जाती कविको उसकी पूर्ति में देर नही लगती।

जैसें—

"सरोता बीच सुपारी"

"देख घनश्याम घनश्याम तोसों बोलीमें"

"देख घनश्याम घनश्याम याद आवेरी"

इस प्रकार की अनेक कविताए आपकी प्रतिभा के पुष्ट प्रमाण है, काशी कवि समाज में भी आपने अनेक समस्याओं की पूर्तियां की पर आपकी कविताओं का संग्रह कभी तो मित्रमण्डली कर लिया करती किन्तु कभी वे रचनाएँ मनोरञ्जन का विषय ही बनती इस से कविकी अनेक कृतियां विलीन होगई और लिखा हुआ संग्रह भी असावधानता से बहुत अस्तव्यस्त होगया।

आपकी कविताओं को देख कर यह निर्विवाद कह सकते हैं कि आपकी रुचि सभी रसों एवं भावों पर थी, परन्तु आप नायिका भेद के अनुपम प्रेमी प्रतीत होते है तथा प्राकृतिक छटाके भी सफल कलाकार आप अपूर्व रसिक सीधे भोलेभाले व्रजवासी थे- इसीसे जो कुछ भी वर्णन आपके द्वारा हुआ है वह प्रायः स्वाभा-विक और रसिकता से भरा है। पर कविताओं में नवीन बिचार शैली भी परिपुष्ट हुई है कल्पनाको स्थान कविकी रचनामें बहुत कम मिल सका है। आपको व्यावहारिक बातोंका पूर्ण ज्ञान था समाजमें होने वाली छोटी बडी सभी घटनाओं पर आपकी द्रष्टि थी व्रज-वासियो में होनेवाले नाते आदि के परिणाम से भी आप परिचित थे इसी से उसका ग्रथन भी आपने किया है और समाज को उपदेश दिया है।

आप पर सभी श्रेणिके व्यक्तियों की अपूर्व श्रद्धा थी इसीसे सभी लोग आपको गुरु (उस्ताद) माना करते थे और सर्वदा साथ रहने में अपना सौभाग्य मानते थे। खेल रचना करने में आप पटु थे साथ ही स्वयं खेल खेलते भी थे आपका लिखा चन्द्रकुंवर खेल अधिक प्रसिद्ध हुआ आप खेलों के बनाने में कूका उस्ताजी

मनीरामजी को अपना सहायक उस्ताद कहते थे 'घनश्याम' सर्वदा स्वतन्त्रता और सत्यता के प्रेमी थे।

आपने कांकरोली में निवास कर श्रीद्वारिकेश प्रभु माहात्म्य, कांकरोली वैभववर्णन, समुद्रवर्णन, अच्छा किया है (ठाठ मच्छ कच्छन के) पंक्तिया दर्शनीय है। गोस्वामी बालकृष्णलालजी की सवारी आने पर एक सवारी देखने वाली नारीका भी अच्छा वर्णन है (पुलकित घनस्वेद बढ आयो आली , साथही नोचोकी एवं अन्य वर्णन भी कौशल से परिपूर्ण है। इस प्रकार कविता की सुरसरी वहाते हुए आप वहां निवास करते रहे पर काल गति विचित्र है वहां आप अधिक न ठहर सके आपकी कांकरोली के तत्कालीन कर्मचारियों से किसी कारणवस अन वन हो गइ तब आप अपने पूर्वजों के स्थान को छोडके नाथद्वारा चले आये उन दिनों नाथद्वारा में श्रीशालिग्रामजी व्यास राजकीय कार्य कर्ता थे और कविताओं के बडे अनुरागी एवं रसिक अतः आपने अपना सारावृत्त उन्हे सुनाया और (लीजिये बचाय मोय शरण तिहारी आय) तथा 'आज अधवेसराने घेनू आय गेरी है' ये कविताएँ सुनाई और अपना दुःख कहा व्यासजी आपकी प्रतिभा और गुणोंपर मुग्ध होगये तथा अधिक स्नेह करने लगे। कुछ ही दिनों में आपको नाथद्वारा की ओर से बीकानेर श्रीनाथजी की पेढीका भण्डारी बना कर भेज दिया परन्तु कवि घनश्याम स्वतन्त्रता के प्रेमी अधिक मनमोजी और रसिक थे अतः आप श्रीनाथजी को छोड बहुत दिनों तक वहां न ठहर सके और बीकानेर से नाथद्वारा लोट आए। बीकानेर में कविने जो रचनाएँ की है उसका पता कुछभी नहीं लग सका न वहां का विशेष वृत्तही

ज्ञात हुआ कविवर अन्तमें नाथद्वारा को ही अपना चिर निवास स्थान बनाकर रहने लगे और नाथद्वारीय नागरिकों के हृदयको चुराते रहे। व्यास आपको अधिक मानते प्रेम करते थे अत उनसे आपकी खूब पटती थी आप व्यास के एकदम अन्तरंग बन गये थे इसीसे व्यासको आपने बादशाह राजा से ही सम्बोधित किया और लिखा है [सांचो सवाई सिरदार वो अनन्दी रूप] एवं (जापे कृपा होत ताते तनक छटे नहीं) पर भाग्य की गति बड़ी बलवान् है।

जिस व्यासराजा से आपकी अनुपम प्रीति थी वह आपका अन्ततक साथ न देसके और असमय में काल कवलित होगए इससे कविवरको आत्मिक वेदना हुई आपने उस समय अनेक कविताओं से अपने हृदय के दुःख पूरित भावोंको प्रकट किया

" व्याससो विधाता ? कभी फेर भी बनावेगी "

" जिज्ज लाठ व्यासको विलायत में रोवे हैं "

" गाहक गुनीको व्यास राजा सो चल्यो गयो "

अनन्तर श्रीनाथद्वारा महाराज श्रीगोवर्द्धनलालजी ने आपको जीवन निर्वाह के लिये भले मनुष्यों का मुखिया बना कर प्रतिष्ठित पुरुषोंमें स्थान दिया उस पर।

" छाजत छबीलो छत्र धारिन को छत्रपति "

" प्रबल प्रतापो रूप राजत रसालको "

"भूप ही विलोके तेज गोवर्द्धनलाल को "

इन कविताओं से सराहना की, कविवर ने यहां निवास करते हुए सामयिक अनेक ग्रन्थों का निर्माण किया तथा फुटकल भी अनेक कविताएँ लिखी आप के ग्रन्थों में

" महबूब सागर " " घनश्याम सागर " " वैराग्य पचासा "
" छप्पनभोग वर्णन " " चन्द्र कुँवर खेल " आदि है । और

फुटकल में अनेक कविताएँ हैं जिनमें यहां का धाम वर्णन, ध्वज वर्णन, मन्दिर वैभव, श्रीनाथ स्वरूप, महाराज की महिमा, गोकुलस्थ भट्ट छन्नूलालजी की प्रशंसा और सामयिक रवजी भाई, नारायणदत्तजी, चरणदासजी, आदि का वर्णन है कविने एक कविता में दुमाये के सीधों-मिलने का भी उल्लेख किया है जो कि यहां ब्रजवासियों को दिया जाता है छप्पने का और बागड में आग लगने आदि का वर्णन भी अनोखा दीख रहा है फागकी सवारी, गनगौर, कुस्ती, मित्र मण्डली का वर्णन भी अपूर्व सन्निहित है ।

आप अपने मित्रों में विशेष रूपसे चुन्नीलालजी चोधरी गोपीलालजी गोरवा मन्नालालजी का उल्लेख करते हैं । इनसे आप की विशेष प्रीति थी नन्दलालजी सनाढ्य भी आप के प्रेमियों में से हैं । आप को कविवर अधिक साथ रखते थे क्यों कि कवि की अनेक कविताएँ आपको उपस्थित हैं ।

एक समय श्रीमहाराणा उदयपुरने अपनी राजपुत्री का विवाह जोधपुर नरेश के साथ किया जिस समय तोरण के पास जोधपुर के महाराज पहुँचे उस समय हाथी अचानक मचल पडा कविवर वहां उपस्थित थे उन्होंने कहने पर तत्काल ही यह कविता बनाकर पढ सुनाई—" आयो जोधपुर तें जरूर श्रीजोधानाथ "

" हिन्दवान भान के तोरण के द्वार पर
गज ने मजाद देख मस्तक हिलायो है "

जब कविता सुन कर कवि का नाम धाम पूछा गया तो आपने कहा—

"प्रथमतोविप्र ब्रजवासी ब्रजपतिजूको नाम घनश्याम कछु सुयश प्रकाशीहूं"

इस पर महाराणा प्रसन्न हुए एवं अन्य कविताओं के प्रथन की आज्ञा दी तब कविने आखेट और उदयपुर का वर्णन सुनाया तथा महाराणा के प्रशंसात्मक पद्य भी कहे उस पर राणाने कवि को ससम्मान ५०) का पारितोषिक प्रदान किया इस प्रकार कवि अनेक दिनों तक जन मन रञ्जन करते हुए कविता कामिनी का रसास्वादन कराते रहे।

अन्त में सबको असहाय छोड कर सं. १९६८ में कविवर परलोक को प्रयाण कर गये उस समय मित्र मण्डली की क्या दशाएँ हुईं यह वही जानते हैं जिन के साथ कविका खान पान रहन सहन रात दिन रहा हो जो अपनी कविताओं से सभी जनों को सुख पहुंचाता रहा हो वह सबको सहसा छोड कर परलोक का पथिक बन जाय यह किसे अच्छा लगेगा पर विधि के विधान पर किसी का चारा नहीं है। आप की कविता की प्रेमिका गुडली चारन ने जब यह संवाद सुना तो बडी दुःखी हुई और चट मुह से निकल पडा हाय ? पर अन्त में कहने लगी—

"जाकी कविता मन्त्र जस जपत लोग अठ जाम।
रहे अमर या जगत में मरे नहीं घनश्याम" और
दिव जाने "घनश्याम" को सब जग छायो सोर।
मार जिवावे पलक में ता प्रभु सो कहा जोर" ॥

इसी प्रकार आप के परम प्रेमी गोपीलालजी गोरवा हतमनस्क हो गये और उनसे भी ये पंक्तियां निकल पडी।

"धन्न विधाता धन घरी धन धन सुन्दर स्याम।
एक बेर या जगत में फेर भेज "घनश्याम"

आज कविवर घनश्याम अपने पार्थिव शरीर से यद्यपि यहां नहीं हैं फिर भी उनका कवितामय यशः शरीर हमारे समक्ष प्रस्तुत है और हम उनका गुणगान करते हुए नहीं अघाते।

काव्य सौन्दर्य

भारत भूमि अपूर्व रत्नों की खान है । उसमें एकसे एक अमूल्य रत्न उत्पन्न होते रहे हैं और वे अपनी अतुलनीय प्रतिभा से संसार में एक नवीन प्रकाश का सृजन कर जाते है और चिर स्मरणीय बन जाते है। यही हाल कवि घनश्यामजी का है । यद्यपि आज कविको धरा धाम से गये अनेक वर्ष हो चुके है पर जो प्रकाश अपना फैला गये है वह ज्यों का त्यों अभी भी छाया हुआ है । जिधर देखते हैं उधर उनकी कविताएँ नाथद्वार कांकरोली के ब्रजवासियों एवं साहित्य रसिकों के कण्ठ का हार बनी हुई है और सभी उनकी अपूर्व प्रतिभासे प्रकाशित हैं । कविने अनेक दिनों तक नाथद्वार कांकरोली उदयपुर आदि में रह कर जो जो उपदेश दिये हैं हमे साहित्य में प्रवाहित किया है । वह हम भूल नहीं सकते कवि ब्रजवासी थे अतः कविताओं में ब्रजवासीपन आये बिना नहीं रहा है । कहीं कहीं कुछ अश्लीलता भी आगई है। पर अनेक कविताएँ ऐसी है जो रससे परिपूर्ण है, और दर्शनीय है ।
तथा प्राकृतिक छटा एवं भक्ति भाव से पूरित है इसीसे मेरी इच्छा है कि कविकी इस प्रकार की कुछ कविताओं का रसास्वादन कराऊँ जो काव्यत्वसे पूर्ण हैं ।

अस्तु पहिले कविके भक्तिभरित पद्यों का दिग्दर्शन करा कर आगे बढ़ूंगा । कवि एक सीधे और भोले ब्रजवासी थे उसीके अनुरूप आप-में भक्ति के अंकुर भी प्रस्तुटित हुए और श्रीनाथजी एवं द्वारकाधीश के ही चरणों में अपने को चढाकर मस्त हो गये ।

भक्ति

श्रीनाथजी के वर्णन में आप लिखते हैं यद्यपि अनेक तीर्थ है पर मैं तो "सब ही को सार श्रीनाथजूं को मानू में" और तीर्थ मेरे लिये किस कामके । अधिक क्या कहूं जबसे मैंने श्रीजीके दर्शन किये हैं तबसे ही "मुकुट की लटक आय अटकी अँखियाम में" कितना सुन्दर भाव प्राबल्य है । इसी प्रकार द्वारिकाधीश के प्रति भी कवि की अनन्य श्रद्धा है । "आखिर हम चाकर है चारहाथ वारे के" "धन्न-कांकरोली औ दरश द्वारिकेशके" भक्तवर रसखान की तरह आपने भी राघवेन्द्र से प्रार्थना की है कि कभी मेरा जीवन भी ऐसा बनजाय जो "दशरथनन्द की गलीन में पडे रहे" और श्रीकृष्णलीला पर भी आपके लिखित अनेक पद्य है जिन में अपूर्व श्रद्धा ओर भक्ति प्रवाहित हो रही है

"आनन्द के कन्द ब्रजचन्द नन्दजूके नन्द"

" मेटो दुखद्वंद मनमोहन मुरारीजू "

विघ्न विनायक की स्तुति अनुप्रास से पूरित अनोखी लिखी गई है "सुण्ड दण्डवारे गजवदन प्रचण्डवारे वक्रतुण्डवारे प्यारे शरनतिहारी हौं" श्रीनाथजी का मन्दिर वर्णन और सात ध्वजाओं की फहरान भी अच्छी प्रकार से लिखी गई है । " इतै फहरान देखी सातों ही ध्वज न की " भक्ति रसके अतिरिक्त नगरवर्णन मोदी पंसारी बजाज के वर्णन भी अच्छे लिखे गये है और उनकी बजार में प्रसारित वस्तुओं का निर्देश भी किया है ।

प्राकृतिक वर्णन

कविने लालबाग आदि के वर्णन में प्रकृति की छटा को अपनायाहै। आप लिखते है "कदम, अनार, अम्ब, केला, जम्बु, निम्बु, द्रुम,

चन्दन, अनंद कुञ्ज भ्रमर गुञ्जार है" कहीं नारंगिया लटक रही हैं झूम रहे है और "बेरन के वृन्द चहुं औरनतें पूं हैं। जैसी वृक्षों के वर्णन की छटा है उसी तरह पक्षि वर्णन भी मधुर है देखो "वह केकि पपैयरा कोयल कीर चकोर चहूं दिशते चहके" और इधर देखिये यह परेवा कैसे लड रहे है तथा "गटकूं गटकूं यह बोल्यो करें" पादचारी जन्तुओं का वर्णन भी अजीवढंगका है। उसमे वीजू, बिलाव, सिंह, की गर्जना खरगोसका दौडना वराहका विहार करना भी अपूर्व है "कपि कूदें नकुल्ल अनेक चले वह विज्जु बिलाव फिरें बनके" दमोही सर्प अजगर अपने बिलसे बाहिर मुंह निकालते हैं पर जब तोप की आवाज सुनते है तो वापस अपने बिलों में घुस जाते है "जब ही फिर तोप आवाज सुनी, डर ये घुसजात पताल में हैं" कितनी सुन्दर स्वभावोऽक्ति है।

शृंगार

नवनीतलाल की सवारी लालबाग जारही है चारों ओर से नर नारी देख रहे है एक बाला भी देखने आइ है "आइ उदमादतें अकेली अलबेली बाल ' देखत सवारी धूम बिकसि बिकसि परे " और

" सारी उलटानी अति आतुर भुलानी वीर, वेसर कहां भूलि-आइरी तिजोरी में " गोवर्द्धनलालजी की फागकी सवारी है खूब गुलाल उढाइ जारही है वह नारियों पर ऐसी पडी है. कि कुंछ कहते नहीं बनता ' बेंदीं में वेसर में बाजूबंद वेरखी में, विथुरी गुलाल चहुं ओर मुखचंदपे ' गणगोर के समय एक नारी खेलने जा रही है। "छुटन अलक मुरकन गति मोरे मुख, पगकी धरन लचकन लंक मोरे है।

कविका विरह वर्णन घनानन्द की याद दिलाये बिना नहीं रहता उसमें उन्हीका सा भाव प्रवण है।

' अवतो सुध आवे सतावे लुनो कहां लों जियको वरजोंइ करे ' इत नेह के मेहचलें दृगसों विरहा कि घटा गरजोइ करे ' ' जलहीन जों मीन अधीन रहे गति ऐसी है मित्र तिहारे बिना '

एक गोपी श्यामसुन्दर से फाग खेल रही है पर धूमकी भी सीमा होती है अन्तमें वह हारकर कहती है। " पहिले ही पुकार कहीं मोपे रंग डारोंना " एक कृष्णाभिसारिका अपने नायकसे मिलने जारही है उसे कामकी मस्ती में कुछ भी नहीं दीखता "मणिगणवारे वे भुअंग-नके समूहबीच चली ' जात बाल पूछ हूपे पाय धर धर ' एक नायिका में यौवन विकास होरहा है वह अब विकसित होने लगी है। चन्द सी उजारी मुख महकत मंद मंद" •

"कछु कछु चालमें मराल गति होन लागी
कछु कछु मंदमुसक्यान में मिठाई है।"

वालम विदेश चलगये है और अभीतक संदेशा नहीं भेजा है "वालम विदेश ओ संदेश नहिं आवत है " विरहिन के अंगमें अनंग दमक्यो करे"

षड्ऋतुवर्णन

कविने अन्य कवियों की तरह षड्ऋतु वर्णन भी किया है। "वसन्तमें" फूली द्रुमवेली नवपल्लवप्रसून वन, उपवन अंबकेल दाडिम सुहावने " नायिका अपनी सखि से कहती है, देख आली " आइ चित्त चावनी वसन्त मनभावनी" एक नायका का पति अभी तक आया

नहीं है और वसन्त आगई है उस पर वह अपनी सखि से कहती है "कंतविन बेरन वसंत वरछी सी लगे, आग सो अबीर ये गुलाल लगे गोलीसी" प्यारे पति आगये है नायिका बड़ी प्रसन्न है कहती है "आओरी सहेली लो बजाओ री उपंग चंग, आओरी गलीन में अनंगको न डर है"

ग्रीष्म की नोक झोंक भी अच्छी प्रदर्शित की है।

ग्रीषम तपन लागी झुकन गभीर धाम,
तेजमारतंड को प्रचंड होत आवेरी,

पावस का आगमन होरहा है सखि कहती है।

"प्यारो घनस्याम आली आवत हमारे धाम,
मेघ मद मातो आज चंचला नचावेरी"

धीरे धीरे वर्षा बढ रही है और जोर से बूंदे सशब्द गिरती है "कड़कड़ धूम घड घड धाडधाड घरर घुमड घोर आयो चहुँ ओरते"

शीतकाल आगया है इस में प्यारी का स्पर्श बड़ा ही आनन्द प्रद होता है "प्यारी को परसि शीत बाहिर निकारदे" एक स्थान पर कवि शीतकी प्रचंडता बताता है कि ये किसी से भी नहीं डरता "माने नहिं गद्दर दुलाइ ऊन वस्त्रन सो, जाडो बदमास जरा आग सों डर्‌यो करे"

वैराग्य

ऐ नर अब तुझे कितना समय हो गया है जरातो विचार फिर अन्त समय आने पर क्या क्या करेगा।

"आलस में ओसर गमावे कहा मूढ नर"

अब तूं भगवान का भजन कर और "माला मृग छाला ले इकन्त जाय बैठ वन" वहां ही तेरा चित्त स्थिर होगा और प्रभु से भेंट हो सकेगी जिस धन यौवन पर इतरा रहा है वह स्थिर नहीं है यदि अवसर विता दिया तो "फेर का चितापे जाय राम गुन गावेगो" मेरी सीख माने तौ 'छोड सब काम राम नाम गुन गायले'

क्यों कि जिन प्राणोंका तू भरोसा किये हुए है वह
" रोक्यों ना रहेगो विदेशी हंस पाहुनो "

अन्यवर्णन

आखेट वर्णन में शंकर भवानी संवाद अच्छा प्रदर्शित किया है शंकर भवानी से कहते हैं तू बार बार नृपकी पक्ष करती है तो " ऐसी पक्ष करत नरेश की हमेश याते, रान फतेमालहू को तूही समझावे ना" सिंह महाराणा पर अर्जी भेजता है और कहलाता है कि हम इस मेवाड को छोड कर कभी नही जायगें " नीरतो पियेगे एक मण्डल मेवाड में" रायसमुद्र वर्णन की भी अनोखी छबि है।

" और जलमानस मराल मुकता है तहां
वृक्षन लतान में समीर चल झूम्यो है "

समुद्रमे मच्छ कच्छ कैसे उछल रहे है।

"ठाड मच्छ कच्छन के बचन सहत वृन्द,
ग्राह फुफ कारे लोट डारें छवि पेखिये।"

वर्षा का समय है बडे पहाडों की तरह मेघ आकर तट पर झूम रहे है।

"आज राय सागरपे श्रावन ये झूल्यो है।"

अलंकार

एक समय वागड में आग लग गई उसका वर्णन कवि ने संदेहा-लंकारमें कैसा अच्छा किया है ।

केधों यह अनल चकोर चोंच हू ते गिरी,
केधों कीर आगिया को कोउ मूठ मारी है''

उपमालंकार भी कविका अच्छा प्रदर्शित हो रहा है ।

चन्द्र सम भाल रूप राजत विशाल जाको,.
चक्षु मृग कैसे स्वच्छ कटि मृगराज की''

स्वभावोक्ति अलंकार में पक्षियों का कितना सुन्दर वर्णन है ।

''घनस्याम जु खञ्जन खेलत है,
चट चोंचसों चोंच मिलायो करें ।
बुलबुल्ल हँसे गुलगुल्ल लडे,
वो भगेरु कभी दुर जायो करें ।

इस प्रकार कविने सभी विषयों में अपनी प्रतिभाका प्रकाशन किया है जिसे देख आनन्द की वृद्धि हुए विना नहीं रहती ।

भाषा

कविने व्रजभाषा को ही विशेषतः अपनाया है पर कहीं मेवाडी मारवाडी ग्राम्य शब्द भी आगये है कही शब्दों की तोड मरोड भीकी है ।

इति शम् ।

निवेदक

बागरोदी कृष्णचन्द्र शास्त्री

साहित्यरत्न

॥ श्रीनाथजी ॥

घनश्याम-सागर ।

मङ्गलाचरण

श्रीगणपति वन्दना—

दोहा—श्रीगणपति आनंदकरन भालचन्द्र महाराज ।
हंसवाहिनी शारदा सिद्ध करहु सबकाज ॥

कवित्त—

मङ्गल करन दुख हरन उमा के नन्द
मोकों भालचन्द्र को भरोसो अति भारी है
"घनश्यामप्यारे" गणनायक गणाधिपति
गजमुखवारे सुनु वीनती हमारी है ॥
सोहे एकदन्त त्रिभुवन मन मोहे अति
होवे सिद्ध कारज अनेक फल कारी है ॥
सुण्ड दण्डवारे गजवदन प्रचण्ड वारे
बक्रतुण्ड वारे प्यारे सरन तिहारी है ॥

शारदा वन्दना—

एरी हंसवाहिनी भवानी अरी बाकवानी
बुद्धिदैनवारी तूही वेदमें बखानी है ।
"घनश्यामप्यारे" तेरे चरणसरोजहूकी
करुणानिधान कृपा सब जग जानी है ॥
तेरे गुनगाऊं तोहि भूलों नांहि भद्रकाली
कालिका कृपाली वनमाली मनमानी है ।
एरी जगदम्बा एरी नकरु विलम्बा अम्बा
रम्भा राधिका है तू रमा है राजरानी है ॥

श्रीनाथवन्दना—

जादिनतें कीनों मैं दरशन श्रीनाथजीको
कुण्डल प्रभा की छबि इन्दु में न भानमें ।
"घनश्यामप्यारे" हीरा दमकत ठोडीबीच
तेज देख तारे गडे जात आसमानमें ॥
नासिका कमलनैन मृदुल मुखारविन्द
निरखन आवें सुर बैठके विमानमें ।
भूषण भुजान बेनी चरणसरोज कटि
मुकुटकी लटक आय अटकी अँखियानमें ॥

स्तुतितरङ्ग--

श्रीगोपाल कृपालु के "कृष्ण" चरणशिरनाइ।
यह घनश्याम महाब्धिलखु स्तुतितरङ्ग सुददाइ॥

श्रीनाथमहात्म्य—

सुमिरें श्रीनाथजी को शीघ्र सब काज होत
दरशके किये तें नित्य कोटि कष्ट कटिजात।
"घनश्यामप्यारे" ध्वजादण्डके विलोकत ही
अधम अकाण्ड जमदण्ड सर्व मिटिजात॥
सुदर्शनचक्रके प्रताप तप तेजहूते
जेर्जं न लगत सब पाप आप छुटिजात।
चाखि चरणामृतको तनको पवित्र करि
धोकेके दिये ते सब शोक शीघ्र हटिजात॥

ईशमहात्म्य—

कोन नभ मण्डलको छत्र सम छायराख्यो
कोन उडुराज भान टेमपर आनिये।
"घनश्याम" सिन्धु रतनाकर को रोकयो कोन
कोन कीनो शैल सुवरणको बखानिये॥
बकुल कीने श्वेत शुक हरित किये है जिन
चित्रवत कीने है मयूर पहचानिये।
एरे नरमूढ भूल भ्रमत फिरे है कहां
निश्चै दृढराख तिनलोकपति मानिये॥

---

१ देरा २ प्रणाम।

श्रीद्वारक.धीश महात्म्य—

झेला के पड़त झमेला टूट झुंडनमें
घोक देन हेत केहि दोड़े देश देशके ।
"घनश्यामप्यारे" जो टकोरा आरती को सुन्यो
आवत विमान सुरब्रह्मा ओ महेशके ॥
जै जै शब्द होत धुन पावत न पारा बार
वरणों कहां लों मुख थके जात शेषके ।
भूप अमरेश के बिराजभुज सोहीं निधि
धन्न कांकरोली ओ दरश द्वारिकेशके ॥

राम महात्म्य—

कहा कोहू देहे समझे है कहा कोहू जन
करि का सके है नर कठिन कलेसमें ।
"घनश्याम" जाके नाम होते बांध्यो सेतासिन्धु
खम्भ फाड मारयो दैत्य नर हरि भेसमें ॥
मांगवो चहेंतो चहें सांवल सहाते हम
हुंडी सिकार पेठ लारदेत सेसमें ।
दीनको दयाल प्रतिपालक गरीबनको
मेरे रामराजासो न राजा कोइ देसमें ॥

तुच्छ तृणकी जो वाही अवधपुरीको कछु
भाखर भवन की जो निशि दिन ठडे रहें ।
"घनश्यामप्यारे कर पाषान सरजूतट
पङ्कजचरण मेरे चितपर चढे रहे ॥
बार बार सुनिये पुकार हो विधातानाथ
जोपे धनुधारीजूके हाजरिमें खडे रहे ।
कीजे पशु जोन तोहू परम खुशीसे हम
दशरथनन्दनकी गलीनमे पडे रहे ॥

बैठ्यो राज राजत प्रतापी रामचन्द्र भूप
जगमगकोटि भान उदित प्रकाश है ।
"घनश्यामप्यारे" लोने ललित ललाटपर
राजत तिलक मोती अक्षत उजास है ॥
विश्वामित्र आदि सब ऋषिमुनि मात भ्रात
नारद वसिष्ठ हनुमान खास दास है ।
छांगिछत्र चौंर ओ नकीमरु नगारेबजें
अवधपुरी में आज आनन्द विलास है ॥

दोहा—असुरनसों ऐसी करी तुम प्रतापि रघुनाथ ।
सहजतुडाई लंकगढ भालुकपिनके हाथ ॥
अजामीलसे तरगये तारी गनिकाबार ।
राम तिहारे नामकी कहा कहै "घनश्याम" ॥

शङ्कर महात्म्य ।

सोहे गल मुण्डमाल महाकालहूको काल
अतिही दयाल दीन जनपे सहा करे ।
"घनश्यामप्यारे" जटाजूट अरधंग गंग
भङ्गकी तरङ्ग तिन नैनमें रहा करे ॥
डमरु त्रिशूल आक फूलही चढावें शीश
भक्त प्रतपाल दुष्ट जनको दहा करे ॥
द्रढचित्त ध्यावे सो मनसा फलपावे सुन
शंकर सहाइ जब काल हू कहा करे ॥

पीवे भंग भारी संग अरधंग प्यारी उमा
वृषभ सवारी भस्मधारी बलिहारी है ।
"घनश्यामप्यारे" काशी कलप लतासी जामैं
तामें कैलासी खासी जोत जग जारी है ॥
लिपटे भुजंग अंग रहत अथाह नंग
लगे नित रंग देव धन्न सुखकारी है ।
ध्यावे शुद्ध मन सो मनसा फलपावे सदा
जै जै महादेव सुनो अरज हमारी है ॥

श्रीनाथद्वार तरङ्ग

दोहा—नाथद्वार तरंग यह, दुसर जानहुं मित्र ।
जँह श्रीनाथ महात्म्य वर बर्णन नगर विचित्र

धाम महात्म्य (कवित्त)

नाथ नगर गाम " घनश्याम ' गो लोक धाम
तीरथ तमाम ताकिहि कीरति बखानू मैं ।
ये हैं जगदीश ये विशाल वेनी वद्रीनाथ
वहत बनास ताकूं गङ्ग जमुन जानू मैं ॥
काशी विश्वनाथ रामनाथ अरु रामेश्वर
पुष्कर प्रयाग येही सरजू चित्त आनूं मैं ।
न्यारे न्यारे तीरथ अनेक रूप अवतार
सबही को सार एक श्रीनाथजी को मानूं मैं

लीनों मैं जा दिनतें शरण श्रीनाथजू को
ता दिनते तेरी सौंह अति सुख पायो मैं ।
"घनश्यामप्यारे" अष्टसिद्ध नवनिध भई
सिद्ध भये कारज प्रसिद्ध जस छायो मैं ॥
ज्ञानको प्रकाश दुर बुद्धिको तिमिर नास
सुन्दर सुबास नाथनग्र चित्त चायो मैं ।
कृष्ण गुणगायो नदी जमुना बनास न्हायो
मेरे भावे तीरथ तमाम करि आयो मैं ॥

ध्वजा फहरात चक्र चमकत कोट भान
दूरतें दिखात नाथनग्र वैकुण्ठ धाम ।
"घनश्यामप्यारे" घूमें गजराज द्वारहूपे
नौबत की घोर होत घर घर सुनै वाम ॥
दौरि दौरि आवें करें दर्शन श्रीनाथजी के
भोर भोर भागें सब छोरि छोरि आवें काम ।
परम प्रसाद पावें गावें हें गोविन्द गुण
मोज में कमावे खावें खुशी रहें आठो जाम ॥

मंदिर बर्णन—

दोहा—अब वरणूँ मन्दिर छटा सात ध्वजा फहरात ।
तेज सुदर्शन चक्र के कोटिक भानु लजात ॥

कबित्त ।

केधों कोऊ देवने कियो है रचि पचि यह
केधों विश्वकर्मा निज हाथनते छायो है ।
"घनश्यामप्यारे" कैधों आपते प्रगट भयो
कैधों वैकुण्ठतेंसु उठाय कोउ लायो है ॥
कैधों ईश इच्छा अनुकूलतें रच्यो है यह
कैधों प्रभुमाया को समूह दरशायो है ।
कैधों शिव विरञ्चि हो कि सुर हो कि नर हो
जाने ये श्रीनाथजी को मन्दिर बनायो है ॥

कमलके चौक मध्य कमला निवास करैं
द्वारगजराज वाजि शोभा सरसाई है।
"घनश्यामप्यारे" है परसादी भण्डार इतै
बूंदी ओ मनोर पेडा बरफी मलाई है ॥
द्वार जो विलोके " सिंहपोरी " पै गरजै सिंह
" धोरी पाटिया " पै खेलैं कुँवर कन्हाई है
" गोवर्द्धन चौक " इत मिंद्र[1] नवनीत जूंको
इतको नगार खानो बाजे सहनाई है॥

पछैनो प्रभुको निज भौन व्रजवासिनको
बैठक इतैको इत महल है जनाने के।
"घनश्यामप्यारे" ये अगाडी देख मोती म्हैलैं[2]
सांचे संगमरमर के काम मकराने के॥
फूली फुलवारी कहूं बुरज तिवारी भारी
कहूं गौख बारी बने पूरन जो प्रमाने के।
इतको निवास सिरि कृष्ण को दरस होत
इतको है महल लाडली के बरसाने के॥

---

१ मन्दिर। २ महल

ऋषि मुनि ठाडे सब बृन्दारक बृन्द बृन्द
नारद बजावें बीन गन्धरव गावें है।
'घनश्यामप्यारे' सूर्य पौंल पे मची है भीड
शिव सनकादिक आदि हिय हुलसावें है॥
धन्य नाथनग्र धन्य धन्य है वैकुण्ठ धाम
देव मिलि दौरि दौरि दुन्दुभि बजावे है।
सुर सुरराज धावें बैठि के विमानन में
सभी देवबाला पुष्प धारा बरसावें है॥

डोलि भौणि कोठा तहां मणिको प्रकाश होत
सज्जा मिन्द्रकी तो अलौकिक बात जानी जात।
"घनश्यामप्यारे" कहे मेरी कहां तुच्छ बुद्धि
शेष के सहस्र मुख वरणि न कवों जात॥
"डोलै तिवारी"[1] "रतनचौक"[3] जड्यो है रतनसों
पूरण प्रताप होय ताकी बात जानी जाय।
डोलि "जग मोहन"[2] को मोहि रह्यो सारो जग
होत कीरतन सो प्रमाण दृढ मानीजात॥

---

१ दर्शन के वखत जहां कीर्तन होवे है। २ जहां से दर्शन करते हैं।
३ बहारका चौक।

सवैया ।

गोधन चौक विलोकि मनोहर
घोस दिवारि सबै निशि आगे।
दीपति दीपन की अवली
"घनश्यामजु" चित्त वहीं अनुरागे ॥
गोधन पूजन होत यहां
अति आनन्द ग्वार गुपाल के आगे ।
मोद भरे ब्रजराज विराजत
सूरजपोल सुहावनि लागे ॥

केधों कलियुग प्रभाव तेन लखि सक्यो
केधों काम कीनो वामे माणिक चुणीन को।
"घनश्यामप्यारे" का विरञ्चि रचि दीनों यह
केधों ये पुहुप भूमि कीमत घनीन को ॥
झगमग होत है जवाहिर की दूनी द्युति
केधों यह जन्म भयो चारु चांदनीन को ।
केधों चन्द्र मण्डल औ केधों रवि मण्डल है
केधों देव दिव्य रूप मन्दिर मणीन को ॥

प्रात उठ न्हावे शङ्खनाद होन पावे तबै
छोड दुःख द्वन्द सब फन्दते छट्यो करे ।
"घनश्यामप्यारे" सब पापको प्रलय होत
प्रकट प्रसिद्ध सदा पातक कट्यो करे ॥
रैनादिन आठोजाम येही काम "घनश्याम"
मुखतें सिरिनाथ श्रीनाथजी रट्यो करे ।
आसन बिछाय आप सन्मुख श्रीनाथजूके
होत नवनिद्ध सिद्ध कारज पट्यो करे ॥

कहूं "दूधघर" शुभ कहूं "शाकघर" देख
लीजो फूलघर खासाभण्डार के रकाने है ।
"घनश्यामप्यारे" ह्यांहा मेदाघर जानिये जू
केशर कस्तूरी पिसें चाकिन सुथाने है ॥
पानघर देख फेर देखि लीजो पंखाघर
इतको जलघर नीर भरें घट छाने है ।
[1]चर्खीघर देखि ओ चन्दन घर देखि लीजो
देखो नन्दरायजू के अनेक कारखाने है ॥

---

१ सांठे का रस निकालने का यन्त्र ।

ध्वज वर्णन ।

लाल आसमानी कसी केशरी जरी की नीकी

निंबुआ हरीकी पंचरंगी छटा छहरात ।

"घनश्याम" प्यारे तेज सुदर्शन चक्रजू को

प्रकट प्रताप अन्य मारगी सो थहरात ॥

अधिक अनंद व्रजचन्द नन्दजू के धाम

नोबत सुनत मानो घोरघन घहरात ।

चलत समीर लहरात यमुनाकी लेर

देख सिरीनाथजू की सातो ध्वजा फहरात ॥

सावन सुहावे घनघटा चढि आवे नभ

छटा छवि छावे देख शोभा आसमान की ।

"घनश्याम" प्यारे उठे सजल जलद श्याम

श्वेत हरी कारी पीरी अवली वितानकी ॥

कँवल चोक रत्नचौक है तिवारी भारी

मिन्द्र चहुं ओर भीर छाई है विवान की ।

सुदर्शन चक्रको प्रताप श्रीनाथजु को

इते फहरात देखी सातों ही ध्वजान की ॥

धाम जो निहारे तीन ऐसो "घनश्याम" कहीं
सुदर्सनचक्र जाके घूमे द्वार हाथी है।
सोग राग हूको भोगी भूतल पे दूसरोन
दासी कमलासी सीस चरन नमाती है
आरति टकोरा सुन दरशन को दौडे देव
दिव्य देव बाला वधू पुष्प बरसाती है
नित्य याद आती बडी दूरसे दिखात देख
सातों ही श्रीनाथजी की ध्वजा फहराती है

श्रीकृष्ण भण्डार महिमा—

दोहा—अष्ट सिद्धि नव निद्धि है कमला प्रवल प्रचार।
देख कृष्ण भण्डार की महिमा अपरम्पार ॥
अचल भरे हैं धन अजव असंख्य तहां
हीरा, लाल, मुकता औ प्रवाल जात जात के
जरी कीनखाप ज़रकस के अनेक थान
साल औ दुशाला खिचे आवत विलाततें ॥
"घनश्याम" प्यारे हैं खजाने खूब क्रोडन के
हेम रौप्यहूते भरे भवन अगाथ के।
अष्ट सिद्ध नवो निद्ध हाजिर हमेशा रहैं
कृष्णभण्डार देखु श्रीगोवर्द्धननाथ के ॥

श्रीगोवर्द्धनलालजी महाराज का भवन,

कहा कोउ भूप शुद्ध भवन बनाय जाने
मदन हुलसि जान्यो शोभा को सदन है।
"घनश्याम" प्यारे विश्वकर्मा रचिदीनो कहा
बरण विचित्र कहे उपमा कवन है ॥
ऊंचे आमखास तहां विविध विलास होत
चली मलया गिरिते आवत पवन है।
और हू नृपति के न जानी जात ऐसी छबि
गोवर्द्धनलालजू के इन्द्र से भवन है ॥

मंदिर में श्रीवल्लभाचार्यजी की गादी।

इते चल नीचे फेरि दरश कराऊं तोहि
कण्ठीबन्द वैष्णव जो मनको मुरजादी है।
"घनश्याम" प्यारे डण्डोत कर भेट धर
लेवे ऊपरणा जामदानी को प्रसादी है ॥
बीडा कूं लेके औ चरणामृत तूं लेगो कहा
सेवा प्रभूजी की कछु जमाभी करादी है।
तूं का बात जाने तेरी दादी यहां आई हती
ये ही श्रीआचार्य महाप्रभूजी की गादी है ॥

मंदिर के बाहर का वर्णन--

पछैनो नगार खानो लाल दरवाजो यहां
खरच भण्डार गुड़ गेहूं घृत गहरे हैं।
"घनश्याम" इन्तजाम विठ्ठल भण्डारी जू को
पण्डित है लालु और चार चार पहरे है॥
लिखिया लिखें हैं अरु तुलावटि तोलेधान
काम करें केते यहां गूजर ओ महरे है।
खांडके खजाने मूंग उरद अनेक चीज
सातों तूर सिद्ध नवनिद्ध ह्याही ठहरे है॥

दोहा--अब दुकान परसाद की सजी देख दुहु ओर।
चितचाहे सो लीजिये बूंदी सेव मनोर॥

बूंदीके सेवके मनोहरके मगदहूके
मोनथार केसरी धरी है नेग लायके।
"घनश्यामप्यारे" पेड़ा बरफी बदाम-पाक
पेठापाक मावादार गूंजा देख खायके॥
लुचई नरम पूडीराजभोग सैनहूकी
और दूधपुड़ी तवापुडी छविछायदे।
वरकदार केसरीप्रसाद भांति भांतिहूके
बैठेहैं परसाद्या ये दुकान को सजाय के॥

मेवाके कसारकेरु माने के अनेक विध
　　गूंजाघेर मठडी और ठोड एक हाटपै ।
"घनश्यामप्यारे" मद दीपक मुखविलास
　　सिखरन खोआ खीर मलाई धरी पाटपै ॥
धरे फलफूल केरा सन्तरा अनार सेव
　　नारंगी अंगूर दाख सजायकें कपाटपै ।
दूध दही माखन अथाने कैर कैरी के
　　अमित महाप्रसाद सजाय बैठे हाटपै ॥

छप्पनभोग वर्णन-

नगरबर्णन—

दोहा—क्या कहूँ अब शहरकी भांति भांति ही चाल ।
　　धनी निर्धनी सबनके यथायोग्य सब हाल ॥

कहूँ कोई पत्र लिखे सिद्धश्रीउदयपुर
　　महाशुभस्थान आप ओपमा विचारंजो ।
"घनश्यामप्यारे" सदा लायक हो मालिकहो
　　सज्जन सनेही बात निश्चै चित्त धारजो ॥
अब अपरञ्च समाचार करजोड लिखूं
　　नाथनग्र उच्छौ है भूल न विसारजो ।
व्याणजीने व्याईजीने मोतीचन्दजीने आप
　　छप्पनभोग ऊपर लेनें वेगाही पधारजो ॥

ऐसे जाति जाति के अनेक ठौर पत्रलिखे
सोनी कहा दरजी ठठेरे कहे आवजो ।
" घनश्यामप्यारे " गुजराती गुजरात लिखे
लिखैं मारवाड़ी अठे दर्सण कर जावजो ॥
मालव मुलकके लिखे हैं मालवे में पत्र
चिट्ठी बांचताँई अठे शीघ्र उठ धावजो ।
होय धन्यभाग्य दर्शन कर श्रीनाथजीका
छप्पनभोग पछे प्रसाद अठे पावजो ॥

भाग्यवानों के मिजमान—

कई ठोर आये है मिजमान भाग्यवानन के
त्यार करवाए है मकाननको खोलनै ।
" घनश्यामप्यारे " नीर शीतल भराये घट
मीठीभांग मिसरी औ गुलाबजल घोलनै[1] ॥
सरस रसोई सिद्ध प्रभुको लगाइ भोग
जेमे सब लोग बीड़ा लावत तमोलनै ।
बैठेहैं पलङ्गपर आनन्दसो आठों जाम
आवत समीर इत गावत हैं ढोलनै ॥

---

१ मिलाकर

गरीबोंकी स्थिति

आवे मिजमान एतो घरमें न पावे धान
कौन सनमान करै बेर १ टेर जांय ।
"घनश्यामप्यारे" जो कदापि नहिं होत भेट
प्रात न मिलतो फेर रात समे हेर जांय ॥
होय दशा बीसतो घनी ही रीस आवे मन
मिलवो न होयतो पन्हैया घर गेर जांय ।
वेभी निसंक नागे पूरे निरलज्ज रहै
मिलै जो बजार तो छिपाय मुंह फेर जांय ॥

केई केई गामके अनेक मिजमान आवें
होय दशबीस सङ्ग टालो तब खाय जांय ।
"घनश्यामप्यारे" जो कदापि चार रोटी मिलै
गुदड़े न पांवें एतो मनमें सकाय जांय ॥
हेला पाड पूछे नटजाय घर होंय तोभी
बेर बेर आवे जो कभी तो घर पाय जांय ।
छप्पनभोग देखिवे आये है तिहारे यहां
खोल खोल पौरी बड़ी जोरी करि आय जांय ।

---

१ बिस्तर

केते लोगबागन के भौनकी सुनाऊ सैल

बचनसों कहत बल्या; थैंतो चुप रोईनी ।

"घनश्यामप्यारे" अनचींत्या चल्या आवत है

खोलत किमाड कहै गाम गया कोईनी ॥

बोलस है गाम गया आयजासी गांवसूं भी

वे जो नहीं आसी तो भी थैंतो अठे होइनी ।

म्हेंतो मिजमान छांजी देखता प्रसन्न होसी

बिस्तर जमाय दोर कींको डर मोइ नी ॥

बाजार वर्णन—

दोहा- सज्जत आज बजार छबि लज्जत देख अपार ।
गरजत साहन के गरे तजत नहीं ब्योपार ॥

इतैं द्वारिकेशजूको मन्दिर विशाल छबि

इतै शोभमान ये सरस्वती अखाडो है ।

"घनश्यामप्यारे हाट शोभति सुनारनकी

आगे पारखनकी दुकान को सराडो है ॥

भूषन टका कंठी दुकान बहु भांति भांति

आगे चल देख लीजो सेठनको पाडो है ।

और हट बनिया पसारी चून दार वारे

रात दिन ग्राहकको लगे भीडभाडो है ॥

मोदी—

छप्पय

गुड शक्कर घृत चून दार बेसन मनमान्यो
गेंहू मक्का ज्वार लोट देदे अनछान्यो ।
मिलमा जोको चून चना चमला अरु चोखा
तेल तमाखू नोन मिरच तोले दे झोखा ॥
जीरो धनोरु काचरी जो चाहे सो कीजिये
मैंथी हरदी आदि सब चित होवे सो लीजिये ॥

पंसारी—

दोहा—हाट पसारीकी मँडी यहि विधि सरस सुघाट ।
बाट रुप्या घरमें धरै सकल चीजके ठाट ॥

छप्पय ।

देखो सजी दुकान धरे नारेल सुपारी
कारीमिरच तयार लोंग डोड़ा अति भारी
केसर ओर बरास दालचीनी कस्तूरी
खारक पिण्डखजूर तोलमें दे सब पूरी
पिस्ता दाख बदाम सब चाह लीजिये चीनकी
"घनश्याम" स्वच्छ मिसरी सुभग लेलो भंग उज्जैनकी ॥

रसकपूर घनसार वंशलोचन मधु जानो
सालम मिसरी सरस स्याह जीरो पहिचानो
और मूसलाश्वेत आम हरदी सुन लीजै
अजमो इसब गोल इन्द्र जव सौंफ कहीजै
सोलामो अरू हींगलु अरू हरताल अमन्द है
"घनश्याम" गोंद पीपल मिले सभी मूल अरू कंदहै ।।

,,

माजुफल अरु जवाखार लो तालमखानो
तवाखीर अरू हींग कायफल को पहिचानो
नागरमोथो और वरयाली है सब चोखी
और गोखरू देवदारू लोबान अनोखी
नोसादर सेंधानमक हरड बहेडा देखिये
लोचूर फिटकड़ी सोंठ सब "घनश्याम" निगाहकर परखिये

बच्छकुलाजिन और देख चित्रक सिन्दुर सब
और दानेपुख्वी लेओ चित्तचाय होवे जब
सोमल सोना मुखी बो फली सोगी पारो
लीलोथूथो बीजबोर अरू पापड खारो
नौसादर सेंद्रालवन आसोंद असालू सारहे
साजी गन्धूप कहांलो कहुं "घनश्याम" बहु विस्तारहै ।

रेवतचीनी और देख बेलागिर जानो
और मिश्रीकालपी ताय नीके पहिचानो
बीकामाली और मरोडाफली मंजीठी
सोनागेरू और सुपारी चिक्कन चीठी
छाबछबीलो लीजिये समुद्रफेन अरू कांगनी
"घनश्याम" और हीराकसी काम पडे जब मांगनी

बजाज

दोहा-बहुविध साज दुकान को बैठे आज बजाज ।
अतिसै ग्राहक देखिके मनमें करें मिजाज ॥

धरी गांठ सब खोल छींट नीकी अति भारी
लाटन स्याह सफेद हरी सब धरी अगारी
ओर सो...नी पीत रंग खसखसी गुलाबी
नारंगी केसरी कडाचीनी बहु आबी
आलफाल अरू सन्दली ककरेजा बहुरंगकी
"घनश्याम" साह सोदा करे कहा कहूँ सुउमंगकी ॥

मिसरू और रेसमी थान जरकसी अनोखे
ओर दुशाला धरे साजि बढिया सौ २ के
सेलासिरे उमन्द भांति मन्दील मजा की
पीताम्बर जरकसी कोर पेटी भर आंखी
धोतजोडा बहु बडे जरीकोर के लीजिये
"घनश्याम" पाग पेचाधरे द्रव्यखर्च कछु कीजिये ॥

फुलालेन अरु चिकन जामदानी चोखाने
घरे बनाती साज करहु सौदा मनमाने
पलाटीन लहरिया भांति बहुविधकी साडी
बढिया मलमल लेउ और लट्ठा की साडी
घुनटी जालविसाल घर कीनखाँप मखमल सिरै
"घनश्याम" चहे सो लीजिये काहे कों इतउत फिरै॥

ढाका की मलमलें साफ देखो कलकत्ती
पांच रूप्या गज और दाम बाढिया के बत्थी
कानपुरी सरबती फर्रुखाबादी जानो
अरु आछी अलवरी मालको मोल बखानो
घासपुस अरु मिसजन मुकटा अमित अपारहे
"घनश्याम" मोल कछु कीजिये जोलो सोही लारहे॥

पस्मीना अरुगजी देख कल्लुर अतिभारी
कचियाबूटी रंग रंग छापकी सारी
गोटा और गोखरु सुनहरी श्वेत किनारी
लच्छा झालर फूल बेल रंगत बहु न्यारी
और डोरया देखिये फीता केही चालके
"घनश्याम रेजगारी लगे खूब टका सब मालके॥

रंगरेज

दोहा-अब दुकान रंगरेजकी रंगे धरे सब रंग ।
नाम लऊँ सब रंग के सुनो एकहि संग ॥

गुलेनार अमरसी केसरी अरू पिस्ताई
सूआपङ्खी श्वेत मोतिया की छबिछाई
ककरेजी कोयली स्याह सर्बती बदामी
सप्तालू सन्दली और अंगूरी आमी
गहर गुलाबी गंदरफी सुरख सिंदूरी छादई
"घनश्याम" आज रंगरेजने डोरी बांधि सुखादई॥

नगर—नारी ।

चालमें चतुर चतुराई मांहि चोगुनी है
प्रीतमे प्रवीन रस रसमें रसीली है ।
"घनश्यामप्यारे" गुनगुनों में गुनों की खान
रूपकी निधान उपमान में सजीली है ॥
नाजुक है नरम नमाईमें नवीन बाल
जोबन में जुल्म रसतानमें रंगीली है ।
गोरी है गुलाबसी गुराईमें गरक कैधों
कोमल किशोर अतिलाज में लजीली है ॥

छप्पन-भोग उत्सव प्रारम्भः ।

अब व्रजपति चित कीनो विचार, आनन्द एक करनो अपार
करैं लाख बाग ऐसो आनन्द, पहिले विचार कीजे प्रबन्ध
घृत खांड दूध दधि के सु ठाठ, मेवा अनेक भरि अमित माट
फ़रकसी थान मख मल अनेक, मखमली चीज मखतूल देख ॥
कन्तान तम्बू डेरा कनात, परदा अमन्द झालर बनात
कहुँ हेम रौप्य भूषण बनाय, पुनि सकल सिद्ध चीजें कराय
बोले श्रीगोवर्द्धनलाल बात, हुई है आनन्द नित द्योस रात
पहरे प्रवीन चहुं ओर देख, बहु देश भीड़ आवे अनेक ॥
हुसियार जहां तहां ठाम ठाम, मन्दिर सुबाग मारग तमाम
बख्शी बुलाय दीनो हुकुम्म, नर नारि पहिरि आवे रुकम्म
कुँतवाल राखियो सर्व ठीक, प्रभु देत आप सब सत्य सीख
चहुं ओर बाग चौकी चिताय, फिर बागवान धनजी बुलाय ॥
फल फूल मूल सब त्यार सिद्ध, सब ठाठ बाठ धारि नवो निद्ध
अधिकारी सन्मुख बुलाय, दण्डोत मुनीमन करी आय
कहुं भयो सकल शुभ इन्तजाम, कर जोडि कही विधिसों तमाम
मुखिया भीतारियन को बुलाय, हुंसियार चीज कहुं डुल न जाय
गज बाजि साजि तोपे सिपाय, सब त्यार रथ्थ गाड़ी सजाय
पण्डित प्रवीन ज्योतिष बताय, शुभ दिन निश्चै करि कहिहै आय

१—आचार्यचरण श्री १०८ श्रीगोवर्द्धनलालजी महाराज

गादी तकिया सुखपाल साज, झारी बंटा धरि सकल आज
महाराज गोवर्द्धनलाल देख, करि जोरि करी बिनती अनेक ॥
अष्टाक्षर को जब धर्‌यो है ध्यान, श्रीमहाप्रभुनकी कान मान
है कियो मनोरथ लालभाग, आनन्द लेओ प्रभु भोगराग ॥

दोहा—या विधि सौं ब्रजराज को, धरन लगे मन ध्यान ।
करन लगे जब बीनती, आगे लिखे प्रमान ॥

अथ ध्यानम् ।

श्रीनवनीत विशाल रूप रचितं राजै करे मोदकम्
हीरालाल प्रवाल भूषन धरं श्वेतं जरी सूथनम् ॥
मुक्ता माल सुहीर शीस मुकुटं मकराकृतं कुण्डलम्
श्रीगोवर्द्धनलाल चित्त चरणं जै जै मुकुन्दप्रभुम् ॥

वृन्दावने ब्रज विहार सुखं अनूपम्
कन्दर्प कोटि ललितं वपु कृष्णं रूपम्
वंशी वटं नटवरं ब्रजभूप भूपम्
पूर्ण मयंक षट्मास नहाह धूपम्

ब्रजपति यदुनाथं गोपिका प्राणनाथं
नटवर घनश्यामं सुन्दरं विश्वरूपं
रसनिधि जगदीशं ईशईशं प्रसिद्धं
त्रिभुवन पति नाथं भक्त नाथं नमामि ॥

दोहा-यों कहिके कर जोरिके पधराई सुखपाल।
राजमान प्रभुको किये श्रीगोवर्द्धनलाल ॥
छत्र चँवर आडम्बरनि सकल सवारी साज।
लालबाग निधि को लिये चले मनोरथ काज ॥
देव पुष्प वृष्टी करें जय जय शब्द उचार।
सुरपुर नरपुर नागपुर आनन्द भयो अपार ॥

सोरठा—मुदित गोवर्द्धनलाल सङ्ग सकल वल्लभ प्रभु।
मधुर मन्द सुखपाल लालबाग मगमें चल्यो ॥

भुजङ्गी—

प्रभू लाडिले लाल सुखपाल राजं
सुतालं मृदंगं विशालं समाजम्
अलापं गुनीगान गन्धर्व रीतम्
महाराज गोवर्द्धनं पर्म प्रीतम् ॥

छडी छत्र छांगी छवी है अनूपम
नमो वल्लभाधीश आनन्द रूपम्
चिरंजीव दामोदरंलाल बालम्
श्रीगोपेश्वरं गिर्धरं ओगुपालम्

श्रीरणछोडलालं दयालं कृपालं
श्रीरघुनाथलाल है कोटा विशालम्

सिरी देवकीनन्दनं लाल संगं
छबी वल्लभाधीश कोटी अनंगम् ॥

तथा बम्बई के सु गोवर्द्धनेशं
सभी भट्ट ज्ञाती धरे हैं सुप्रेपम्
ध्वजा डम्बरं चौर चहुं ओर ढ़ोरे
सुघोटा कनक रौप्य के सङ्ग दौरे ॥

कई नक्रमुख सिंहमुखके निराले
चले वल्लमें संग भाले सुआले
छटा छत्र छांगी पताका अनेक
बजे खुनखुनी चंगं बंसी मजेके ॥

दोहा—चले बाजि गजराजयुत तामझाम सुखपाल ।
जग मग ज्योति झलेफको हीरा लाल प्रवाल ॥

चन्द्रायण छन्द ।

हीरालाल प्रवाल जरकसी काम है
ब्रजवासिन के वृन्द भीड सब गाम है
खंजर तेग कटार सुभट रणधीर है
चलत मन्द गति चाल लाल बलबीर है ॥

दोहा—जै जै शब्द अनेक विध बोलत चलत नकीम ।
खमा खमा ब्रजराजको सुन्दर सुखकी सीम ॥

चन्द्रायण छन्द ।

सुन्दर सुखकी सीम यही ब्रज भूम है
देखो अधिक अनन्द सवारी धूम है
स्याने ओ महयान चले सब संग है
देखि देखि महिपाल होंहि सब दंग है ॥

दोहा—जकरे चलत जंजीरसों पकरे चलत तुरंग ।
जटित जीन गज गाम के तान मान के संग ॥

तान मान के संग अपसरा नाचती
पातर भई शरमिन्द कि घूंघट खांचती
भूषण अजब अनेक बजें रमझोल है
अवली अश्व अनेक छबी अनमोल है ॥

दोहा—देव बजावत दुदुभी गन्धव गावत राग ।
सुर बरसावत कुसुमझर विरुद बखानत भाग ॥

चन्द्रायण छन्द ।

विरुद बखानत भाग कि बैठि विमान में
सुरपुर होत अनन्द मकान मकान में
मोद भरे सुरराज कि आवत दौरिके
नाथ नग्र शुभ धाम अमरपुर छोरिके ॥

दोहा—देख वधू हरखी फिरै मंगल गावत गीत ।
आज पधारत बाग में धन्य धन्य नवनीत ॥

चन्द्रायण ।

धन्य धन्य नवनीत प्रीतसों आवती
नीलकञ्ज के पुञ्ज चली बरसावती
दरस करन के काज आज आनन्द है
ये त्रिभुवन पति नाथ यही व्रजचन्द है ॥

दोहा—झुकि झुकि झांकत गोखसो नाथनग्रकी नार ।
चन्दावदनी बहुगुनी राजत रूप अपार ॥

राजत रूप अपार सजी सिनगार है
दरश करनको दोरि सु आई बार है
केतिक ऊभी द्वार कि घूंघट मार है
केतिक के मन मोदाकि हर्ष अपार है ॥

दोहा—कई नखराली नगर में हंसत चलावत नैन ।
दृग वावत आवत निकट समझावत कर सैन ॥

समझावत कर सेन चतुर इक चोजसों
मातां मद भरपूर की मस्त मनोज सों
देख रही इत उत सुचित कहूं ओर है
पूरन करें प्रहार दृगन की कोर है ॥

---

१ फेंकती

दोहा—कइ कइ कामन गारियां नाजुक निपट नराट ।
बरसावत नव नागरी प्रगट परी के घाट ॥

प्रगट परी के घाट किये जन गारियां
करत परस्पर बात हंसे दे तारियां
नखसिख साज सिंगार दृगन की चोटदे
मृगनैनी मुसक्याय कि घूंघट ओट दे ॥

दोहा—चन्द्रमुखी छूटि अलक करनफूल दोउ कान ।
सीसफूल बेंदी दिये बेसर मुख मुसक्यान ॥

बेसर मुख मुसक्यान की मोहनलाल है
तिमनी हार हमेल कि रूप विशाल है
लहंगो अजब मरोर कांचली जाल की
साडी सोह सुघाट की चाल मराल की ॥

दोहा—बोरयो बींटी कातर्या बाजूबंद की लूम ।
कांकण चूडी नागरी मठठ मदन की धूम ॥

मठठ मदन की धूम धूमि गज गामिनी
बोलत अमृत बोल कि सरल सुहावनी
मृगनेनी मुसक्याय जिते को चित गई
मानु अहेरी मारसु बरछी वह गई ॥

दोहा—झूमर अङ्ग उमङ्ग चित चुडले टीप निहार।
हेम जटित खग दांवणा छक जोबन की ब्हार ॥

छक जोबन की ब्हार सहेल्यां सङ्ग में
देखन आई दोरि कि चित्त उमङ्ग में
कडा छडा सरसार कि पायल बाजनी
लङ्गर तोडा साथ रूप छवि छाजनी ॥

दोहा—पहरे नाजुक नेवरी बिछिया की झनकार।
चितरञ्जन अञ्जन दिये है सुन्दर सुकुमार ॥

है सुन्दर सुकुमार बराबर जोडकी।
नूतन सजे सिंगार कीं होंडा होडकी
याहि विध आतुर होय कि नैन निहारती,
दोंखि छवी व्रजराज न भूल विसारतीं ॥

दोहा–कइ कइ नार सुलक्षणी धर्म रीतिसों ध्यान।
ऊभी अपने द्वारपे राजत रीति प्रमान ॥

राजत रीति प्रमान लाजकी जोंज है।
वे आवत सुखपाल दरसकें काज है,
दोउ कर जोरत दौरि नवावत शीशकों।
विनती करत अनेक रीत जगदीशको ॥

---

१ जहाज

दोहा--हरिजन देखत हिय बढै दुरजन देखि रिसाय।
पतिव्रत बासें पापकी श्रवणन नांहि सुहाय॥

श्रवनन नांहि सुहाय कथा कोउ और की।
कृष्णदरशके काज उठी बडी भोरकी,
गावें मङ्गलगीत भजनका भाव है।
दरस देंउ नवनीत यही चित चाव है॥

दोहा—कमलमुखी लै लै कलस रङ्ग रँगीलो भांति।
उरसों है सुन्दर सुभग लाल मणिनकी पांति॥

लालमानिनकी पांति रङ्ग पचरङ्ग है,
कसकि धरैं पग भूमि कि नाजुक अँग है।
लाजवन्त मुख नांहि बतावत और को,
निरखन आवत नार कि नन्दकिशोरको॥

दोहा—जब आई सुखपाल तब गावन लागी गीत।
हेम रौप्य हरखत धरत नन्दघरनकी रीत॥

नन्दघरनकी रीति बधावें गावती,
मुदित भइ मनफूलि अँग हुलसावती।
यहि विध आनन्द देखि अधिक रंग रागको,
धन्य धन्य ब्रजराज बखाने भाग्य को॥

दोहा-करत कीरतन मुदित मन प्रफुलित अधिक उमंग ।
भैरों और विभास मिलि सरस ताल सुर संग ॥

वृन्दारक वृन्दकी नारी मिलि आई है,
पूरन पुरुषोत्तम के दरशन को धाई है ।
वे भी यह सुन सुनकें आनन्द मे छाई है,
पुष्पो की वृष्टि मिलि पूरन बरसाई है ॥

आसावरी टोडी अरु सारंग सुर गाते थें,
मिलिके विलावल के सुर भी उपजाते थे ।
सूही अरु सांवत की सुरतें चित लाते थे,
ईमन अरु गोंडा को सुनके सुख पाते थे ॥

खट अरु केदारो नटनी के सुर गायो है,
मालव भोपाली को कैसो छत छायो है ।
सोरठ मल्लारों के कैसे पद नीके है,
काफी अरु दीपक के सातोंसुर तीखे है ।

कान्हर अरु पूरवी के कैसे सुर लेते थे,
बिच बिच अडानों के नीके सुर देते थे ।
श्याम कल्याणरु भंभोटी अरु गारो है,
बर वा अरु कजरी पे पीलू अति प्यारो है ।

कालिङ्गडा परज भैरावियां अति भारी है,
घाटो अरु देखुं जैजैवन्ती अति प्यारी है ।
लूर श्रीमेघ हिण्डोल हम्मीर है,
माढ मालकोश रायसरा धीर है ।

धनासिरी जैतासिरी शङ्करधुनि औरै हैं,
गावैं पद नीके सुर कैसे चित्त चौरै है ॥
बाजत गत ताधिनक्ट ताताथई थुङ्गा है,
धाकिट तक धुमकिट तक बाजत मिरदङ्गा है ।

द्रिगिन धुकटित धिमांग कुकुतट थट थैया है,
धिनतक धिनतक पिलांग नादि धन वैया है ॥
बाजत मांजरि धुन झन झन झपा झां झां है,
किनतक किनतक किनाकित किन्नरि किन काजा है ।

सारंगी समसुर साधन तान पूरा है,
बाजे बहु भांतिनके सुचहुं दिशि जहूरा है ॥
स्याने महाजानो के कैसे छत छाये थे,
बल्लम अरु घोटा दिसि दिसि दरसाये थे ।

छांगी अरु छत्रों की कैसी छबि छाई थी,
चहुं दिसि सुखपालो में चँवरें ढुरवाई थी ॥
भीड़ों की चारों दिशि कैसी गच्चपच्ची थी,
शोभा गजराजों की उपमा सें अच्छी थी ।
हौदों पर हीरों के कैसे छत छाये थे,
झूलों पर मुक्ता के धौरे दरसाये थे ॥
कतेइ कोतल में घोडे छबि लेते थे,
जीनों पै जरकस गजगावौ छबि देते थे ।
सजके यह बालक सब वल्लभकुल आते थे,
हीरा बहु रत्नों के भूषण दमकाते थे ॥

चारों दिशि वल्लभके बालक ज्यों तारे है,
मध्य श्रीगोवर्द्धन प्रभु इन्दु उजियारे है ।

आगे अधिकारी कामेती सब नीके है,
व्रजवासी वृन्दों के जबर जूथ दीखे है ॥
बग्गी रथ साजे है देखो छवि भारी के,
कामेती संगमे जनानी असवारी के ।

घोडे रसालों के जवानों पर फरीं है,
कोई पर पचरङ्गी कोई पर हरीं है ॥
खरसल रथगाडी सगराश्रों क ठट्ठा है,
वृषभों की जोडी नागोरी बह पट्ठा है ।

चतुरङ्गी सेनोदल नीकी विध साजे है,
बुगल और बंसी धुन बहु बाजे है ॥
डङ्का रमढोलन संग झांझे झनकारी है,
देखो बेण्डबाजे की रंगतसु न्यारी है ।

सन्त्री सबल चलते है संग कोतबाली के,
किरचें अरु दण्डे ले उरदी अति काली के ॥
नोबत नगारे घनगर्जे धुन माती है,
रंगत निसानों की फरी फहराती है ।

केते असवारी को देखन को दौडे है,
के ते वह मारग में ठाडे कर जोडे है ॥
देखो परदेशी कइ मुलकों के आये है ।
वे भी सब असवारी देखन को धाये है ॥

कवित्त—

बोलत नकीम धूम धौंसा की धुकार होत
छिन छिन चढत छिन उतरै अटारी तें ।
" घनश्यामप्यारे " अकुलात चित्रसारी बीच
कहां है सवारी बतरात नरनारी तें ॥
भोजन न खात कछु काम न लगात हाथ
राततें उम्हात लय--लागी बनवारी तें ।
आवत अगारी तें निशान फहरात देखि
खोलि कें किवार बार निकसत बारी तें ॥

कबित्त—

आई उदमादतें अकेली अलबेली बाल
देखत सवारी धूम विकसी विकसी परे ।
" घनश्यामप्यारे " वो पताका फहरात देखि
हौद तें अगारी आप रिकसी रिकसी परै ॥
देखि छत्रधारी को अगारी बढि आगे चली
नजर मिलाय जोर इकसी इकसी परै ।
सारी कों सवांरि बार काटितें अगारी प्यारी
झुकि २ बारीतें ये निकसी निकसी परै ॥

साजि कें सिंगार नारी तनकें सवारी चारु
आतुर व्है खोलि दीनी खिरकी अटारी की ।
" घनश्यामप्यारे " ज्यों नगारेपर लागी चोबें
धाम धाम ठौर ठौर भीड नर नारी की ॥
आई सुखपाल नन्दलाल कूं विलोकिवे को
बैठ गईं बाल वो सम्हारी कोर सारी की ।
सरकि न पाई छबि ऐसी विध छाई बाल
अति सुख पाई सैल देखिकें सवारी की ॥

दगग दगग लैन चलत सुभट्टनकी
लगग लगग नेजा वढत निशान के ।
" घनश्याम " भूषण की झगग झगग होत
श्रीगोवर्द्धनलालजूके तेज कोटि भान के ॥
गगग गगग घन गरजे नगारे चारु
भगग भगग अश्व कूदत प्रमान के ।
धगग धगग धक्क वक्क अरि कापत है
हगग हगग होत तोपे कपतान के ॥

---

१ डंका ।

आवत सवारी छत्रधारी गोवर्द्धनलाल
घूमत चलत गजराज महाराज राज ।
घनश्यामप्यारे " चौर दुरै चहुँ औरनते
सजत सुभट दल सैन चतुरङ्ग साज ॥
चलत तुरङ्ग जीन जटित जवाहर के
फहरे पताका घनगाजे दुन्दुभी आवाज ।
संग सब वल्लभ के बालक दामोदरलाल
आवे लालबाग नवनीत के दरस काज ॥

धौसा वहरात फहरात है निसान तुंग
सजी है सवारी भारी बाजत नगारे हैं ।
' घनश्यामप्यारे ' गजवाजिन के साजि दल
चली सुखपाल लैन लागत कतारे हैं ॥
भीडिन के ठठ्ठ मगमावतन नारी नर
लालबाग लोग मिलि होत एक धारे हैं ।
जग उजियारे कान्ह कारे नवनीतप्यारे
छप्पन भोग लेन आए नन्द के दुलारे हैं ॥

लालबाग वर्णन ।

दोहा—अब उपमा कहुं बाग की सुनिये चित्तलगाय ।
बरणोवृक्ष विहङ्ग छवि सब विधिसों समझाय ॥

कवित्त

अनार अम्ब केला जम्भु निम्बु द्रुम
चन्दन अनन्द कुञ्जभ्रमर गुंजार है।
" प्यारे देखो पीपल पलास वट
रोसनतें [illegible]नकी सरस कतार है॥
खट्टा औ चकोतराहू लूमि रहै
जामफल सन्तरा जम्भेरी ड़ार डार है।
न्य भाग नवनीतजू विराजे यहां
देखों लालबागहू की अजब बहार है॥

हतूतन की पङ्गति लगी है तहां
के वृन्द कचनार बहु छारहे।
" देखो माधवी लता के बीच
गुविन्द आज दरस दिखा रहे॥
लहकी लवङ्गनकी लौनी लता
पतान मध्य रचना दिखा रहे।
पैज सैल देखिवे को नारी नर
झुण्ड दौरि लालबागहू में आरहे॥

लटकैं नरङ्गी सेव दाख झूमकाके झुण्ड
बेरनके वृन्द चहुँ औरनतें पूर हैं ।
" घनश्यामप्यारे " देखो विविध बदाम पिस्ता
और भी चिरौंजी चारु झूमत अंगूर है ॥
साठां श्वेत फारसा प्रसारे खेत खेतन में
सीताफल मौलसिरी देखिये जरूर है ।
अहा लालबागहू की कहां लौं बडाई करौं
कैसो नाथनग्र तें नजीक हे न दूर है ॥

केते बडगोंदा गोंदी नीम आंवलाके तरु
काले सरसन की सुगन्ध तर आवती ।
" घनश्यामप्यारे " पित्तपापड़ीरु ताडतरु
केतकी प्रसूनन की मेक अति छावती ॥
रैण अरु आंवला है चम्पा ओ विजोरा वृन्द
केवडे सिरीफल औ सुपारी सुहावती ।
खारक खजूर औ अंजींर सु इलायची है
आज लालबागहू की सैल चित चावती ॥

या औ अरण्डककाकडी छवि
गासूलनैप है फूल लटक्यों करैं ।
" गुल्लतुर्रा गुलगौंदा द्रुम
करौंदनैप बास खटक्यों करैं ॥
है असोक औ किन्दुकन
और तें गुलाब चटक्यो करैं ।
की अनोखी ये बताऊ मोज
ेलि वे को मन भटक्यों करैं ॥

वकान भांग औंधा देखि
छांदन के वृच्छन फेरि न्यारे है ।
" रायडोडी चरचैटा वेल्ल
बांस रामवांस पुंज भारे हैं ॥
कोनी फरसाणी देखो
हाथ्या कज्जा एरंड पसारे है ।
कंगही टिंडोरी देख
बीला कहुं तुरसी के क्यारे है ॥

जाही जुही केतकीसु मालती महक मंजु
मोगरा गुलाब आब अतिही अमन्द है ।
"घनश्यामप्यारे" रायबेल मोतिया के वृन्द
चम्पक चमेली वेली सेवती सुगन्ध है ॥
केसर कसूंभा कुंद पीत ओ वसंत मञ्जु
मरुवेपे शीतल समीर मन्द मन्द है ।
लाल नवनीत ये बिराजे कुंज पुंजनमे
आज लालबाग मांहि अतिही अनन्द है ॥

गोटी गुलबेंडी गुलकेला ओ हजारा अति
सूरजमुखी है स्वच्छ सरसो सुहाई है ।
"घनश्यामप्यारे" इश्क पेचा लजवन्ती देख
सदाही सुहागलकी सोभा सरसाई है ॥
सुखद समीर सोनजुही मन भाई अति
गरपे गुलन हूकी बहार दरसाई है ।
नन्दके कन्हाई सुखदाई लालबाग मांहि
आज छवि जानी जाति अति अधिकाई है ॥

कुंभी की बेल छांई वृच्छनपै कैसी छबि
ठौर ठौर कैसे फूले फूल गुलबांस है ।
" घनश्यामप्यारे " पचरंगी श्वेत लाल पीरे
और भी बसन्ती अधरंग आस पास के ॥
आफूकी सु क्यारी श्वेत लाल फूल शोभा देत
कहूं जल भांगरे में ऊगे वृन्द घासके ।
हरी हरी दूब कास डाभ बोतन के पात
फूले द्रुम देखि चित्त अतिही हुलास है ॥

सूरन रतालू आलू अरबी सकर कन्द
चक्की वृंताक और पालको प्रमान ले ।
" घनश्यामप्यारे " मेथी बथुआ सुआको साग
कुलका चंदलोई औ सरसोहुं मानले ॥
और भी चनाकी बोकनाकी सो बताऊ तोय
कोल्हा काकडी है आलडी है बखान ले ।
टेटी कचनार मूला मोगरी अनेक साग
सभी चीज देखि लालबाग पहिचानले ॥

पक्षि वर्णन

सवैया

वह कोकि पपैयरा कोयल कीर
चकोर चहूं दिशाते चहके ।
" घनश्यामजू " अम्ब कदम्बन पै
इत माधुरि झोर लता लहके ॥
अलि गुञ्जत पुञ्ज परागन पै
सुनिकें धुनियाँ विरही बहके ।
राहिके कबहूं फिर बोलि उठे
हंसि राधे गुविन्द दुहूँ महके ॥

वह लालमुनीरु बया चिड़िया
सँग श्वेत हरी सुख पावति है ।
" घनश्याम " जू मैंना मिजाज करे
मनमाने कहूं फल खावति है ॥
बह काबरी झाबरि सोनचिड़ी
मिलि आपसमें वतरावति है ।
यहि बागमें कृष्ण निहारि अहौ
अपनो धन भाग बतावति है ॥

कई नूरिये डालपै डोलति है
ये कपोतनके चित चायो करैं ॥
" घनश्याम " जु खञ्जन खेलत है
चट चोंचसो चोंच मिलायो करैं ।
बुलबुल हंसे गुलगुल्ल लडै
वो भगेरु कभी दुरि जायो करैं ॥
वह बैठी किलङ्गनकी चिडिया
जिन जाय गिलोरि उडायो करैं ।

कहीं लावटचा खाति चडा हरिया
मिलि तीतर भीतर डोल्यो करैं ॥
" घनश्याम " जु कैसे परेवा लडै
गटकुं गटकुं वह बोल्यो करैं ।
वह कोचरी बाज धनन्तर सो
वह आपस में मिलि बोल्यो करैं ॥
सिकरा अरु वायस चील किते
सब आयके भूमी टटोल्यो करैं ।

वह नीलहु कण्ठकी नीकि छटा
वह कोकिल देखि पुकारति है ॥
वह छोटि चिडी पिंडकी फडका
पंखी वह तीतिरि मारति है ।
कबरी झबरी अरु श्वेत सुवा
सब काकातुआको निहारति है ॥
बहु घूघू बने अरु चामचिडी
दिन को दुख देखि निकारति है ।

पादचारी जन्तु—

कपि कूदे नकुल्ल अनेक चलै
वह बिज्जु बिलाव फिरै बनके ॥
" घनश्याम " जु सिंघ कभी गरजे
चीता सुनि बोल मनुष्यनके ।
वह सेह सिआर सुखी खरगोस
बराह बिचार करै मनके ॥
कहो बागमें कैसे विहार करै
होइ तोपे अवाज घना वनके ।

करकेटारु छापाकि दौडि फिरैं
कहिं मेडकि बोल डराडर है ॥
" घनश्याम " जु केते दुंरइ फिरे
अघेवसरच्या वर्ग सारसर है ।
कहि घोड़ा पिलंग फनिंद महा
मणिधारि अहीसु चराचर है ॥
चीतारु गोयरा बिछु कहीं
घसजात धरामें गरागर है ।

वह कान खजूरथा दमोही कहीं
अजगर बंजगरा जालमें है ॥
" घनश्यामजु " पाटला कोट घने
वह बामनी औरहि चालमें है ।
वह पद्मनि पोनिया लाल हरे
डेंडु वह नीरकि नालमें है ॥
जबहि फिर तोप आवाज सुनी
डरपे घुसजात पतालमें है ।

दोहा—लालबाग प्रभु आयकें मिन्द्र बिराजे स्याम ।
अरु बैठक महाराज की अपने अपने धाम ॥

छप्पय—रत्नसिंहासन जटित मखमली गादी तकिया
राजत श्रीनवनीत हार शोभित नौ लखिया
हीरा लाल प्रवाल माल मोंतिन की दमकै
पिछवाइ जगमगें मिंद्र चहुं दिशिते चमकै
झारी बंटा भोग धरि जमुना जल पधराय के
निज काम वस्तु आवे सकल या विधि मिंद्र सजाय के॥

दोहा-संझा सेन रु मङ्गला ता पीछे सिनगार।
दरशन सातो होत है नित क्रमके अनुसार॥
दोहा-असल दुलीचा जाजमें काच फुलेल सुवास।
अपनी अपनी रीतिसों राखे लम्प गिलास॥

मनोरथ प्रारम्भ

कवित्त—राजै द्वारकेश मथुरेश वर विठ्ठलेश
गोवर्धन नाथजूके पास पूर्ण सुखमें।
" घनश्याम प्यारे " गोदलीन नवनीत जू कों
प्रीति सो अरोगे भोग छप्पन निज मुखमें॥
धन्य गुरुदेव श्रीवल्लभके वंशहू कों
गुनि जस गावें अति मिलावें तान तुकमें।
पैसठ की साल नन्दलाल के अनन्द भयो
अति सुख छायो नाथ नम्र भयो सुखमें॥

इत मथुरेश इत द्वारीकेश विठलेश

मध्य नवनीत सोभा लागत सुहावनी ।

" घनश्याम प्यारे " चहुं ओर होत मोरछल

हीरनकी दमक जैसे चमकत दामनी ॥

चंचला चिराके चन्द चांदनी प्रकाश ऐसी

दरश करवेकोसज आवे गजगामनी ।

गोवर्द्धनलाल बालकृष्ण गोपेश्वरलाल

सकल स्वरूप होत शोभा मन भामनी ॥

फूल मण्डली

दोहा—चैत्रशुक्ल नवमी तिथी भौमवार शुभदीन ।

भई मण्डली फूलकी लालबाग नवनीत ॥

नन्दमहोत्सव

दोहा—चैत्रशुक्ल दशमी तिथी बुद्ध सुद्ध दिनजानि ।

दधिकांदो नवनीत को नन्द महोत्सव मानि ॥

कवित्त

दधिके भराय मांट पलना कनक हू को

मोतीनकी झूमरे वे शोभा सरसावती ।

" घनश्याम प्यारे " कैसी जगमग होत जोति

केते मणि माणिक की गिनती न आवती

नन्द औ जसोदा करकमल खिलोना चारु
चुटकी बजाय गाय हंसि हुलरावती ।
धन्य नाथनग्र धन्य धन्य दशाभीको घोस
ललना नवनीत हू को पलना झुलावती ॥

बांधी पिछवाई दोउ और गजराज धेनु
बतक विचित्र हेम रौप्य के खिलौना है ।
" घनश्याम प्यारे " पिक मोर ओ परेवा हंस
सारस चकोर शुक लागत सलौना है ॥
मौडनके ठठ्ठ गठ्ठ पठ्ठ नर नारिन के
पलनामें झूलत जसुमति. को छौना है ।
धन्य नाथनग्र लालबाग की सगन कुंज
केल बेल दाडिम है द्राख है रुदौना है ॥

दानलीला

दोहा चैत्रशुक्ल एकादशी वार बृहस्पति जान ।
व्रजपति रोकी ग्वालिनी लीन्हो दधिको दान ॥

इत गिरिराज दान घाटी पै गोविंद काज
इतको समाजको आनन्द आज आयो है ।
बाजत मृदंग सुर साधिकें बिलावलके
लिये करताल श्रीगोपाल लाल गायो है ॥

राजैं नवनीत दोउ और गोपिकाके वृन्द
लैलै दधि दूध शीश माथनो धरायो है ।
गोवर्द्धन लालबाग कृष्णलाल देखें छबि
जमुना बहत लोग दरसन कों धायो है ॥

सांझी

दोहा—अठ पहलू पै साजिके सांझी भई अमन्द ।
उत शोभा नभचन्द को इत शोभा व्रजचन्द ॥

कवित्त

सुमन सजाये सिद्ध सांझीके सकल काज
रचीहै विचित्र आज शोभा मन भावनी ।
"घनश्याम प्यारे" चरुचलान की चिराके चारु
चन्द्र चन्द्रिका सो मिलि प्रफुलित जामिनी
लै लै सीस ठाडी व्रजगोपिका कुसुमछबि
भूषन अनूप मानो दमकत दामिनी ।
बैठयो है सिहांसनपै प्यारो नवनीतलाल
आजकी अनोखी छबि लागत सुहावनी ॥

बांधी पिछवाई जाकी जगमग जोति छाइ
कुमर कन्हाई राधिकासों गलबाही हैं ।
" घनश्याम प्यारे " सब सखिन सुहाई आज
कैसी छबिछाई जैसी चन्दकी जुन्हाइ है ॥
राजत सिहासनपे प्यारो नवनीतलाल
सांझी की समाजहू की शोभा सरसाई है ।
गोवर्द्धनलाल श्रीगोपाल बालकृष्णलाल
सकल स्वरूप शोभा देखे बनि आई है ॥

श्रीगुसांजी का उत्सव—

दोहा—चैत्रशुक्ल द्वादशी तिथी भृगूवार दिन जान ।
श्रीगुसांइजू को भयो ये उत्सव सु महान ॥

कवित—केसरी है बसन सब भूषन कनकहू के
केसरकी खोर देखि अति छवि छाई है ।
राजे नवनीत श्रीगुलाब मण्डली के मध्य
" प्यारे घनश्याम " शोभा देखे बनि आइ है
आनन्द सों आरती उतारे गोवर्द्धनलाल
देवमिलि पुष्पन की वृष्टि वरसाइ है ।
केसरी सामग्री अरोगाइ है प्रभूको आज
उच्छव गुसांईजी को आनन्द बधाई है ॥

दिवारो—

दोहा--भई दिवारी सांझ को लालबाग नवनीत।
गायखिलाई श्यामने यथा योग्य शुभ रीत॥

कवित्त—खेली वीर खेली वह धूमर अकेली धेनु
कूदें अति काजर औ मजीठी सवधाय के
घनश्यामप्यारे" खिलवार है सुघर श्याम
सींगन चपेटे अरु लातन बचाय के॥
कुप्पी छननाट घननाट होत घंटन की
नूपुर झन्नाट पग पैंजनी बजाय के।
मोर चन्द्रिका की छवि कोनकी कहां को कहूं
गावत है ग्वार ये दिवारी द्योस पायकें॥

दीपन की अवली है चारु चन्द्रिकासी तेज
चन्द चांदनीमे हैं भीड़ नर नारी की।
"घनश्यामप्यारे" लालबाग की सुरोस मांहि
राधिका विलास पास शोभा बनवारीकी॥
इत हटडीके बंगला की सु वहार देखि
कानको जगाय श्यामसुन्दर खिलारी की।
आरती उतारी श्रीगोवर्द्धनलालप्यारे
बैठ्यो नवनीत छवि मानिक दिवारी की॥

वसन्त तथा डोल--=

दोहा- सुद तेरस शनिबारको प्रथम बसन्त विचार ।
सांझ समय फिर डोलको आनन्द भयो अपार ॥

कवित्त—

दोउ ओर घोर ड़फढ़ोलन की होन लागी
दोउ ओर बाजत मृदंग चंगभारी है ।
"घनश्यामप्यारे" सहज सुभट सुरंगी फाग
इत गिरधारी उत कीरति कुमारी है ॥
अबीर गुलालन की होडा होड होन लागी
बरसत रंग चलैं हेम पिचकारी है ।
मानो सुरराज गिरिराजपै उमगि आयो
ऐसी विध वृष्टि भई देखैं नरनारी है

सुनु फागुन में मतिरूठ अली
फिर रूठन को दिन भोत परे ।
चल चङ्ग बजाय उडावें गुलाल
मिले घनश्याम सुरंग भरे ॥
अरु धूम धमारन में धसि के
पकरे ब्रजराज हिं राखि खरे ।
फिर लेचलैं बीर निकुञ्जन में
मन भावैं सो काज करैं सगरे ॥

कवित्त—

सुनत बधाई सुरराज हू बसन्त की सु
बैठिके बिमान अति आतुर उठि धायो है ।
" घनश्यामप्यारे " नाथ नग्रकों निहार्‌यो पथ
साथ लैं समीर लालबाग आय छायो है ॥
हंस की तपति देखि जलधर पखाल ले
गिरद उड़त देखि छिड़की लगायो है ।
लाल नवनीत प्यारे बाटिका बिराज्यो यातें
बर्सन न आयो इन्द्र दरसनको आयो है ॥

सोरठा—बाजत डफ अरु ढोल होरी गावति ब्रजबधू
भयो सांझ को डोल लालबाग नवनीत के ॥

सघन निकुञ्ज पुञ्ज बिविध विचित्र वेलि
झूलैं नवनीत डोल देख छबि फागकी ।
" घनश्यामप्यारे " झुलावें श्रीगोवर्द्धनलाल
बाजैं ढप ढोल धुनि होत रङ्ग राग की ॥
चलैं पिचकारी हेमवारी चहुं ओरन तें
बरणों कहां लों बात आनँद अथाग की ।
सरस बगीचा मध्य फरस गुलाल हू तें
लाल लाल भूमिका भई है लालबाग की ॥

लीन्हे डफ ढोल गोल ग्वालन सहित वृन्द

फेंट मारि अबीर गुलाल को अडो भयो ।

" घनश्यामप्यारे " हेम वारी पिचकारी हाथ

कहत कबीर बलबीर लौं बडो भयो ॥

लाजको न लेस ब्रजमण्डल सुदेश हू में

फागुन को फैल आय गैल में ठडो भयो ।

नन्दगाम हू तें बरसाने लों मची है धूम

छैल ब्रजचन्द फाग खेलन खडो भयो ॥

दश दश नारिन के पृथक् पृथक् वृन्द

एकै संग कूदि परयो करि किलकारी कों ।

एक हाथ अबीर गुलालन की रोको पोट

एक हाथ द्गन बचावो पिचकारी कों ॥

" अब घनश्याम " आयो होरी को खिलारी ताहि

ऐंचि लाओ अंक भरि प्यारीजू अगारी को ।

लेंहगा पहिराओ चोखी चूनरी उढाओ बेंदी

काजर लगाओ ह्यां नचाओ गिरिधारी को ॥

धूम धुंधकीन की धमारन की धाम धाम
धूंधर कपूर धूप चहुँ दिशि चलो गई ।
" घनश्यामप्यारे " फैल फरस फव्यो है फाग
आज लालबागहू में माटमी ढली गई ॥
छूट छूट जात फोट चोट चहुँ ओरन ते
दाबि के रदन रङ्ग फेंकत भली गई ।
गोल गोल गोसा सें विलंद फूट बादर लों
अबिर गुलालन की गुरट चली गई ॥

प्होची सुरलोक लो सिंहासन सुरेन्द्र पास
अहो आज कहां ते गुलाल चालि आई है ।
" घनश्यामप्यारे " एक देव सों कह्यो हो देव
आओ एक बेर ऐसे खबर सुपाई है ॥
देव शीघ्र आय कह्यो धन्य नाथनग्र धाम
लालनवनीत फाग बाग में मचाई है ।
यह सुनि सुर सब लै लें कें विमान धाये
जै जै शब्द कै कैं कहें आनन्द वधाई है ॥

रथयात्र—

दोहा—सुद चौदस रविवारको रथ उत्सव छबिसाज ।
भयो हिंडोरो सांझको सुदिन शुभ घडी आज ॥

कवित्त—

झालर झलूसनतें जगमग जोति होति
जटित जवाहिर तें छबियुत साज्यो है ।
कञ्चन के कलसपे ध्वजा फहरात जात
देखि " घनश्याम " घनश्याम मन लाज्यो है ॥
जुगल तुरंग जूट जेवर जडावदार
कलंगी लटक लूम तुर्रा धरताज्यो है ।
गोपिनकोनाथ यदुनाथ द्वारिकाको नाथ
सोही ब्रजनाथ आज रथ में विराज्यो है ॥

एक ओर वल्लभ कुमार छबि आनन्द सो
बाजे रमढोल मिलि बांसरी के सथ में ।
"घनश्याम" प्यारे खुसी खलक जहान सबे
कहा कहूँ भीड के प्रमान नही पथ में ॥
झुण्ड बनितान के झमेला लखि मेला आज
अजब मरोर जोर मोर वारी नथ में ।
आनन्द को सफल समूह आज मान्यो जात
अहा त्रिभुवनपति बेट्यो आज रथ में ॥

फहरे निसान धूम धोसा दुंदभी की होत
सेन सुभटन की सजी नेकना डरत है ।
"घनश्याम" प्यारे जीन जटित तुरंगन के
जकरे जन्जीरनतें पकरे फिरत है ॥
राजे छत्र चोर छड़ी छांगी छवि मेघाडम्बर
बाजे हे मृदङ्ग ताल चित को हरत है ।
आह आज रथ में विराजे नवनीतलाल
गोवर्द्धनलाल प्यारो आरती करत है ॥

जुगल तुरंग नव भूषण सुरंग रंग
जटित जवाहिरतें साजे जीन कस कस ।
"घनश्याम" प्यारे घनश्याम रथ मध्य राजे
गोकुल की सकल गलीन बीच धस धस ॥
कुसुम करंज लै ले झुकी है झरोखन तें
रस भरी करत सेहट बीस दस दस हे ।
हंसि हंसि दोले कर पल्लवी करत कान
अश्वन कहत जात ठेर २ बस बस ॥

हिंडोरा—
दोहा—साजि हिंडोरा सघन घन लालबाग ब्रजराज ।
झूलत श्रीनवनीतप्रभु साजत सकल समाज ॥

आनन्द अगाध लालबाग में हिंडोरो आज
रच्यो दाखमण्डप में झूले नवनीतलाल ।
"घनश्याम" प्यारे घनश्याम को झुलावत है
गावत गोपालप्यारो बाजत मृदंग ताल ॥
बोलें पिक मोर चहुँ ओर वो सघन कुंज
चञ्चला चिरागन की चारो ओर दीपमाल ।
आरती उतारैं सिरी गोवर्द्धनलाल प्यारो
भरेमणि मुक्ता कर कञ्चन कौ लेके थाल ॥

रासलीला—

दोहा-चैत्र शुक्ल तिथि पूर्णिमा सोमवार पहिचान ।
चन्दन को बंगला भयो शरद सांझ को मान ॥

कवित्त—

चन्दन के बंगला में राजे नवनीतलाल
गावैं पदनीके स्वर साधत सरंग के ।
घनश्यामप्यारे " धुमाकिट तक ता धिलांग
दधि धिन किटि त्रिकिट मान मृदङ्ग के ॥
वृन्द वृन्द आवें नर नारी लालबाग मध्य
धामकीन टीक चित्त चोगुने उमङ्ग के ।
भीडन के ठठ्ठ गट्ट पट्ट नर नारिन के
हेरे तें न पावत है बिछुडि जात संग के ॥

दोहा—रच्यो रास ब्रजचन्द ने अद्भुत आनन्द कन्द ।
सांझ समय संगीत मिलि खिली चांदनी चन्द ॥

कवित्त—

शरद की रैन रास मण्डल रचायो श्याम
गोपिन के करतें कर जोरि वनमाली है ।
" घनश्यामप्यारे " धुन बाजत मृदंग ताल
बिच बिच गोपाल गोपी एको नहिं खाली है ॥
धुनि सुनि बांसुरी की चकित भयो है चन्द
चांदी सम चन्द्रिका चहुंधा दरसाली है ।
जगमगे भूषण जगामग जोत हरिन की
मुकट की लटक नवनीत की निराली है ॥

चन्दनका चोखटा—

दोहा—प्रतीपदा वैशाख बदि भौमवार शुभ रीत ।
सिमला चन्दन चोखटा तहैं राजै नवनीत ॥

कवित्त -

सांझ समे सिमसा में चन्दन के चोखटापै
भयो है अनन्द भारी भीड की पड़ा पड़ी ।
' घनश्यामप्यारे ' नर नारिन के आवै जुत्थ
झापट की चलैं चहुँ ओर झड़ा झड़ी ॥

मेला को झमेला कुंज पुंज लालबाग मध्य
राधिकाविलास[1] खास अथक अड़ा अड़ी ।
आगे को बढत कोई नीचे है गिरत कोई
ऊपर चढत कोई करत लड़ा लड़ी ॥

पलना ।

दोहा—है द्वितिया वैशाख वदि पलना उत्सव साज ।
भूलभुलैया मण्डली साजत सकल समाज ॥

कवित्त—

भूल भूलैया तामह मण्डली सजी है स्वच्छ
सुमन सम्हारि जाल डारि के कली कली ।
'घनश्यामप्यारे' छवि देख मनमोहन की
सघन निकुञ्ज तामें आवत रली रली ॥
भीड परे भारी नर नारिन के आवैं वृन्द
छोडि छोडि काम बास आवत चली चली ।
अली अली बोलत री लली टली जात कहां
इत उत मारी क्यो है फिरत गली गली ॥

---

१ राधा विलास

सवैया--

झूलत है पलना ललनासु
वहै जसुदा सुत वारो कन्हैया ।
नन्द जु लट्टु फिरावैं कभी
' घनश्याम ' नोछावर वारत मैया ॥
मोर परेवा खिलौना धरे वहै
सारस हंस चकोररु गैया ।
देखैं बने सब ही मन भावत
आनन्द आवत भूल भुलैया ॥

दोहा--तीज तिथी वैशाख वदि व्रतचर्या आनन्द ।
दरस करत व्रजचन्दके दूर होत दुख द्वंद ॥

कवित्त--

तोप की अवाज सुनि भाजि आई भीड सबे
लालबाग राधिकाविलास छांह न्हेरी में ।
' घनश्यामप्यारे ' नर नारिन की लागी लेन
सब दिन रात जात याही सार फेरी में ॥
मङ्गला, सिंगार, ग्वाल, राजभोग, सिद्ध होत
रीति तें सकल काम होत कछु देरी मे ।
रजनी अन्धेरी में उजेरी से दरस होत
भयों व्रतचर्या को उत्सव दुपहरी में ॥

प्रबोधिनी—

दोहा—कृष्णपक्ष वैशाख की चौथ तिथी शुभ जान ।
लालबाग नवनीत के यह प्रबोधिनी मान ॥

कवित्त—

मण्डप रचाये आछे देवन जगाये वृन्द
पञ्चामृत स्नान हू कराये सब रीतसों ।
'घनश्यामप्यारे' दीपमाल हू जलाय लाये
वेही पद गाये मन भाये बड़ी प्रीतसो ॥
मिलि जुलि आये बहु देशन तें नारी नर
दरस कराये बृन्द बृन्द मन चित्तसों ।
ताही समैं आरती कराई गोवर्द्धनलाल
पुष्प बरसाई हाथ जोड नवनीत सो ॥

काचको हिंडोरा—

दोहा—कृष्णपक्ष वैशाख की तिथिसु पंचमी जानि ।
भयो हिंडोरा काचको आनन्द उत्सव मानि ॥

कवित्त—

भीड़ भई भारी नर नारी गिरधारी तहां
छाजत छटारी कुञ्ज कुंज हू के कोरे में ।
'घनश्यामप्यारे' हरियारी में अनन्द होत
कारी कारी कोयल पुकारी चहुँ ओरे में ॥

केल वेल पूरण पतान की लतान मध्य
गावत मल्हार राग संग सुर जोरमें ।
हंसि हरि हराषि झुलावें गोवर्द्धनलाल
झूलै नवनीत प्यारो काच के हिंडोरे में ॥

स्वरूपों का आगमन

दोहा—कृष्ण पक्ष वैशाख की छठ तिथी शुभ गाथ ।
आये छप्पन भोग पै सिरी द्वारिकानाथ ॥

कवित्त—

धौंसा घहरात फहरात है निसान तुंग
बोलत नकीब गजबाजि दल भारे हैं ।
'घनश्यामप्यारे' छत्र धारी बालकृष्णलाल
साजि सुखपाल धूम बाजत नकारे है ॥
सूरमा सुभट लेन लागत सिपाहिन की
जय जय शब्द मग प्रगट पसारे है ।
गावत वधाये द्वार द्वार व्रजनारी ठाडी
द्वारिकेशप्यारे नाथनग्र में पधारे है ॥

ब्रजपुरा चौक मध्य जाके चौतरापे जब
धरी सुखपाल आये लोग देश देश के ।
'घनश्यामप्यारे' परकम्मा देन लागे सब
आवत विमान सुर ब्रह्मा औ महेश के ॥
दौरे दौरे फिरत प्रसन्न सुर नारी नर
वरणों कहां लो मुख थके जात शेश के ।
करि के दरस पुष्प वृष्टि हू करन लागे
चली सुखपाल भांड मिन्द्र द्वारिकेश के ॥

दोहा—कृष्णपक्ष की सप्तमी प्रभु नवनीत सुखास ।
मित्र पधारे मोजसो द्वारिकेशके पास ॥
सोरठा—आये श्रीमथुरेश द्वारिकेश के मन्दिर हि ।
धन्य धन्य यह देश नाथनग्र जामें वस्यो ॥

कवित्त—

मध्य नवनीत इत द्वारिकेश मथुरेश
नाथनग्र हू के नर नारी सुखपावें है ।
'घनश्यामप्यारे' छत्र धारी गोवर्द्धनलाल
इतै बालकृष्णलाल शोभा सरसावें है ॥
जग मग होत जोत भूषण जवाहर की
इत रणछोडलाल पङ्काले ढुरावें है ।
जै जै शब्द होत जब आरती प्रभु की होत
सुर सुरराज पुष्प वृष्टि बरसावें है ॥

होड़ा होड प्रभुता पसारन लग्यो है इन्द्र
जबलों न जानी बात जाहिर जितै रह्यो।
'घनश्यामप्यारे' ध्वजा सात फहरात देख
आप हू निसान धुरवान के इतैं रह्यो॥
श्याम अंग श्रीको मिलावे मघवान हू सो
देख ये अनंद वो सुर पुर कितै रह्यो।
अमित प्रसाद के अरोगे भोग आनन्द सो
चार पहर सक्र लखि चकत चितै रह्यो॥

छप्पन भोगवर्णन—

दोहा—कृष्ण पक्ष बैशाख की अष्टमि छप्पन भोग।
दरस करत आये हरषि देश देश के लोग॥

सामग्रिया....

जै जै नवनीतं आनन्द रीतं परम पुनीतं भोगधरं
लडुआ अरु पेडा नितसों डेढा बांधि कठेडा त्यार करं।
केसराया बरफी लाय समर्पी विधिसो थर्पी चित्त हरम
मेवाती गूंजा त्यों तरबूजा घृत में भूंजा तरातरम्॥
जै जै नवनीतं०

पिस्तारु बदामी बढिया नामी अन्तरजामी लाय धरं
मठडी अरु ठोडं पपची जोडं अधरन तोडं झाल भरं
सीरा रसखोरा घृत के घोरा रसमें बोरा गरा गरम् ॥
जै जै नवनीतं०

बहु दूधसुपूरी गुंजिया रुरी सक्कर बूरी दूध थरम्
है तवाय पुडी लुचई जूरी केसर कुडी मध्य ढरम्
बह बीज चिरोंजी घृत में भूंजी सकरसोंजी थार ढरं ॥
जै जै नवनीतं०

लडुवे है मगदं सतुआ नगदं केशर जगदं सरां सरम्
वह मोहनथारं शक्कर पारं खेल निवारं घृतसु झरम्
लाटा रवनी के लागत नीके मांडा तीखे ना विसरम् ॥
जै जै नवनीतं०

बूंदीरु जलेबी बाबर लेवी फैनी केवी बराबरम्
खरमण्डा खाजा पेडा ताजा दही जमाजा नीर झरम्
वह दूध मलाई खीर सुहाई सिखरन पाई हैम ढरम् ॥
जै जै नवनीतम्०

सीरा बासौंदी माखन लौंदी घृतमें दोंदी सिद्ध सरम्
थपडी खरखरिया घृत झरझरिया है तरतरिया फलै

फडफडिया सेवं रेवाडि मेवं घेवर लेवं बे उजरम् ॥
जै जै नवनीतम्॰

छप्पय

स्वाग सौंठ करि सिद्ध पंजीरी है अति नीकी
दाल मुरमुरी सेव कचोरी बनीसु फीकी
छाछ बडा दहि वडा और मट्ठा दहि ताजा
डेढ बडी अरु घेस छाछ छुकमा सब ताजा
कांजी बूंदी रायता अरु दाखन को मानिये
(यहैं)खांड पुवा अरु कठ पुवा किमि 'घनश्याम' बखानिये ॥

थूली मीठी सेव और चिल्लानों नीको
अमरस मीठो दही सकोरी सिकन वडी को
विलसारु गुलाब पाक राजे रंगमेवा
साबूनी अरु खांड चना केहि भांति अछेवा
पना धरे कई भांति के केला खरबूजान के
सब पाक साग कहलौं कहौ 'घनश्याम'नाम पकवान के ॥

जोटा पूरी राजभोग अरु सेन मजाकी
चकता बैंगन और रतालू सूरन चाकी
केरा ककडी सेव और आलू के गट्टा
मावे के भर धरे चन्द सूरज के बट्टा

चुकली फीका बीज अरु खीरा ककडी जानिये
फल फूल और पकवान बहु कौन भांति पहिचानिये ॥

दोहा—आंबा केरा आदि सब धरे भोग फल फूल ।
सेब सन्तरा दाख अरु सीताफल मामूल ॥

चान्द्रायण—

सीता फल मामूल नरङ्गी बोर है
और गठेली धरी साजि चहुँ ओर है ।
खरबूजे की फांक और अञ्जीर है
पिस्ता अरु अंगूर जामफल चीर है ॥

दोहा—दाडम लीले लीलबा सकरकन्द सब सिद्ध ।
नरमसुकन मसकयान के सब फल फूल प्रसिद्ध ॥

चन्द्रायण—

सब फल फूल प्रसिद्ध अरोगें रीति सों
लीजे प्रभु सब भोग अरज नवनीत सों ।
भलि विध साज अनेक चीज बहु भांति है
धरे थार चहुँ ओर पांति कीपाति है ॥

भोग और आरती—

दोहा—सब सामग्री भोग धरि जब प्रभुको पंथराय ।
भ्रात संग भोजन करें आनन्द उरन समाय ॥

छप्पय —

द्वारकेश इक और इते मथुरेश विराजैं
मध्य लालनवनीत छबी विठ्ठलवर छाजैं
मनमोहन सातो स्वरूप को भाव लियो जब
सब सामग्री अर्पि भोग प्रारम्भ कियो तब
रुचि रुचि सों आनन्द में लियो भोग व्रजराजने
वल्लभकुल बालक तहां 'घनश्याम' सामग्री साजने॥

धूप दीप आरती कीरतन मङ्गल गाये
जमना जल अँचवाय पान बीडा मुख खाये
पीछे मन्दिर द्वार प्रात दर्शन करवाये
इतको छप्पन भोग समग्री दरस दिखाये
या विधसों आनन्द में कीन्हो पूरन काम को
राधा विलास सुख अति सरस पूरु लेहु 'घनश्याम' को।

श्रीगोवर्द्धनलालजी महाराज का वर्णन—

कवित्त

छाजत छबीलो छत्र धारिन को छत्रपति
प्रबल प्रतापी रूप राजत रसाल को।
'घनश्याम' प्यारे कैसी जगमग होत जोत
हीरन के भूषण प्रकाश मणिमाल को॥

कुँवर कन्हैया प्यारो दामोदरलाल संग
दिन २ बढ़ो वंश दीरघ दयाल को।
पुन्य प्रतपाल को है आनन्द समूह आज
भूपही बिलोके तेज गोवर्द्धनलाल को ॥

चरनन लोटे नृप कहो तो पलोटे पाय
अष्टसिध नवनिध द्वार पे अडे रहे ।
'घनश्याम'प्यारे केतें चवर ढुरावें भूप
रूप देख राजन के मनहू बडे रहे ॥
राजधानी देख २ राजी भये महीपाल
बाज गजराजन के जूथन गडे रहे ।
गोवर्द्धनलालजू को पूरण प्रताप देख
क्रोड छत्र धारी कर जोड के खडे रहे ॥

विप्रन को और व्रतधारी व्रजवासिन को
जात कुल भट्टन को प्रथम दिवाई है ।
'घनश्याम'प्यारे मृगराज मुख वार करे
कंठी गोप डोरन की वृष्टि बरसाई है ॥
मुद्रिका मजा की घनसार बटदार वारी
हाकम ते आदि अनुचर सब पाई है ।
गोवर्द्धनलाल द्रव्य अचल समुद्र हूते
कैसी विधि कंचन की सरिता चलाई है।

श्रीगोवर्द्धनलालजी महाराज का जन्मदिन -

कवित्त—

केशर के रंग हू की पाग शीश शोभा देत
केशर की खोर मानो नन्दको कुमार है ।
'घनश्यामप्यारे' जामा केशरी किनारी दार
केशर के रंग सजे सकल सिंगार है ॥
कुंवर कन्हैया प्यारो दामोदरलाल संग
कोटिक अनंग रूप राजत अपार है ।
गोवर्द्धनलालजू के जन्म घोस को समाज
आली आज केसरिया रंग की बहार है ॥

वरसत मेह एरी वटत बधाई बीर
चमकत विजु वधू डोलें हरकाने में ।
'घनश्यामप्यारे' वहे बोले पिक मोर आली
कंचनी कलावत अलापे सुरगाने में ॥
वेद रीत हू ते होत पूजा मारकण्ड हू की
सलके सफाई की सुरु है तोपखाने मे ।
मेघ हू नजाने भूल भरमन माने देख
जनम उछाह आज गिर्धर घराने में ॥

वसन रंगाइ देरी कंचुकी सिमाइ देरी
चूंदर मगाइ देरी मोय इक दाल की ।
'घनश्यामप्यारे' घडवाय देरी मोनमाल[1]
कोर लगवायदे सुनेरी एक चाल की ॥
नहि तो पठायदे भले ही ससुराल मोको
सुनत न मेरी बात कूक रही काल की ।
जाल की जरी की सारी हालदे मगाय मोको
सालग्रह आइ माई गोवर्द्धनलाल की ॥

सावन सने ही मन भावन मही के मध्य
बरसत मेह नेह दशों दिश छायो है ।
'घनश्यामप्यारे' नभ इन्द्र के नगारे बजें
कीर कोकिलान शब्द लागत सुहायो है ॥
हरी हरी भूम जल भरी चहुँ ओरन तें
मुदित मयूर नाचे अति मन भायो है ।
सुख सरसायो गुनी आनन्द बधायो गायो
गोवर्द्धनलालजू को जन्म घोस आयो है ॥

---

१ मोहनमाला

चारों ओर चंचला की चमकें चिराके चारु
जग मग झाड़ झुंड शोभा सरसायो है ।
' घनश्यामप्यारे ' छत्र धारी गोवर्द्धनलाल
कुंवर कन्हैया श्यामसुन्दर सुहायो है ।
ठाडे चोपदार चपडासी और कामदार
सकल सभाको लखि कैसो सुख छायो है ।
गुनी सुखगायो नृत्त पातर नचायो देख
कैसो जन्म द्योस को आनन्द आज आयो है ॥

दामोदरलालजी का जन्मदिन—

दोहा—श्रीदामोदरलाल को जन्म द्योस है आज ।
आनन्द शुभ दिन शुभ घडी साजत सकल समाज ॥

कवित्त—

मंगल बधावो गावो आवो शुभ द्योस आज
सखिन बुलावो चौक मोतिन पुरावोरी ।
' घनश्याम ' द्वारपे बंधावो आज वंदनवार
हिय हुलसावो ये अनंद चित चावो री
दामोदरलालजू को जनमदिवस आज ॥
सकल सिंगार साज शीघ्र उट धावोरी
विप्रन बुलावो दान कंचन दिवावो देर
नेकनालगावो आली सभी मिल आवोरी ॥

गो.पेश्वरलाल का जन्मदिन—

केशरके रंग हू की पाग शीश शोभा देत
केशर की खोर किये दूनो तेज भाल को ।
'घनश्यामप्यारे' जामा केशरी किनारी दार
केशर की धोवती दुपट्टा एक चाल को ॥
प्रकट्यो पुहुमि आज मारकण्ड को सो तेज
विठ्ठलशजू की राज धानी प्रतिपल को ।
आनन्द समूह भयो पोस सुद चोथ हू को
नीको जन्म घोस आज गोपेश्वरलाल को ॥

दामोदरलालजी के यज्ञोपवीत की कुंकुम पत्रिका भेजी—

गोवर्द्धनलाल हैं दयाल नाथनग्र हू में
अधिक अनंद व्रजचन्द चित चायो है ।
कुंवर कन्हैया सिरी दामोदरलालजू को
चैत्र सुद दूज को जनेउ ठहरायो है ॥
वेग ही पधारिये विलम्ब नहिं कीजे भूप
आपके पधारे सुख सो गुनो सवायो है ।
कीजिये कृपाल ये है कुंकुं पत्रि रावरी है
या ही काम हू ते घनश्याम कूं पठायो है ॥

महाराज के प्रति कविका भाव—

महाराज राजन के राजा (श्री) गोवर्द्धनलाल
लिखत लिखाय को[1]तो चरणों में डारदूं ।
' घनश्यामप्यारे ' आश राखू नांहि भूपन की
त्रस्ना तरंग ताय तनसों निकार दूं ॥
चरन न छोडू कर जोडे रहौं आठौ जाम
नाथनग्र धाम तामे सातो कुलतार दूं ।
मेरो प्रण पालिये जू करुना निधान कान
करूं गुजरान फेर उमर गुजार दूं ॥

छन्नूलालजी भट्ट—

बहु गुनवानन के मान मान माननी के
चतुर निधान बुधवान तुम नीके हो ।
' घनश्यामप्यारे ' उपमान के निशान भानु
भानु के प्रमान आप ब्रह्मतेज जी के हो ॥
तासों छत्र धारिन के सुजन संमधी भये
साहित संगीत को मजा भी लेन सीके हो ।
फीके हो फकत एक लुच्चन लबारन तें
छन्नूलाल हमे तो विशाल बुध दीखे हो ॥

---

१ कहोतो

कवित्त—

आयें नाथनग्र में बुलाये गुनवानन के
छाये छत्र धारिन के ज्ञातिमन भाये हो ।
'घनश्यामप्यारे' नाम कीनो सब नग्र हू में
जमके जवाहर को लेन चित चाये हो ॥
कविता कनक बेल मुकता विमल फल
आनन्द अनूप सुख श्रवण सुहाये हो ।
छन्नूलाल प्यारे तुम नैनन निहारि देखो
कैसे दिव्य दरस श्रीनाथजू के आये हो ॥

लागत ही मांह के उमाह चित छायो अति
आयोरी अनंद भले द्योस गिनवायले ।
'घनश्यामप्यारे' छन्नूलालजू को जन्म द्योस
चेत में होवेगो यहि सब को पुछाय ले ॥
कोन कहे हां में कहूं वावरी भई है कहा
तूही बावरी है भला सोंगद तो खाय ले ।
माघ शुक्क पंचमी वसन्त पंचमी है आली
छट को है जन्म द्योस सरत लगाय ले ॥

१-लिघरा छन्नूलालाजी गोकुलस्थ भट्ट थे और बडे रसिक थे ।

व्यास—वर्णन—

सीरी सीरी शीतल समीर सुख देन लागी
मीठे मीठे मित्रननें शबद उचारे है ।
'घनश्याम' वयस विदाई देन लागे मोय
सांचे सुध सुनकें सलोने होत प्यारे है ॥
दरस समेत हिय हुचकी चलन लागी
आनंद अथाह के उमंगे नदी नाले है ।
एते कोई मित्र नें लें डाक में पठायो पत्र
सांचे व्यासराजा नाथनग्र में सिधारे है ॥

कोन नहिं जाने नृप सब पहिचाने जाने
सात ही विलात माने रिध सिध हाने[2] है ।
'घनश्यामप्यारे' नहिं छाने है प्रसिद्ध जग
उपमा अनेक ताकूं दीने के कितीने[3] है ॥
वाह कही सकल समाने हो दधीच वंश
तेरे गुन हू की चोटं लागत निशाने है ।
याने सब सकल मुसाहिन कूं सिद्ध किये
व्यासजू की बात विक्टोरिया वखाने है ॥

१—व्यास सालिग्राम इनका नाम था ये सीतामऊ निवासी सफल राजनिज्ञ तथा उच्चपदाधिकारी थे । २—अधीन । ३—प्रमाणपत्र

अजर अमर द्रुत ध्रुजपें अचल सिद्ध

बचन विचक्षण को निकासि कटे नहीं ।

घनश्यामप्यारे ' यह दिग्गज दिसान हू ते

रदन मतंग हू के उकस छटे नहीं ॥

सांचो सवादी सिरदार वो अनंदी रूप

जापे कृपा होत तापे तनक छटे नहीं ।

द्विजकुल कला पूर पूरन प्रतापी सुनो

व्यास बादशाह ताको हुकम हटे नहीं ॥

व्यासको कवि की अर्जी—

सिंह शारदूल है न चीता है न केहरि है

एहो व्यास राजा यह अर्ज सुन मेरी है ।

घनश्यामप्यारे ' बेकसूर ही लगावें दण्ड

करत अफंड मोसो पक्ष जान तेरी है ॥

गयो रतलाम तापे कियो कतलाम चाय

कीजो छत्रधारी सूं करेना नेक देरी है ।

लीजिये बचाय मोको शरण तिहारी आय

आज अघवेसरा ने धेनू आय घेरी है ॥

कार्य कर्ताओंने आपको कष्ट दिया उस पर यह अर्जी पेश की ।

नखत तुलरास को पगार अर्ध भाग लेहो

करज चुकाय दे हो सफा सिरकारी जू ।

' घनश्यामप्यारे ' हम अनुचर तिहारे बजे

नाथनम्र हू में बात सबे जग जारी जू ॥

बहती नदी में हाथ जस के पखार लीजे

कर उपकार आप सांचे उपकारी जू ।

बीकानेर एक बेर भेज दीजे व्यास राजा

अरजी हमारी आगे मरजी तिहारी जू ॥

कविका व्यास से सम्मान—

जाको राज पूरब पछांह देश दछन लों

उत्तर अतंत धाक मानत खरा खरी ।

' घनश्यामप्यारे ' भय मान भूप भागे फिरें

संग संग लागत फिरे साबत सरा सरी ॥

कांप उठे कायर करेजे धक्र वक्र होत

कोन सूरवीरता औ करत अरा अरी ।

आज की वखत बादशाह येही ठौर ठौर

बैठयो व्यासराजा ताकी बग्गी में बरा बरी ॥

व्यास की मृत्यु पर—

काव्य में कोक कोकिला में क.र कुनीन माँहि
द्विज कुल जन्म एसो जाहिर जनावेगी ।
'घनश्यामप्यारे' विद्या बुद्धि में विनोद हू मे
विविध चरित्र चोखे कोनको भना वेगी ॥
गान तान मान में प्रमान में परीक्षा पूर्ण
प्रचुर चतुराइन में समझ सुनावेगी ।
बेर बेर सुरत रचावें पछतावे कहा
व्यास सो विधाता कभी फेर भी बनावेगी ॥

खुले है किवार द्वार पालन कों दीनी सीख
आज योस उत्तम एकादशी ढल्यो गयो ।
'घनश्यामप्यारे' पूरे पुण्य के प्रताप हू ते
पायो शुभ धाम नहि काहू ते छल्यो गयो ॥
बुधिवान जाको सब जानत सितारा हिन्द
समझ को सिंधु आज साबत थल्यो गयो ।
व्यासबादशाह ताकी हुरूस हसीना खास
लेंके सिस्त बांध आप वस्तको चल्यो गयो ॥

तेरे हाथ हाथ बात सांचे हो त्रिलोकी नाथ
दीन बन्धुहो तो लाज राखो निज दासकी ।

'घनश्यामप्यारे' शिव शेष हू न पायो पार
कोन गति जाने विपरीत ओ विनास की ॥
सोए एक सेजपे सुबुद्धिवान दोउ मिल
खबर परांना होन हार के प्रकाश की ।
बस बस बेर बेर आवत विचार मोहि
कैसी भइ बावरे विचित्र गति व्यास की ॥

जासों भई भेट मिल्यो सरस सनेह हू ते
बातन की चातुरी चरित्र मन मोवे है ।
'घनश्यामप्यारे' देश मण्डल मेवाड कहा
मालव मुलक भर नींद नहि सोवे है ॥
हिंद सिंध पूरव पछांह कलकत्ता हत्ता
सुन सुन बातें तन आसुन सों धोवे है ।
सेठ की ममोई ओ मद्रास के महीप सब
जिज्जलाठ व्यास को विलायत लों रोवेहै ॥

कोठी ते निकासे जनाजा चल्यो नाजनीको
नाथनग्र देखत खलकत खडे खड़े ।
'घनश्यामप्यारे' नर नारीन के आये जूथ
नगर बजार बीच डोलत बडे बडे ॥

संग ही सनेती चली व्यास मनसूर हू की
दुपटे दुशाले बीच लपटे पडे पडे ।
केतिक विलोक इत आये देव देखन को
इत को सब जागे पीर कब्र मे गडे गडे ॥

भूपन की मति अंध कूपसी भई हे भैया
रूप देख देख तू ही काहे को रल्यो गयो ।
'घनश्यामप्यारे' पूरो पक्ष बुधवानन को
रक्षक प्रतक्ष आज भवतें टल्यो गयो ॥
हा हा शब्द सुनत विलायत लों हिन्द सब
समझ को सिंधु आज साबत थल्यो गयो ।
काहे कोहि कवित बनावो श्रम पावो कहा
गाहक गुनीको व्यास राजासो चल्यो गयो ॥

एहो त्रिलोकी नाथ सुनियो सहस्र कान
ब्रह्म घात करके फिर कैसे सुख पायगो ।
'घनश्यामप्यारे' जोड़ा लंकी कबूतर को ये
कोन तोड डारयो या घरनो घर खायगो ॥
कैसो ये संयोग लिख्यो लेखक विधाता नाथ
अभी तो कहा है फेर पाछे पछितायगो ।

लास देख देख कें प्रकाश मुख के न लागे
जाने मान्यो व्यास ताको सत्यानाश जायगो ॥

चन्द्र मुखवारी कोमलांगी वो कनक लता
कंजदृगवारी प्यारी ताकी ये गती भई ।
' घनश्यामप्यारे ' मंजु मरद मुछारे मुख
भये गथ पथ मन मथसी रती भई ॥
कैसो ये संजोग लिख दीनो है विधाता नाथ
जोर जुग जंघ मनो दंपति मती भई ।
हुरम हसीना वे रखोभा रंग भोनी परी
व्यास बादशाह ताके संग में सती भई ॥

जनम जनम जाको मानिहों जरूर जस
अनुचर आपको कहुं न बात जा जा सो ।
" घनश्यामप्यारे " सब करज चुकाय डारो
राज में कराऊँ रुजगार जमा सा जासो ॥
नख अंक हूते ग्रह तक विभाग करौ
पाऊ जो पगार वतराऊ दिल चाजासो ।
एक बेर फेर बीकानेर को पठायो मोय
कुंवर किशोरीलाल कीजो व्यास राजासो ॥

[1]रेवजी भाई शास्त्री

विद्या बेद हु में औ प्रसिद्ध बुधवानन में
राज्य की कुशलतामें चतुर निधान है ।
'घनश्यामप्यारे' इष्ट अचल श्रीनाथजी को
सुद्रसेनजू को ध्यान पूरण प्रमाण है ॥
पर उपकारी दूर रहत प्रपंचिनते
सरल सुभाव करौं कहां लो वखान है ।
रवजी से पण्डित की मानत सकल कान
आज छत्र धारी हू की क्रिया को निसान है ॥

[2]नारायणदत्तजी—

छत्रिन के छत्र छत्रधारिन के छत्र पति
नाथनग्र धाम श्रीजी जै जै जगदेवाकी ।
जग उजियारे प्यारे तुम गिरिधारी नन्द
आज शुभ घडी द्योस आनन्द अछेबाकी ॥
शोभित सभा में शुभ पण्डित नरानदत्त
'घनश्यामप्यारे' रीत सुधा रस लेवाकी ।
जैसे अधिकारी मेरवानी को निसान भारी
सदा चित्त चाहें जो चरणन में सेवाकी ॥

---

१ ये विद्याविभाग के अध्यक्ष थे ।

२ इन्होंने बड़ी सफलता से अधिकार का काम किया था ।

देशपति जाने शोभा सकल बखाने भूप
बडे बडे बडके बकील बात सीके है।
'घनश्यामप्यारे' तुमे बुधवान जाने हम
सुध शुभ नीके पे निसान तेज तीखे है॥
तेरे पुण्य प्रबल प्रताप हू ते अरि नाम
सुन गाम छोड भागे कहत कभीके है।
निस दिन नाथनग्र निर्भय निवास कीजे
पारिजात पण्डित नराणदत्त नीके है॥

कृष्णभण्डार के सेवक—

लाला लाला कह के संभाला सब काम हू को
बाह अधिकारी एकलेइ बड भीम की।
'घनश्यामप्यारे' मुख मुरली मजे की बजे
मन्नालाल लिखिया ले फिरकी अफीम की॥
बल्लभदास पेटी के खजाने ही खोल राखे
सन्तरी सवारी सुन राखियो नकीम की॥
लोचनदास लोचन विचक्षण काम हू में
हिम्मत हुँस्यारी हरीशंकर मुनीम की॥

तीरथ तमाम फिर आवो सब धाम धाम
भट को भले ही मन ये ही अवलेखा है।
घनश्यामप्यारे' देखो हम मथुरामें रहे
राजभोग चुप चाप सब ही मजेका है ॥
कहे हरविलासजू सो मोहनकृष्ण मित्र
श्रीजीको विलोके जाके पडी शुभ रेखा है।
तुम भी सब ठौर चहुं ओर भूम घूम आये
नाथनग्र कासा कहो आनन्द भी देखा है ॥

आजु लौं अनेक भये भारी अधिकारी यहां
तिनमे चर्णदासजी[१] सब सों प्रधान है।
कीन्हे है अनेक काम आछे ओ बनाए चारु।
मन्दिर नगर मांहि विविध मकान है ॥
उन के आधिकार में होत काम सारो यहां
जिन की जहान बीच कीरति महान है।
याही विध समाधानीसे है हरिवल्लभजी
करिके प्रसन्न करें नीके समाधान है ॥

---

१ चरणदासजी परम भगवदीय अधिकारी थे।

उमागणेशजी—

सैल तट सुन्दर प्रसिद्ध शुभ सिद्धि धाम

'घनश्याम' उपमा अनूप भालचन्द की।

लम्बोदर वक्रतुण्ड विघ्नको हरन हार

विद्या वेदहू में बुध अखिल उमंद की॥

एक दन्त सोहे मन मोहे सिध होवे काम।

धावे सुरासुर कांटे फांसी दुखद्वंद की॥

विप्रके अखाडे बलवान महा जाके देख

ठाडें गनेश की कर झाकी हीं अनन्द की॥

गाढो है गुनन में गंभीर गिरजा को नन्द

मेटे दुःख द्वंद धर विघ्न को पछाडो है।

'घनश्यामप्यारे' विद्या वेद में प्रवीन पुर

देवन को देव गण नायक अखाडो है॥

नाथनग्र धाम है मुकाम फोज हू के पास

शुभ फलदाता और अशुभन को आडो है॥

शुद्ध चित्त ध्यावे सोही मनसा सुफल पावै

जाडो गणनाथ रिध सिद्ध लिये ठाडो है॥

---

१ मनोहर श्रीगणेशजी जो लाल बाग की राह में है। ऊभे गणेशजी से प्रसिद्ध हैं।

नाथद्वार में फागकी सवारी—

म्हेलन में केशर की कलित मची है कीच
गुरट गुलालन की घाई रंगराग में
धनश्यामप्यारे ' पिचकारिन की लागी झोर
दपट दुकूल वेष धुन बडभाग में ॥
गोवर्द्धनलाल सज गजपे सवार भये
दामोदरलाल संग अनंद अथाग में ।
नगर डगर हू की वगर अरुन भई
फागकी सवारी चली जात लाल बाग में ॥

बैठी छात छज्जनपे नवल नवेली नार
' घनश्याम ' लाग्यो चित्त आनन्द के कन्द में ।
एते में हि छत्र धारी गजकी सवारी कर
गोवर्द्धनलालप्यारो आयोरी अनन्द में ॥
मार पिचकारी कर गरक गुलालहू में
सरकन पावे फसी फांगहू के फन्द में ।
बेंदीमें बेसर में बाजूबन्द बेरखी में
विथुरी गुलाल चहुँ ओर मुखचन्द में ॥

१ टी. श्री १०८ श्रीगोवर्द्धनलालजी महाराज के वखत होती थी।

श्रीजी की बागड़में आगलगी—

केंधों यह अनल चकोर चोंच हूते गिरी
केंधो वीर आगिया को कोऊ मूठ मारी है ।
' घनश्यामप्यारे ' केंधों टूट परे तारागन
केधों तड़िता की खिरि गिरी तिनगारी है ॥
केधों दीपसलिका को ऊंदर उठाय लायो
केधों हंसहूको तप तेज भयो भारी है ।
केधों गऊ साप ते के आपतें लगी है आग
कोन जाने बागड मे कौन आग डारी है ॥

नाथद्वार की गणगौर—

दिल्लीको दशेरा तीज पुंगल प्रमान जान ।
बीकानेर सावन जनाऊ गुन भारे को ।
"घनश्यामप्यारे" कामनी दीसे उदैपुर की
रूपकी निधान देखी नैन रतनारे की ॥
होली ब्रजहूकी दीपमालिका ममोई मध्य
कलाकन्द जैपुर जताऊ गुन भारे की ।
गजब गुपतेश्वर कपर्दी कांकरोली को
और है अनोखी गनगौर नाथद्वारे की ॥

---

१ श्रीगोवर्द्धनलालजी के समय जो गणगौर की सवारी चैत्र शुक्ल ३ से होती थी वैसी कहां नहीं होती थी ।

छूटत गुब्बारे झडें तारे रंग रंग वारे
बजत नगारे घनगाजत है घोर घोर ।
' घनश्यामप्यारे ' बे सरारे नभहू में होत
बान चक्र वारे ढोल चलत है जोर जोर ॥
गोवर्द्धनलाल देखे अजब अनूप ख्याल
गोरकी सवारी बधू आवत है दौर दौर ।
हरख हरख हंस हंस के अनन्द भरे
बेर बेर बसन गुलाबी रंग बोर बोर ॥

खेलन न जेहों गनगोर बागहू में आज
साससों कहू तो ननदी हू मुखमोर है ।
'घनश्याम' थाग हेन नेक रंगरेज हू को
जाय के बजार हू ते लाय रंग घोर दे ॥
सांझ परि जैहै बीर बसन रंगे है कब
आवन न देहैं वे कनिष्ट बल जोर दे ।
गोवर्द्धनलालजू को हुकुम यही है आज
सारी कित डारी रे गुलाबी रंग बोर दे ॥

बोलत नकीम सीस दाबे चले गजराज
छत्र छबि छाजे करे खलक खमा खमा ।

घनश्याम ' तामे तपधारी गोवर्द्धनलाल
गोरकी सवारी सज आवत झमा झमा ।
कुंवर कन्हैया प्यारो दामोदरलाल संग
भूषण विचित्र ताके दमकत दमा दमा ।
गावे अलबेली तान तीखे सुरवारी वधू
लंक लचकावे बजे पायल ठमा ठमा ॥

छुटन अलंक मुरकन माति गोरे मुख
पगकी धरन लचकन लंकमारे है ।
' घनश्याम ' झुकन झिझुक धीरघूमरन
ताल चुटकीन मान लेत सुर जोरे है ॥
छेल छिङ्गारन की अजब अनोखी तान
न्निज नखरालिन की चाल कछु ओरे है ।
यह गन गोरे हैके नेह रंग बोरे हैके
प्रीति के झकोरे है कि बाल चित चोरे है ॥

नाथनग्रद्र में गनगोर को अनंद वडो
घरन छई है वधाई सब ठोर ठोर ।
' घनश्यामप्यारे ' सज सज के सिंगार नार
ठाडी घरद्वारपे मदन मरोर जोर ॥

तीखे सुर सुरन लपेट हू रंगाये गीत
चली वाटिका में झुंड झुंडन दौर दौर ।
घूमर लगावे बाल हंस मुरकावे देख
द्रगन मिलावे ललचावे कटि मोर मोर ॥

सांझ समे सज के सिगार ले सहेली संग
आई अलबेली चली तीखे सुर गावती ।
'घनश्यामप्यारे' मंद गमन गयंद गति
चंद चांदनी की कन्द शोभा सरसावती ॥
खेलन को ख्याल गणगोर के विशाल बाल
गजरे गुलाब माल अति छवि छावती ।
मेदी की मुख की मिजाजन की मरोरहू की
घूमर की घूम झूम चखन चलावती ॥

गोरी गोरे मुख की गुराई अति गोरे गात
प्रातही ते अधिक अनन्द मान गोर को ।
'घनश्यामप्यारे' कर मंजन उपट अंग
अतर गुलाब मन्द पवन झकोर को ॥
कंचुकी मे उन्नतसे युगल सरोज दाबि
कोरदार सारी लेंगा घूंघट मरोर कों ।

सजके सिंगार ले सहेलिन के संग चली
गावत प्रवीन जोर जोवन के जोर को ॥

इत सरिता को नीर सजल तरंग उठे
वाटिका मे चात्रक चकोर शब्द मोर को।
' घनश्यामप्यारे ' छत्रधारिन के छत्र पति
गोवर्द्धनलाल केसो तेज नहीं और को ॥
मेलाके झमेला पें गुवारे चले चक्रवान
राजत निसान डंका होत घनघोर को।
गावत वजावत रिझावत रंगीले राग
घाट वारे वाग में है ठाट गन गोर को ॥

कुश्ती वर्णन—

प्रथम लगाय रज मलके सुगन्ध अंग
ठोक भुजदंड शब्द भूषन अखथके।
रती बहु भांत हू ते दाव बहु भांति करे
प्रेम न समझ आली जोर है अनथ के ॥
तजत रूमाली कट पटते लिपट दोउ
हटत न नेक वो जतैया लाजपथ के।
'प्यारे घनश्याम कहै ' तलफ अखारे मध्य
गए गथ पथ दोउ मल्ल मनमथ के ॥

तोताकोसु गोता देय अधर उठाय लियो
    पटक्यो सड़ाक ताहि उडिया तडाक दे ।
'घनश्यामप्यारे' लट पट भई लड़ते में
    चट पट चोगट्या की चेंटीली चडाक दे ॥
दे दे मुख गारी मारी अजब अनोखी ठीक
    विठ्ठलदासवारी के दीनी है पडाक दे ।
करम कडाक लगी भींतन भडाक फेर
    पकड के पोता वाय पटक्यो धडाक दे ॥

कविका मित्रमण्डल—

बांधे पेच पेचा अंग अरथ लगावे गावे
    मांगे कोई नेह कर ललु देत गोदरी ।
बाग हू में जाय भंग पीवत अनन्द भरी
    मिसरी इलायची उमंग भर्‍यो मोदरी ॥
प्रीत को प्रतक्ष सांच रक्षक बचन सुक्ष
    वेसे वे प्रबल ज्वान सूर वीर जोधरी ।
नाथनग्र मांहि वे आनन्द करे आठो जाम
    जानत तमाम एसो चुन्नीलाल चोधरी ॥
गोपीलाल मन्नालाल चुन्नीलाल ओ उस्ताद
    आनन्द सो धर्म नीति राखें सदा माथे पे ।

प्रीतके निभैया प्रेम पूरण प्रतक्ष बात
देत नइ पाछे पग नेह हू के नाते में ॥
भंग ओ ठंडाई की सफाई में कहां लो कहूँ
अतर अनन्द व्रजवासिन के मातेपे ।
सूरवीर सांचे है प्रतापी नाथनग्र हू में
हात पांव धोवे जाय ठेठ हाती दांते पे ॥

मन्दिर महीप जो बुलावे तो जरूर जाय
काम काज होय तो हजार बेर हरले ॥
'घनश्यामप्यारे' इत वित ही न डोलें कही
नित ही श्रीनाथजी की झांकी चित्त धरले ॥
होत ही दुमाये के दारिद्र सब दूर होय
भोग धर कृष्ण कों पवित्र पेट भरले ॥
न्हाय के सुमर गुनगाय के सुमर फेर
मोज मे मजा की वो धजा की झाकी करले ॥

विठ्ठलनाथप्रभु--
आनन्द सो मन माने रहो
सुखसो लहो वैठ प्रजंकपे नैनी ।
दुखको नाहिं लेस कछु 'घनश्यामंजु'
घोट पियो नितभंग उजैनी ॥

सींधे मिले रुजगार मिले
इत की उत बात करो रंग भीनी ।
और जगे चित लागे नहीं
जिन विठ्ठलनाथ की बन्दगी कीनी ॥

उदयपुर तरङ्ग–

नगर उदयपुर की लखहु तीजी मधुर तरंग ।
सिंह महल नृप यश कथन और विवाह उमंग ॥

नृप वर्णन–
कवित्त –

कोहू ज्योत जुगनू जवाहिर की जोत रहै
कोहू चंचला से खासे प्रकट पसारे है ।
'घनश्यामप्यारे' घन सारसे घनेही नृप
केते मणि मानक ते खंढ खंड न्यारे है ॥
के ते मुकता से ये महीप महि मण्डल मे
के ते हू कंचन सम उदित उज्यारे है ।
छत्रिन के छत्र छत्रधारिन के छत्र पति
भान फतेरान भूप और सब तारे है ॥

पारस जो कहूँ तो प्रतक्ष ही पासाण जानो
कहूँ रतनागर तो कैसे खार को लहूँ ।

'घनश्यामप्यारे' पारिजात जो बखानो पाय
सो है जड मूल तासों कहत संकोच हूँ ॥
काम धेनु कहूं तो पशु है निजवा की जौन
इन्द्र चन्द्र कहूं तो कलंक तामों ना कहूँ ।
ऐसे समै ऐसी छवि कोन की बताऊ आज
रान फतमाल तो को कोनकी उपमादहूं ॥

सूरज शशी को नभमण्डल में प्रकाश जो लों
वेद औ विमल बानी श्रवन लियो करो ।
'घनश्यामप्यारे' गंग जमुना त्रिवेनी बहै
करण समान दान विप्रन दियो करो ॥
सरित सुमेर गिरि अचल महीपे महा
अक्षै बट ऐसे जुग जुग हि जियो करो ।
जों लो ये अखण्ड धरा शेष शीश राजे तो लों
राण फतमाल राज आनन्द कियो करो ॥

महारान फतमाल अति ही दयाल आज
ढाल हिंदवान की है ध्यान श्रीमहेशके ।
'घनश्यामप्यारे' पुष्टिमारग प्रतक्ष पक्ष ।
रक्षक सुलक्ष लोग आप देश देश के ॥

लाये पधराय द्वारिकेश मथुरेश जूको
देख्यो सुख गोवर्द्धननाथ बिठ्ठलेशको ।
धरमं को है गाडौ सीसोदिया वंश जाड़ो
जगमे जहार अवतार अमरेश को ॥

बली नृप वोही सोही अंकुर मही ते कढ़ी
छाइ बेल जसकी जग जाहिर खरी करी ।
' कहे घनश्याम ' दोय पल्लुव करण कीने
ताको वीर विक्रम ने कछु तरी करी ॥
फेर भूमण्डल में भयो न कहूं एसो भूप
तभी कुमलान लागी सूकत धरी करी ।
महाराज राजा महाराण फतमाल वाही
कीरत लताकूं तेने सींच के हरी करी ॥

महल वर्णन—

उदित उतंग ऊंचे विविध विलंद महा
कंचन कलस तेज चमकत भान के ।
' घनश्यामप्यारे ' गोख जारिन की बारी काच
बंगला बहार चारु चौदिस मकान के ॥
बुरज तिबारी चोक चांदनीचित्र सारी
गुमज मकान साइवान परथान के ।

मानो विश्वकर्मा निज हाथ सो बनाये छाये
 इन्द्र के न ऐसे जैसे महल महारान के ॥

पीछोला वर्णन—

पीछोला समुद्र हू की पार ये निहार नेक
 लागी लेन दीपनकी चोदिस कतारिका ।
'घनश्यामप्यारे' जागी जोत जो जवाहिर की
 जग मग होत नवरत्नन की वाटिका ॥
देखन को दौरे देश देशन स्वदेश हू के
 यूथ नर नारिन के आइ सुकुमारिका ।
येही जगमान्दिर है जगको निवास निज
 नीर में बसाई नृप सोने की सी द्वारिका ॥

छूटत गुबारे झडे तारे रंग रंग वारे
 बान चक्र ढोल महताप का उजासा है ।
'घनश्यामप्यारे' छत्र धारिन के छत्र पति
 रान फतमाल के प्रताप का प्रकाशा है ॥
नीचे नीर तीर जगमान्दिर मकानन में
 जग मग होत जोत दीपन की खासा है ।
देख देख खुशी होत खलक जहान आज
 पीछोला समुद्रहू पे अजब तमासा है ॥

उदयपुर महाराणा के यहां विवाहोत्सव—

मंगल कलस द्वार तोरन सजाये सिद्ध
मण्डप रचाये शुभ रीति सों रुकाने में।
'घनश्याम' नृपति बुलाये देश देशन ते
आनन्द बधाये गाये हिय हुलसाने में॥
आये मुरधर तें महिपाल श्रीजोधनाथ
लाये गजबाजि संग सुभट प्रमाने में।
नगर उदैपुर में ब्याह को उछाह भयो
हिन्दवान भान फतेरान के घराने में॥

आये जोधपुर तें जरूर श्रीजोधनाथ
लाये संग सेन चतुरंग छवि छायो है।
'घनश्यामप्यारे' गजबाजिन के साज दल
नौबत निशान जान जब्बर सजायो है॥
ताके मध्य दूले दशरथ सो कुंवर देख
साफा सीसहूप पेच अजब झुकायो है।
हिन्द वान भान हू के तोरन के द्वार हू पे
गजने म्रजाद देख मस्तक हलायो है॥

यूथ गज हय साजि फहरे निसान तुंग
नौबत की घोर होत जाहिर जमाने में।

'घनश्यामप्यारे' भूप भेले भये देशन के
सब सिरदार आये रीतसौं रकानें में ॥
उरदी अरविबीन बाजे मंगलीक धुनि
सुनि सुरराज लाग्यो विरद बखाने में ॥
ब्याह को उछाह आछो आनन्द समूह भयो
हिन्दवान भान फतेरान के घराने में ॥

उमड घुमड आवे जोड दल झुंड झुंड
गावे मंगलीक धुनि लीनी वनितान ने ।
'घनश्यामप्यारे' जै मनावे फतैरान हू की
पंगत पसारे बूटी शंकरकी छानने ॥
सकल पकान पूरि रिद्धि नवनिद्धि राजे
सुधा रस छाके भाके विरद वखानने ।
बाई के विवाह को उछाह भयो आछी विध
अश्वमेध यज्ञ मानो कीनो हिन्दवान नें ॥

अखै ब्रह्ममण्डली कमण्डली सो भेस रचि
त्रिपुंड लगावे कोई उर्ध्वपुंड भाल पे ।
'घनश्यामप्यारे' कोई चन्दन चरचि अंग
छान छान भंग रंग शंकर दयालपे ॥

शुद्ध स्नान करि करि आनन्द लगावें भोग
दक्षिणा सहित कामनी की विधि चालपे ।
तृप्त होई बोले नृप क्रोड जुग राज कीजे
खबर खुशी की पोंचे रान फतैमाल मे ॥

महेलिन की बाडी के अगाड़ी ब्रह्मभोज होत
व्यंजन अनेक बहु भांति सों बनाये है ।
'घनश्यामप्यारे' आवें वृन्द वृन्द विप्रन के
पंगत लगावे बधू गावत बधाये है ॥
भोजन अनन्त भगवन्त के लगावे भोग
सदा जै मनावे फतै रान मन भाये है ।
दक्षिणा दिवाये भये तृप्त सुख पाये भूप
कीजे ये सदा ही शुभ कारज सुहाये है ॥

उदेपुर की गणगोर—

देख्यो जोधपुर भी विलोक्यो जाय बीकानेर
कृष्णगढ कोटा छवि देखी सब ठौर की ।
'घनश्यामप्यारे' जूनागढ भी जरूर देख्यो
पाटन प्रतापगढ देवल्या दसौर की ॥
मालव मुलक कै में हद्द सब राज धाम
गाम रतलामलों उज्जीन ओ इन्दोर की ।

उदैपुर देखी जो सवारी फतैगनजू की
        और की न ऐसी है सवारी गनगौर की ॥

१

द्योस गनगोर के सो गोरके उछाह भयो
        छाई उदैपुर में बधाई ठौर ठौर है ।
देखे भीमरान को तमासो ताकबे के मिस
        मांची आसमान में विमाननकी भौर है ॥
कहै पकरिकर सोहि धोके उमा के शंभु
        गोरिन की गोदमें गजानन को दौर है ।
पाड़ पाड हेला महा मेला में महेश पूछे
        गोरन में कौनसी हमारी गनगौर है ॥

२

द्योस गनगोर कैसो गिरिजाके साथन को
        देखत यहां ही अति आनन्द इते रहै ।
कहै परिकर श्री प्रतापसिंह महाराज
        देखो देखबे को दिव्य देवता तिते रहै ।
सेल तज फेल तज वेल तज गेलन में
        हरत उमा को यो उमापति हितै रहै ।
गोरन में कोनसी हमारी गनगोर ऐसे
        शंभु घडी चारकलों चकृत चिते रहै ॥

इन दोनों पद्यो में पद्माकर से अधिक साम्य है और कविका नाम भी नहीं है किन्तु उनकी पुस्तक में मिलने से लिखा है।

सिंह विषयक—छप्पय—

पुष्ट बाघ बन मंद हद्द छांडत चल आवत
लेत फाल उन्मत्त क्रुद्ध कूदत झुंझलावत ।
चक्रवाक जों सिमिट चपल चंचल गतिधावत
मनो समीर चलतीर अंक भरि वाचित लावत ।
लेहु नाल फतमाल जब कछु आप आगे बढ़त
मृगराज माल लागत भचक चकर खाय भूमीपड़त ।

सवैया—

वन बकर शक्कर दे तहसो कसके फिर बाघ बुलावत हो ।
'घनश्यामजु' सिंह कहे बनके हमपे का कसूर लगावत हो ॥
फतमाल दयाल कृपाल सुनो झटहीं चट चाप चढावतहो ।
मदमस्त समत्त नोहतन को ताकि मार दुनाल गुडावत हो ॥

कवित्त—

कहो कहूं जाके समझा के फतैरान हू सो
आगे हू लगाई भूप अरजी असाड में ।
'घनश्याम' हुकुम लगावोना हजूर हू को
हाकिम सुनायो ना कसूर मुख गाड में ॥
धेनु ना सतावे न सतावें महिष हू को
खे हें बन जन्तु रहें प्रबल पहाड में ।

अजा शिशु चीरना सकेंगे कोउ सिंह सुन
नीर तो पियेंगे एक मण्डल मेवाड़ में ॥

चढत बकारे सिंह पूंछ फटकारे भूम
कन्दरा कढत ही दुकारे वन थहरात ।
'घनश्यामप्यारे' केहि कायरके कांपे हिये
बोलत मयूर मनो घोर घन घहरात ॥
आयो फालभर फतमाल सों मिलन काज
वीर रणधीर की पताका मृछ फहरात ।
दहरात बाघ उड जात प्रान कहरात

पैदल चरग धाय धरनि विलो के बाघ
बन बन नाम ले ले टेरे तोहू आवेना ।
'घनश्यामप्यारे' कही कोप के कपर्दी सों
मार डारे वाहन वितुंड एक पावेना ॥
ऐसे शंभु बोले गौर आपनो बृषभ साज
भाखत भवानी भंग थोरी गटकावेना ।
ऐसी पक्ष करत नरेश की हमेश याते
रान फतमाल हू को तू ही समझावे ना ॥

काप रहे केहरि कढ़ैन कन्दराते बार
नृपति लगाई सिंह सुरता सुभालकी ।
'घनश्यामप्यारे' सुनी श्रवन वितुंडन ने
जाजम जमींपे वो बनावे गोखाल की ॥
धक्क वक्क धाक हू ते धीरज धरैन मन
चूके ना बंदूक चोट चतुर नृपाल की ।
कालकीसी कठिन कराल महाज्वाल जोर
चलत दुनाल महाराण फतमाल की ॥

महाराणा प्रसंसा -

दोहा—आछी लहर समुद्र की जटित बंधाई पाळ ।
नाव विराजत नोख सूं वाह राण फतमाल ॥

विंजन बनत अनेक विध साजत कञ्चन थाल ।
राज रीत भोजन करत वाह रान फतमाल ॥

तुरंग चढत जब छत्र पति वारो लाल प्रवाल ।
मनो भान भुवप फिरत वाह रान फतमाल ॥

भेटी नांहि मृगांद को कुल वट रीत कृपाल ।
षट् दर्शन परसन रहे वाह रान फतमाल ॥

कीरत देश विदेश में दीखत दीन दयाल ।
भाखत कवि जस जगत में वाह रान फत माल ॥

चरण धरत चिन्ता करत डरत भरत नहि फाल ।
धक्क धक्क धूजत अरी वाह राण फतमाल ॥

पडत हाथ जब मूछपे कांपत दसदिग्पाल ।
धांकळ तें धूजत धरा वाह राण फतमाल ॥

शत्रू धूजत डग मगत वन बन फिरत बिहाल ।
डरत धरत नहिं धीर कहुँ वाह राण फतमाल ॥

चौंक उठत चित वत चाकित थर थरात तिहि काल ।
अरि कम्पत झंपत सरित वाह राण फतमाल ॥

वो तप तेज निहारि के अरि कम्पत उरसाल ।
केहरि कढेन कन्दरा वाह राण फतमाल ॥

शत्रू धूजे धाकसूं फिर फिर चूके फाल ।
तेज हिंदुपत भान को वाह राण फतमाल ॥

वीर सुभट सुजवट अमिट खेलत क्षत्री ख्याल ॥
दपट वितुंड दुनाल सो वाह राण फतमाल ॥

सकल भूमि थिर शेहरो अकल सिन्धु शुभचाल ॥
दखल देत सब काम में वाह राण फतमाल ॥

बाघन विचरत वन सघन नृपति लगावत भाल ।
दृगविलोकि छांडत नहीं वाह राण फतमाल ॥

खाडां के कवित्त—

प्रलय को पूत मजबूत इन्द्र वज्र को सो
देन कह्यो तोकों भूल नायविसरूं गोमैं ।

'घनश्यामप्यारे' तेज द्वादश दिनेशहू को
.देखियो निकार जब सामने धरूंगो में ॥
जीवन जवान बलवान तेरे कर मध्य
सुनिये सुभट तेरे अरिसों अरूंगो में ।
देखत ही शत्रुन को फाट जाय गांडो याकों
नेरो मत छोडो ख़ांडो नजर करूंगो में ॥

भेसा को भंजन है रंजन है सुभट्टन को
गंजन कर गर्व गुमान गार डारे गो ।
'घनश्यामप्यारे' विकराल पडे बिजुरी सो
जीवत जवान कभी काहु सों न हारेगो ॥
जाही समें समर रचेगो मेदपाट मध्य
डाट डाट शत्रुन को काट काट मारेगो ।
खांडे ते खोपरी षडा षड उडाय देगो ये
दडा दड डार डार भूमि पे पछारेगो ॥

चोडो चार अंगुल को जोरदार जानिये जू
धाक ही ते धूजे अरी फाट जाय गांडो है ।
'घनश्यामप्यारे' वो पलाका खाय बिजुरी सो
याके गुन भेदन कों जाने कहा ढांडो है ॥

जीवन जवान तोसों प्रबल परीक्षादार
सूरमा सुभटन नेरो नाहि छांडो है ।
जाहिर सुनाऊं बात कायर कों ठीकना है
शत्रुन की खोपरी उडायवे को खांडो है ॥

भेंसा को भांग के खुरीपे आय खेलत है
साफ कढ जाय मृगराज हू के तंग में ।
घनश्यामप्यारे ' याकों सूरवीर राखत है
जीवन जवान कभी बांधेगो उमंग में ॥
देखे डर लागे अरी भागे धक्क बक्क होत
मरद मजबूत रजपूतन के रंग में ।
संग सूरबीरन के अंग में उठे है क्रोध
खांडे की खबर पडेगी कभी जंग में ॥

टांडो मत टांडो भेड भागते फिरोगे मौन
एरे अरीमान कभी कूर दग झांके गो ।
' घनश्यामप्यारे ' या प्रतापी ज्वान जीवन को
क्रोध उपजो तो कभी ओंधे मुख टांके गो ॥
ले गो जो खबर खराब कर देगो तोय
सबर न आयगोरे कोन तोय ढांके गो ।

भकियो न भांग भूल हू के द्वेष की जो मत
वढिया विलंद खांडो बांडो कर न्हाकेगो ॥
दोहा-रफल चलावो रीतसों खांडो राखो पास ।
देखत कांपे कारखो सब शत्रुन को नास ॥

कांकरोली तरङ्ग—

कांकरोलि की तरंग यह चोथी सुखमय देखु ।
द्वारिकेश वैभव जहां सागर वर्णन पेखु ॥

द्वारिकेश वर्णन—

बारद दुधी को भर पलना कनक हू को
मोतिन की झूमरे सरस दरसावती ।
'घनश्यामप्यारे' कैसी जगमग होत जोत
केते मणि माणिक की गिनतीन आवती ॥
नन्द जसुदा के कर कमल खिलोना चारु
चुटकी बजाय गाय हांसि हुलसावती ।
धन्न कांकरोली धन्न नवमी को घोस
द्वारिकेश ललना को पलना झुलावती ॥

कांकरोली—

इतै चैन घर इते रंडमलमित्रवर
इतै भोर हू ते भौन ढ़ोलक वजो करे ।

'घनश्यामप्यारे' गावें मंगल वधाये गीत
राग रागनीके पुंज प्रबल भजो करे ।।
देखे कहा दौर दौर द्वारकेश आवें यहां
और पुर याके भाग देख के लजो करें ।
रेन कभी रीता काम होय मन चीता कभी
भागवत गीता ओ कविता गजो करे ।।

१ रंडमल मिश्र—

दोहा—पोबारा बाजी रहो साजी रहो अकह्म ।
सदा मर्द गाजी रहो सुराजि रहो रडमल्ल ।।

२ कांकरोली चूलमाता मे इन्द्रके अखाडेकी कुस्ती—

होंस उडिजायगें हजारन में तेरी सोंह
हड्डी टूट जाय जैसे भूतके पछोर में ।
'घनश्यामप्यारे' वे अरगड गजराज कैसे
रल्ल लगजाय गिरे टल्ल मल्ल राडे में ।।
धरन डिगेरे तेरी बरण बताऊ बात
करन सकेंगो कछू ज्यादे जोर जाडे में ।
मूल मंत्र ये है चूल मातातें चलोई जइयो
भूल मत अइयो कभी इन्द्रके अखाडे में ।।

---

१ रडमल कविके मित्र थे । २ कांकरोली में चूलमाता नामक एक देवीका स्थान है वहां 'इन्द्रका अखाडा' नामका एक अखाडा है ।

कांकरोली[1] का ग्रीष्म—

सुन्दर समुद्र स्वच्छ शीतल समीर नीर
स्नान के करत चित आनन्द अमोली को ।
'घनश्यामप्यारे' तरिवे तें तरी होत अति
बैठ जल मध्य लेत रँग वो किलोली को ॥
और कर दरस दयाल द्वारिकेशजू के
बागन सघन तरी आनन्द अतोली को ।
और रितु और देस रीझियो भले ही प्यारे
ग्रीषम में कीजियो निवास कांकरोली को ॥

ग्रीषम में कोन कांकरोली की करेगो होड
जल भरे अचल अथांग शुभ चारी के ।
'घनश्यामप्यारे' बाग बंगला वहार द्वार
नहर अपार चारु फूल फुलवारी के ॥
राजे द्वारिकेशजू के मंदिर अपार छबि
धार धार छिरकें नीर पावस बहारी के ।
करदे सघन तरी भरदे तिवारी चोक
घरदे हजारन फुंहारे वे हजारी के ॥

---

१ कांकरोली मेवाड में नाथद्वार से दश मील दूर एक पुष्टि सम्प्रदाय का स्थान है ।

रायसागर[1] बर्णन—

ठाट मच्छ कच्छन के बच्चन सहत बृन्द
　　ग्राह फुफकारे लोट डारे छवि पेखिये ।
'घनश्यामप्यारे' वो पतालसो पछारे पूंछ
　　मूंछन सहेत मीन नीर बीच रेखिये ॥
चातल के चोक दाल सरस सिलेठ कैसे
　　बांग बगुला है बीच बतक बिसेखिये ।
और जलमानस मराल मुकता है तहां
　　आज रायसागर की ऐसी छवि देखिये ॥

कमल कुमुदन कतार लखि पत्रपुञ्ज
　　गुंजत मधुप लोल लहर अनोखिये ।
'घनश्यामप्यारे' तहां प्रमुदित पौन गौन
　　सुमन सुगन्ध द्रुम भकुकन रोकिये ॥
मुकता तडाग मध्य मंजुल मराल तहां
　　मुदित विहगं सीम सुख को सुधोकिये ।
आनन्द समूहनि वसुधा अति शोभा देत
　　आज रायसागर की ये छवि विलोकिये ॥

ध्रुव न डिगेरे एरे पश्चिम न ऊगे भान
　　दिग्गज न दोरे सुरराज वज्र टूटेना ।

---

१ यह एक मीठे जलका सुन्दर समुद्र है । इसे राजसिंहजीने बंधाया है।

'घनश्याम' शेष भुव भार हू न झेले शशि
नभहून ठेरे जा बिना ही थंभ छूटेना ॥
सिन्धु रतनागर को सुधासो न होत नीर
ऐसे सुमेर सुवरण को कोई लूटेना ।
रायसिंह भूप वेदमंत्र सो लगाई नीम
जानो जरूर रायसागर कभी फूटेना ॥

सारस चकोर मोर मधुकर माते मंजु
मौनभेष मारुत मतंग मजबूत पार ॥
'घनश्यामप्यारे' पक्षराज के अमर अंश
अंजीनी कुमार इन घुमत मतंग जार ॥
इतगिर सीकर तमाल तरु तीर तार
पीक अकसीर भद्रकाली शुभ भूमि कार ।
चक्रवाक वारिज विहंग बक बृंद साज
आज चल मित्र रायसागर की देख बार[2] ॥

रायसमुद्र पर श्रावण

येछवि पहार ओ बहार बंगला की छटा।
उमड़ घुमड़ घटा फेर घन घूम्यो है ।
जलन के थलनभरे अचल समुद्र बीच
बादल विशेष देख कैसो झुक झूम्यो है ॥

---

१ महाराणा राजसिंहजी उदयपुर के राणा थे । २ बहार ।

'घनश्यामप्यारे' कैसी दामिनी दमक होत
वृक्षन लतान में समीर चल्ल चूम्यो है ।
हरे हरे शिखर पहार गिर चहूँ ओर
आज रायसागरपे आवन ये लूम्यो है ॥

सावन में सांझ समे संभा फूलवे की बेर
निकसि सुलभ घन हँसो देख न्यारे से ।
घनश्याम' ताके पास छहरी घटा की पांत
छूटे फिरें जलधर मतंग मतवारे से ॥
रेल जेसे अंजनपे तड़िता तडप जात
धनुष दिखात पचरंग रंग धारेते ।
धन्य कांकरोली रायसागर तिहांरी पाल
बहार बंगला की है इन्द्रके अखारे से ॥

नारीबर्णन ।

सीसधर गागर चली है रायसागरपे
हँसत है चन्द्रमुखी मन्द मुसक्याती है ।
लंगर की जोडीये सजी है सुपायन बीच
तिमनी जडाऊ जुल्म उपमा बनाती है ॥
'घनश्यामप्यारे' तोपे जान कुरबांन करू
बार बार निगे कर दरस दिखावी है ।

रूप है गुलाला कच सुन्दर अति भाला
सज पोमचा काला दे झाला चली जाती है ॥

रदन कपोल है री गोल गजरे की भांति
नख कहा लागी लीक लागीरी मृनाल की ।
'कहे घनश्याम' कहां जागेरी उनींदे नैन
रैन ही मन्दिर जागी बाद इक बाल की ॥
तनी तरकानी अलसाने अंग मेरे वीर
कोर उरझानी पांय रपटो कुथाल की ।
पुलकित गात घन स्वेद बढ़ आयो आली
दौड़के सवारी देखी बालकृष्णलाल की ॥

कांकरोली शोभा ।

पूरन प्रवीन यहां राजे द्वारिकाके नाथ
उपमा निहारि कर झांकी अनमोली की ।
'घनश्यामप्यारे' काहे भटकत कोस कोस
यहीं निज धाम कछु खोल गांठ नोलीकी ॥
देवन पति देव ह्यां पावत ना पारा वार
होत पाप दूर अदा देख सिंहपोली की ।
देवरूप सागर निहार नट नागर को
ऐसी छबीली छटा देख कांकरोली की ॥

ऊपर को म्हेल ताकी सैल है समुद्र की

दूरही तें मारुत ह्यां मन्द मन्द आती है।

' कहे घनश्यामप्यारे ' नीचे राजनग्र देख

इत पुरी द्वारिका की सेल ये दिखाती है ॥

गरज रही है इत गोमती सुतीर मांह्

देख गामहूं की शोभा कैसी स[illegible] है।

झपट झपट डोलें ग्राह रायसागर में

कहीं जलकाकडी को बतक उड़ाती है ॥

मोई[1]ग्राम नृप दीपसिंह—

करण सो दानी मनमानी भोज विक्रम सो

रजवट रीत शुभ राजत विसाल है।

' घनश्यामप्यारे ' व्रतधारी वानप्रस्थन को.

विप्र बुद्धिवानन को पुण्य प्रतिपाल है ॥

मण्डल मेवाड़ के प्रतक्ष रणधीर वीर

रक्षक प्रजा को खेले क्षत्री वट ख्याल है।

मोइ गाम नाम निजधाम भूपभाटिन में

देख्यो दीपसिंह नृपअति हीं दयाल है ॥

---

१ मेवाड का एक ग्राम है।

बैठ्यो राजगादीपे प्रतापी दीपसिंह भूप
पुगने दरिद्रता को वाही छिन खोई सी ।
'घनश्यामप्यारे' अष्टसिधि नवनिध भये
कीरति की बेल शुभ घोस आन बोई सी ॥
एन सुखदेन चेन पूरण प्रजा को भयो
ठोर ठोर आनन्द उछाह घन होई सी ।
जोई जोई करत बडाइ मिल दोई दिन
अहा आज केसी मोई लागत ममोई सी ॥

दीपसिंह का रायसागर निरीक्षण—

बतक विहंग बाम बगुला मराल मंजु
कंज कुल कुमुद कतार नोष नावकी ।
'घनश्यामप्यारे' तहां प्रमुदित पौन गौन
मौज मच्छ कच्छन की होत आव जावकी ॥
मुंछ वारे मोन पूंछ पटके पडापडीन
स्वच्छ जलता के मध्य देवें चित चावकी ।
बैठ बंगलाके मध्य देखे दीपसिंह भूप
संग सिरदार मिल सैल दरियाव की ॥

दोहा--तैं बोई कीरति लता मोई मध्य अनूप ।
दीपसिंह दीपत तहां वां भट भावी भूप ॥

कोठांऱ्या रावजी–

सांचे सूर सुभग सरा हैं सब भूपनने
बेर बादसां ते लीनो आज बात ठाडी है।
'घनश्यामप्यारे' श्री कोठयार गढ वारे नृप
ढाल हिंदुवान की तू सबतें अगाडो है॥
देवन में दानमें दया में ओ मृजाद हू में
अजब विसेख्यों तेने रीत नहीं छाडी है।
दीन जन पालकओ रक्षक मही में सदा
सूरज प्रताप वर तेरे मुख डाढो है॥

शिवनाथसिंह भूप—

देवन में कृष्ण जैसे गंग सरिता में लखो
गिरिमें सुमेर जो मनोज़ होत रूप में।
घनश्याम' चाल में मराल व्याल हू में रोस
ताल में भोपाल उपमा है जो अनूप में॥
बेदन में ब्रह्मजैसे विद्या में वाक बानी
वाणिन में ज्ञान वापी बेरा मोक्ष कूप में।
ध्यान में महेश रिध सिध में गनेश जैसे
तेज में दिनेश शिवनाथसिंह भूप में॥

---

१ नाथद्वार से करीबन तीन माइल दूरी पर यह स्थान है।

नोचोकी वर्णन—

एक एक थंभ को अमोल मोल लाग्यो देख
एक एक ख्याल हू की कीमत सो सो की है।
'कहे घनश्याम' वे प्रतापी रायसिंह भूप
अबै नाम करवे की ऐसी ताप कोकी है॥
कोडन के काम छतरीन के बताय दीने
तेळ घृत वापी जाय घेवरी को धोकी है।
आय कीर गोमती की टक्कर लगे है यहां
महल दरवार हू के देख नोचो की है॥

कविकी गर्वोक्ति—

कहा कहों नृपति निहाल करवे को कछु
हम तो हैं सुन्दर सुजान कान कारे के।
'घनश्यामप्यारे' यहां नन्द के दुलारे जान
तन मन धन एते सबै प्रानप्यारे के॥
हम है व्रजवासी सुख रासी श्रीकृष्णजू के
वाही के उपासी और काहू केन सारे के।
दबेना दबाये नेक हटेना हटाय सुन
आखिर हम चाकर चारहाथ वारे के॥

चाकर तिहारो हौं निगाकर इते को नाथ
मेरी वात हू पे तू कदापि चित्त देगोना ।
कहे घनश्याम ' फिर चलें चक्र चुगलन
करेंगे बुराई ओ भलाई कोहू केगो ना ॥
अब सुध राखियोजू करुणा निधान कान
भेडन के आगे सिंह स्याल हो रहेगो ना ।
मेर हू सुभाग्य मांहि लिख्यो जो विधाता सुख
तोपे व्रजराज ये नसीब कोहु लेगो ना ॥

श्रीकृष्णलीला तरङ्ग—

दोहा—लखहु कृष्ण लीला सुभग पञ्चम मधुर तरङ्ग ।
जिहि सुनि होत उछाह हिय भूलेजात जगजङ्ग ॥

न्हेवो छोड दीनो एरे कान्हर कलिन्दी तट
मंद हंस मोसो क्यों चितैवो छोडदीनो ते ।
' घनश्याम ' एवो छोडदीनो गालियन को का
मन हू की वात मोसो कहबो छोडदीनों ते ॥
रैवो छोडदीनों रसरीतिसो हमारे ढिंग
नाहक क्यों प्रीति को निभैवो छोडदीनों ते ।
गैवो छोडदीनो पानी प्रेमसो प्रवीनप्यारे
बंशीधर बंशीको बजैवो छोडदीनों ते ॥

मन मेरो लग्यो हि रहे तुममे
तुमभी कभि ध्यानधरो के नहीं ।
हित सो चित की हम सांचि कहे
विरहा दुख पीर हरो के नहीं ॥
'घनश्याम' कहे तुमे जानत है
कहो कारन वोही खरोके नहीं ।
हम तो तुमको नित याद करें
तुम भी कभि याद करो के नहीं ॥

अब तो सुध आवे सतावे सुनों
कहांलो जियको वरजोई करे ।
इत नेहके मेह चलें दगसों
बिरहाकि घटा गरजोई करे ।
हुचकी चले मित्र मिलाप की सों
मिलवे को मनोसर जोई करे ॥
जितने दिन ना मिलि है 'घनश्याम'
तिते जिय ये लरजोई करे ॥

वह माधुरि मूरति चन्द्रमुखी
हिय के बिच में अब राजचुकी

यह प्रीत की रीत सभी विधसो ।
सोलिये छल छँदसों साज चुकी
' घनश्याम कहे ' अब हों न डरो
कुल काम की लाजसों भाज चुकी ।
जग भूंडि भले बकिये तो कहां
यह बूडि सनेहकी बाजचुकी ॥

तुम प्रीत करोगे मिलोगे नहीं
दुखदोगे जुदाइन के कर जोरहो ।
चाह अथाह भई चित में
इतमें तो कभी मुख नेकन मोरहो ॥
' घनश्याम ' निभायवो कैसे बने
तुम तो अबलों कछु ओरते औरहो ।
मानि नहीं कहनावत री
हम जानि नहीं तुम ऐसे कठोरहो ॥

मन जाको लग्यो जिहि को तिहि सो
चित ताको फस्योइ रहे नित फन्दमें ।
जो घन मोर वसन्त जो कोकिला
चात्रक स्वाति अलीजो सुगन्दमें ॥

नीर जो मीन अहो 'घनश्यामजू'
कञ्ज प्रभाकर होत अनन्द में ।
बीन कुरंग मराल सरोवर
चाहत चित्त चकोर जों चन्द में ॥

सुन कैसी करुं कित जाऊ अबै
मेरे हित प्राणके प्यारे बिना ।
कल नांहि पड़े पल एक घरी
तेरे दृग नेक निहारे बिना ॥
कासों कहू दुख की बतियां
'घनश्याम' सनेह के धारे बिना ।
जल हीन जों मीन अधीन रहे
गति ऐसि है मित्र तिहारे बिना ॥

कवित्त—

जादो पति पास जाय कहियो जरूर ऊधो
एहो प्रानप्यारे एक बेर ह्यां जरूर आव ।
'घनश्याम' तेरे बिन व्याकुल विकल बाम
तोहि दृग देखिबे को दिन।दिन अती चाव ॥
एहो कान लाखन दिखाई तुमे कूबरी की
ऐसो संयोग भयो दासी दिन दूनो दाव ।

लाज हून आई हौ कनाई मन भाई कहा
कैसे करि बैठे खल मृग मद एक भाव ॥

देख वह कान्हर कदम चढ बैठ्यो बीर
निठुर अहीर मोसो करे मृदु हाँसरी ।
' घनश्यामप्यारे ' सास ननद जिठानी जोर
बोले बंक बचन ताकी निकसे न गाँसरी ॥
कहा करूँ बीर ये अहीर को न मानत है
लै लै नाम टेरे चूमें प्रेम हू की फांसरी ।
सुने गुरुलोग तोहि नांहि पहिचाने बात
बरजो न माने वो बजावे फेर बांसुरी ॥

निकसि निकुंज ते अचानक विलोक्यो बीर
चीरके करेजो मेरे प्रानन में फसगो ।
' घनश्याम ' कठिन परचोरी अब कैसी करूं
जतन विचारयो एते वाहीसे निकसगो ॥
फेर हँस नैनन नचाय मुसक्याय मन्द
मिस मिस आयके लपेट पेंच कसगो ।
पीत पट वारो वह छोहरा लकुट वारो
बंसीवट वारो मेरे नैनन में वसगो ॥

आई तीर यमुनाके न्हान ब्रज वाम सब
- चीरन उतार धरे रंगत निरालीपे ।
'घनश्यामप्यारे' आयो औचक सुघर श्याम
धरे चीर ललित कदम्बन की डालीपे ॥
एते सब न्हाली आली आपुने वसन कहां
हँसि दे ताली करें अरज वनमालीपे ।
एक एक आवो हँस अरघ लगावो सबै
वसन लेजावो धावो लजिके कुचालीपे ॥

प्यारि प्रवीन परोसन के संग
जमुना जल जाय के लाइ तो है ।
रहि लाज संभाल सबै अंग की
दृग घूंघट बीच छिपाइ तो है ॥
आयो प्यारि प्रवीन पिछारिही तें
लखि दूति रही समुझाई तो है ।
तेरि चोटि को फोंदा इसारो करे
गलि देखु मनोज की येही तो है ॥

कवित्त—

आनन्द के कन्द ब्रजचन्द नन्दजू के नन्द
मेटो दुख द्वन्द मनमोहन मुरारीजू ।

'घनश्याम' हम ब्रजवासी व्रजराज प्यारे

मित्र मनमोहन तें कहा चित्त धारीजू ।।

अब सुधि लीजिये हो कीजिये पुरानी याद

सुबल सुदामा हम वेही अवतारीजू ।

गिरवरधारी अरे नेकना विचारी अब

तारी दे हँसन लाग्यो भूल गयो यारीजू ।।

सास सतरे हैं जेठ पतनी रिसे है बंक

बचन सुने हैं अरे मन इग्तरायजा ।

'घनश्यामप्यारे' ह्यां निकट न दीसे कोई

सुन्दर सुजान कान समझ सिधायजा ।।

नाहें घर नीर ए अहीर चल जमुन तीर

धीर का धरत जीय मत अकुलायजा ।

मान मान मेरी नेक कृपा कर कान मोपे

नागर विहारी नेक गागर उचाय जा ।।

कानरी कुण्डल शीश मोरपंख गजत है

आय आय मुरली में गावत है तानरी ।

तानरी मोसों वह करत है अनेक भांतिं

मोहन मुकुन्द श्यामसुन्दर सुजानरी ।।

जानरी लियोरी वह ढोटा है अहिर ही को
 - कहे 'घनश्याम करे' गोरस को पानरी ।
पानरी खाय मुसकात वह मेरी ओर
 मांगत है दान वह रोकत है गैलरी ॥

इन्द्रकोप—

कोप सुरराज गिरिराजपे चढयो है आज
 गाज गाज कहत अवाज दल जोरदो ।
'घनश्याम' भट सब धीर न धरोजु नेक
 तोर तोर बंद मेघमालन के छोरदो ।।
देखो व्रजराज व्रजपुर के निवासिन को
 मेरी भेट मेट फेर केसे मुख मोरदो ।
दोरे दोरे खबर दामिनि घनघोर दोर
 ढोरदोरे नीर जाय सबै ब्रज बोरदो ॥

घोरे होत घनकी सजोरे दामिनी की होत
 दोरे सुरराजजू के हुकम अखीर को ।
'घनश्याम' करपे उठाय गिरिराजजू को
 लाओ गोप गाय ग्वाळ सब व्रजभीर को ॥
खग मृग डोले बोले व्रजवधू गावें गीत
 सक्र पछताय पांय पड्यो बलबीर को ।

फाटगयो बादर सुरेश बाट बाट गयो
चाट गयो चक्र मेघमालन के नीर को ॥

शक्र कोप कीनो भोग लीनो गिरिराजजू ने
चक्र छोड दीनो मेघ पच पच हारे है।
'घनश्यामप्यारे' नीर ब्रजमें पडी न बूंद
कोतूहल होत धुन बाजत नगारे है ॥
छायो गिरि छत्रसो उठाय लीनो बाम कर
ब्रज को बचाय लीनो सुखी ब्रजवारे है।
सुखसो कहत लारे सब हि निहारे देखो
एक हाथ वारेने हजार हाथ धारे है ॥

होरी—

एहो ब्रजचन्दजू दुहाई तुम्हे नन्दजू की
गारी देहों लाल पिचकारी अंगमारो-ना।
'घनश्यामप्यारे' पीय बसत बिदेश याते
तुम मदमाते बात तनक बिचारोना ॥
हम सकुचे है कान गाम गुरु लोगनसो
नाम धरि ठाडे रहे वृथा जिय जारो ना।
औरनपे चाहे जेतो उपट उलीजो श्याम
पहिले हीं पुकार कहों मोपे रंग डारोना ॥

उत वृषभानु की कुंवरि साजिके सिंगार
महचरी सखी मिल झुंडन सजायो है ॥
' घनश्यामप्यारे ' व्रजनारिन के वृन्द वृन्द
लीने चंग जंगपे उमंग कर धायो है ॥
अबिर गुलालन के माट भर घाट ठीक
रंगन के तुंग भर झुण्डमें जमायो है ।
आगे भई राधिका पिछाडी व्रजबाल सबै
देखत गुपाल अति आनन्द बढायो है ॥

धूम मची व्रज सब धूम धूम आवे घेर
रंगभर लावें गात्रे सुन्दर सरस है ।
' घनश्यामप्यारे ' वे बजावे ढप ढोल गोल
नैनन नचावे अंग अंग को परस है ॥
कोहू कीच लोटे धूर धूंधर उडावे शीश
बाल तरु वृद्ध भये एक से बरस है ।
चोकन में चांदनी में गेलमें गिरचारन में
छाय रहे जहां तहां गुलाल के फरस है ॥

जाय के कहूंगी जसोधासों अबी याही छिन
कंचुकी हमारी वर जोरी कर फारीक्यों ।

'कहे घनश्याम प्यारे' पति अति रिस जे है

रंगमें हमारी ये भिजोई लाल सारी क्यों ॥

भये कहा ब्रजके इजार दार ऐसे तुम

बाबरे बिनाई बात दीनी मोय गारी क्यों ।

फेंट पकरोंगी ना डरोंगी कान काहीं आँच

एहो नन्दलाल पिचकारी नैन मारी क्यों ॥

छोडो नहिं छैल गेल रोकके खडे हो कहा

लंगर तिहारी पिचकारी को लहेंगी हम ।

'घनश्यामप्यारे' चंग खोस लेहों हाथनतें

वाथन में वाथ घाल अचक गहेंगी हम ।

मुरली उपंग ब्रजराज अरु पीत पट

झटक उतारि चित्त चाहसों कहेंगी हम ।

सखन सहेत बलराम श्याम हूँ सो आज

फगुआ हमारो फेंट पकर लहेंगी हम ॥

दौर दौर मोहनजू औरपे उछारो डारो

घोर घोर लावो लाल पीत अरु कारो है ।

'घनश्यामप्यारे' चित चाही का करत कान

मान कह्यो मेरो तोपे अचरा पसारो है ।

चरचा करेंगे लोग देख ब्रजमण्डल में
सास ननदी को काम कठिन करारो है।
उडे चित्त न्यारो फाग लागत है खारो मोपै
रंग मत डारो पति घरना हमारो है॥

होरी होरी कहत करन बरजोरी लगी
मोतिन की तोरी माल आय गिरिधारी की।
'घनश्यामप्यारे' दौर लपट परी री अंग
दपट लगाई मार धार पिचकारी की॥
खोसालियो चंग ओ उपंग लगी संग बाल
आओरी कुंवरी करें आज बनवारी की।
बढकें अगारी ब्रजनारी जब होनलागीं
भागगयो तारी देइ सारी ले विचारी की॥

घन घनश्याम विजुरी है बृषभानु सुता
चात्रक चकोर मोर सकल ब्रजनारी है।
'घनश्यामप्यारे' भाल वेंदी है जुगनु जोर
धनुष पचरंगी सारी अंग अंग न्यारी है॥
नूपुर बजे है भिल्ली प्रीति को समूह पूर
गरजत मेघ ढप ढोल बजै भारी है।
बरसत रंग एके संग ब्रजमण्डलपे
कींचभई केशरकी फाग बरसा री है॥

उडत गुलाल व्रजबाल दे हंसे है ताल
नन्दको गुपाल बढो कछुक अगारी को ।
' घनश्यामप्यारे ' सेन सखन समीप कर
लयो एक अचक उठाय व्रजनारी को ॥
घेरलीनी होरीके रसीले छिनरान छेल
मेठ धरी मठठ मरोर मतवारी को ।
छूटगई छलसों अचक अलबेली नार
जाय कही व्यथा वृषभान की दुलारी को ॥

विनय ।

वांह कर धाऱ्यो गिरि व्रजको उबाऱ्यो तुम
साऱ्यो सब काज सोइ नीकी विधिजानू मैं ।
' घनश्यामप्यारे ' ताऱ्यो अधम अजामिल सो
कंसको पछाऱ्यो बात सोहू पहिचानू मैं ।
नाथइन्यारा अही बकासुर को सुमाऱ्यों तुम
मारयो दशकन्ध सोही खरी चित्त तानू मैं ।
गजहू पुकाऱ्यो ताकी टेर सुन पच्छ कीनी
ऐ हो नाथ मेरी पच्छ करो जब जानू मैं ॥

कवि सभी अवतार कृष्णके ही मानता है अतःश्रीकृष्णसेही अपने उद्धार की प्रार्थना कर रहा है।

रासक्रीडा ।

बृन्दावन सघन सुबोलत मयूर पुञ्ज
कुहुकत कोकिला कपोत कीरचाल को ।
'घनश्यामप्यारे' मुख सुनि मुरली की धुनि
थेइ थेइ नाचे नृत्य गोविन्द विसाल को ॥
बाजत मृदंग तक धुवकिट तद्धिलांग
धा धा किट धाकिक सुनहु सुरताल को ।
लालहू की मन्द मुसकान राधिका की ओर
देखें ब्रजबाल रास मण्डल गुपाल को ॥

कन्हैया की क्रीडा ।

दश ही दिना के होत पूतना पछार डारी
मारडार्यो कंसहू को मेटो दुखद्वंद है ।
'घनश्यामप्यारे' कर धार्यो गिरिराजहू को
शक्र मान तोर्यो वहि आनन्द को कन्द है ॥
अजामेलतार्यो और नाथडार्यो कालि अहि
गोपिन तें लीनों दान सोही व्रजचन्द है ।
देख वह दुलही लेआयो शिशुपालहू की
अब तुम जान्यो कैसो जशुमति नन्द है ॥

आगम ।

कानहू को आगम सुन्योरी आइवे को आज
दौरि दौरि देखे नेक धीरन धरति है ।
'घनश्यामप्यारे' जोरि जोरि के सखीन आज
गाय गाय हरखि वधाये उचरति है ॥
मुर मुर देखे मुसक्यावे मुख मन्द मन्द
पीयको उछाह जीय नांहि विसरति है ।
तोरि तोरि मुकता मणिन की मरोरि माल
देख पिय दौरिके निछावरि करति है ॥

गोपी अधीरता ।

कैसे या विहारी को विलोकों इन नैनन तें
एरी बीर गुरुजन तें कहलों डर्यो करूं ।
'घनश्यामप्यारे' नेक देखत कलंक लगे
शंक व्रजबालन की उरमें धर्यो करूँ ॥
अबतो विचार मन बार बार आवत है
बैठिके इकन्त जप तप ही कर्यो करूँ ।
येही वर मांगू करतार को पुकार कर
मोहन को अंकमें निशंक ह्वे भर्यो करूँ ॥

प्रिय पत्नी सम्भाषण ।

खोलो जू किवार तुम कोहो एती बार, हरि
नाम है हमारो जाय बसो जू पहार में ।
माधव हौं भामिनीजू कोकिलाके माथे भाग ॥
भोगी हौं प्यारो जाय बैठो तुम पताल में ।
नायक हौं नागरीजू टाँडोक्यों न लादो जाय
मौन हौं प्यारी फिर हु मन्त्र उपचार में ।
हौंतो वनमाली जाय सींचो क्योंन बाग बाडी
हूंतो 'घनश्याम' जाय बरसो कछार में ॥

ऋतु तरंग—

दोहा–ऋतु तरंग जान हु छठी जामें षडऋतुरंग
निरखत ही आनन्द बढे हिय बिच होत उमंग ॥

वसन्त—

फूली द्रुमबेली नव पल्लुव प्रसून बन
उपवन अंब केल दाडिम सुहावनी ।
'घनश्यामप्यारे' मन मुदित मयूर नाचें
कूद कूद कोयल पुकारे गुनगावनी ॥
उडत पराग मकरन्द रसछाके अली
केंसू कचनार डार लता छवि छावनी ।
त्रिविध समीर बहे आनँद उछाह युत
आइ चित चावनी वसन्त मन भावनी ॥

फूले हैं पालास बन उपवन अम्ब मोर
झूकी है नरंगी दाख संतरा सुहावने ।
'घनश्यामप्यारे' केल बेल छवि वृच्छन की
माधुरी लतान अलि बोले मन भावने ॥
मोतिया गुलाब रायबेल कुन्द चम्पकली
मोगरा सिंगार हार बेला सर सावने ।
पीत फूल सरसो सुहाई कीर कोकिलान
गावें वधू आगम वसन्त के बधावने ॥

आली कहो कैसेधौंबचेंगी उपाय कहा
बालम विदेश सुधिपाई नहीं कंतकी ।
'घनश्यामप्यारे' पीरे बसन सुहान लागे
मोतिनकी माल गरे श्वेत छवि दन्तकी ॥
ऐसेसमे प्रीतम बिदेश को गमन कीनो
मुदित विहंग नर नारी जीवजन्त की ।
मन्द मन्द पवन झकोर ये गयन्दन की
गावन वधून की है आवन वसन्त की ॥

लाई नवपल्लुव प्रसून सरसों के फूल
अम्ब मोर भौर देख चितसों चहाकरूँ ।

'घनश्यामप्यारे' लाई अबिर गुलाल संग
उठत उमंग बीर दुखित रहा करूँ ॥
ढोलना बजावें गोल गावेना गलीनमध्य
कोयल कूहूके कुंज दूनी में दहा करूँ ।
बेर बेर टेर टेर आवत भवनमध्य
कंतबिन मालन वसन्त ले कहा करूँ ॥

शीतल समीर सोतो सूलसो लगतबीर
संगकी सहेली सो लगे है सिंग टोलीसी ।
'घनश्यामप्यारे' यह भौन लगे भाकसीसो
सरसों सुगन्ध ये चिराक लगें होलीसी ॥
विषसो विनोद सब भूषण भूजङ्ग कैसे
केसर को रंग लगे कालकी करोलीसी ।
कंतविन वेरन वसन्त वरछीसी लगे
आगसो अबीर ये गुलाल लगे गोलीसी ॥

आवत वसन्त के सुपाती लिखी प्रीतमको
प्यारे शीघ्र आओ नहिं तार हू दिवावेगी ।
'घनश्यामप्यारे' भेजूं पथिक तिहारेपास
बेग आओ बालम वधावे मिल गावेगी ॥

आइ इत होरी सब गौरी मिल खेलैं फाग
जोपे नहिं आवोतो जरूर विषखावैंगी ।
धूमहुँ मचावैंगी उडावैंगी गुलाल मिल
विरहा सतावैंगी अतंत दुख पावैंगी ॥

जानियो जरूर मेरे मिलन मनोरथको
मनहू की बात मन हू में पहिचानियो ।
'घनश्याम' पाती ना पठैयो काहु देशनमैं
कोयल कुहू के इत मेरी सुधि आनियो ॥
प्रानप्यारे करजा करार तब जान देहुं
भूलजिन जैयो रीस मोसे मत मानियो ।
उडत अबीरके उडैंगे संग प्रानमेरे
एहो कंत अंतही वसन्त मत मानियो ॥

आओरी सहेली लो बजाउरी उपंग चंग
गावोरी गलीन में अनंग को न डरहै ।
'घनश्यामप्यारे' लो मलोरी गुलाल बीर
गेल छिडकाओरी गुलाब के अतर है ।
पल्लव प्रसून नव फल दल अम्बमोर
कुंज कुंज कूदैरी विहंग बनचर है ।
हिय हुलसाओरी अनन्द छविछाओ आज
लाओरी वसन्त ये हमारो कंत घर है ॥

मन्द मन्द मारुत महेके माहि मण्डल में
फैल उठी सौरभ सुगन्ध ये अनंत की।
'घनश्याम' जगउठी बिरह अचानक ही
चैन नाहिं रेन दिन आई सुधि कंत की॥
नवदल पल्लव प्रसूनन तें छाये बन
मुदित मयूर नांचे हिय हुलसन्त की।
गावत गुनीकी चहुं औरनते ठौर ठौर
उड़न गुलाल हू की आवन वसन्त की॥

कोयलको अम्बको कदम्बको न देखूं दृग
कुसुम गुलाब के न वृन्दन में जैहों मैं।
'घनश्यामप्यारे' ना विलोंको बाटिका के वृक्ष
सरसो सुमन रंग नाहीं चित दैहों मैं॥
आलिन अलापन को श्रवन सुने है कौन
लाल विन अबिर गुलाल ना उड़ै हों मैं।
नाचवो सिखंडिन को जब समझें हो वीर
जब मेरो प्रानप्यारो भवन लखैं हों मैं॥

आवत वसंत हुलसन्त हियपीयमिल
जावत गुलाल औ अबीर भर झोरियाँ।

'घनश्यामप्यारे' अंबमोर उमराये छाये
गावे सब गुनिन प्रवीन रंग बोरियाँ ।
पल्लव प्रसून और माधुरी लतान मिलि
कोकिलासु कीर चहुँओर चित चोरियाँ ।
बाजनदे ढोल ढप गाजनदे भेरी बीर
फागुनमें खेलूंगी प्रवीन रंग होरियाँ ॥

उठ मृगनैनी जोर जुगल जुलूसन तें
बढ बलिहारी जाऊँ बदन सँवारवो ।
'घनश्याम' सींचि मनमथ की रसीली बेल
खेल फागहू को मन मुकुर[1] विचारवो ॥
घोर कंज केसर कटोरनमें लाई भर
घूंघटमें विहंसि चकोर चख[2] मारवो ।
धारवो हृदयतें उपचारवो अनोखी विध
बेसर बचाय हाथ केशरको डारवो ॥

---

१ दर्पन । २ नेत्र ।

जो लों पिय मेरो परदेश कों बसत आली
तो लों बनमाली धूम धूंधर मचावेना ।
'घनश्यामप्यारे' व्रज ग्वार वे गवाँर गोल
टोलन के टोल दप ढोल हू बजावेना ॥
सहचरि सखीरी सब सावधान रीजो बीर
भर भर पेट चोट चखन चलावेना ।
मोरचंग मुखते बजावेना सुनोहो भली
कहियो अलीनसों गलीन बीच गावेना ॥

वरज वरज गोल ग्वालबाकि बोले अत
जाओ घर सुन्दर सहेली सब संगकी ॥
'घनश्याम' कायको वताओरी अबीर मोय
गेरदे गुलाल अखनीपे रंग रंगकी ।
प्राननाथ बसत विदेश दूरदेश याते
जोरकरवे की मोकों मनसा अनंगकी ।
फड़कत अंग जीय धड़कत मेरो बीर
खड़कत चंग चोट झडत मृदंगकी ॥

कोयल न जानो ये तिलङ्गन की फौज मानो
गुंजत मधुप नाहि तोपन चलाई हैं ।
'घनश्यामप्यारे' चले मारुत मतंग गति
अतर अनेक रंग बाज छवि छाई है ॥
चन्द्रचन्द्रिकान जानो समय समैया दृढ़
कोकिला की कूकन नकीब टेर आई है ।
साजदल पंचबान रागकी कृपान लिये
देखु बिराहिनपे अनंगकी चढाई है ॥

सीतल समीर लागे सुमन सुगन्धनते
पंपासरोवर मध्य झंपाकरि आई है ।
'घनश्यामप्यारे' काकपाली कीर कोकिलान
कोकिन कदम्बनपे कुहुक मचाई है ॥
जैसी चन्द्र चन्द्रिका परागमें मधुपगुंञ्ज
मोसम वसन्त पाय सयन सजाई है ।
धीरना धरेरी पंचतीरले चल्यो है आज
वीर विरहीनपे अनंग की चढाई है ॥

सवैया—

कँकु ओ अक्षत पुष्पपराग गनेशके शीश चढावहिंगी
'घनश्यामजु' धूप धरेंगी सुगन्ध निवैद्य को भोग लगावहिंगी
सीमपे गेर गुलाल अबीर मिलें पियसो चित चावहिंगी
अब येही उपाय करेंगी अली सो वसन्तपे कंत बुलावहिंगी

पहिले तो पठावेंगी पत्र सुनो फिर पंथिन हाथ बुलावहिंगी
'घनश्यामजु' सांचिकरेंगि सला हुचकी सुधरीत चलावहिंगी
फिर वापस आइ वधाइ देहें नाहिं तार अजंट दिवावहिंगी
अब येही उपाय करेंगि अली सो वसन्तपे कंत बुलावहिंगी

हम पत्र रजिस्ट्र करेंगि सुनो फिर तारपे तार दिवावहिंगी
'घनश्याम' रुप्या अरु मोरलगे अरुऔर लगेतो लगावहिंगी
ऋतुराज मिजाज करेगो कहा हमरे गृह पीतम पावहिंगी
अब येही उपाय करेंगी अली सो वसन्तपे कंत बुलावहिंगी

लिये धीर समीर सुगन्ध महा मकरन्द मलिन्द गवावहिंगी
'घनश्यामजु' अम्ब कदम्बनके नवपल्लवतें बनछावहिंगी
कचनार अनारन डारनपे मिल कोकिका शब्द सुनावहिंगी
अब येही उपाय करेंगी अली सो वसन्तपे कंतबुलावहिंगी

बन बाग परागप्रसूनन की आलिकुंजलता लिपटावहिंगी
यह शीतल मन्द समीरचले 'घनश्यामजु' काम जगावहिंगी
कूके कदाचित कोयल तो पियको कहे प्रान वचावहिंगी
अब येही उपाय करेंगी अली सो वसन्तपे कंत बुलावहिंगी

यह शीतल मन्द समीर महा मलयाचलते मिल आवहिंगी
पतझार होवेंगे सभी द्रुमतो नवपल्लवतें बनछावहिंगी
'घनश्यामजु' माधुरिझोरन की लतिका लचके उभरावहिंगी
अब येही उपाय करेंगी अली सो वसन्तपे कन्त बुलावहिंगी

विरहाकि विथातें बचेंगी जभी नहि तो सरपंच चढावहिंगी
'घनश्यामजु' केसे करेंगि केधों चहुं और गुलालउडावहिंगी
गालिमें आलिगाय उठेंगी कभी ढपढोल अतंत वजावहिंगी
अब येही उपाय करेंगि अली सो वसन्तपे कंतबुलावहिंगी

मिलि गोल गुवाल गलीन के मध्य अबीर गुलालउडावहिंगी
'घनश्याम' कटाक्ष करेंगे कभी पियको गहे बांह वतावहिंगी
गालिमें आलिगाय उठेंगी कभी ढपढोल अतंत वजावहिंगी
अब येही उपाय करेंगी अली सो वसन्तपें कन्त बुलावहिंगी

सुनके धुनचङ्ग मृदङ्गन की मनमथ्थ सगथ्थ जगावहिंगी।
वह कोयल कीर कलापिन के मधुरस्वर शब्द सुनावहिंगी।
अरविन्दन वृन्द मलिन्दनके मकरन्द सुगन्ध छकावहिंगी।
अब येही उपाय करेंगी अली सो वसन्तपे कन्तबुझावहिंगी।

ग्रीष्म —

ग्रीषम तपन लागी झुकन गभीर घाम
तेज मारतण्ड को प्रचण्ड होत आवेरी ।
' घनश्याम ' कैसे पन्थी डगर चलेंगे बीर
सघन सुछांह कहां वृच्छनकी पावेरी ॥
सूखजात सरिता समाज नीर कूपन के
लूअन लपट लाग स्वेद दरसावेरी ।
ऐसे समै वालम विदेशको गमन कियो
पीय बिन आली मेरो जीय अकुलावेरी ॥

ग्रीषम की घाम घनश्याम वा दुपहरी मांझ
खसके मवासपे गुलाब छिरकायदे ।
छूटनदे फरक फुहारे जल जंत्रनते
डारदे प्रसून होद अमित भरायदे ॥
घोर घनसार घिस चन्दन कपूर चूर
अंगन चढाय फेर विजन हलायदे ।

सीतल सुखारी सेज तापर बिछायस्वाय
प्यारी भरअंक मेरी तपत बुझायदै ॥

आज खसखाने के खजाने मनभावैं मंजु
शीतल गुलाबनीर छिरके सब गेल में ।
' घनश्यामप्यारे ' घनसारकी बनाई माल
भूषन अनेक चारु चन्दन की चहल में ॥
सेज संदलीपे प्रसून पट चारों ओर
अतर गुलाब आब बरफ रस फेल में ।
ओरा को मंगाय धरे चांदीके कटोरन में
करन लागे केल ये गुलाव के महल में ॥

धूम घनसारन की पवन पहारन की
डोरे जल धारन की झमकत झोरैं है ।
दम्पति विहारन की श्याम सुकुमारन की
चलत फुहारन की चारों ओर जोरैं है ॥
कम्बल कतारन की सन्दल बगारन की
जन्त्रजल डारन ' घनश्याम ' श्यामछोरै है ।
सारंग उचारन की दे दे करतारन की
ग्रीषम कछारन की झपट झकोरैं है ॥

सेज सन्दलीपे खूब खसके अतर छार
वरफ सिलानपे विछायत बनाय के ।
'घनश्यामप्यारे' वे मुरब्बा धरे वर्कदार
चांदिनके डब्बा और नीरमें लगाय के ॥
सुन्दर सुराई भर शीतल समीर लागी
घोर घनसार फेर विजन हलाय के ।
छूटत फुहारे बे गुलाबजल आबदार
पोढो प्रानप्यारी लेइ अंगसो लगायके ॥

छूटत फुहारे जलजन्त्रोंते पसारे पुंज
चलत समीर सीरी सौरभ अपार है ।
'घनश्यामप्यारे' अरु विजना ढुलावे सखी
अतर गुलाब आब अमित प्रकार है ॥
खोल खसखाने घिस चन्दन चढ़ाय अंग
नलन की न्हेरन की राजे जलधार है ॥
बरफ शिलापे ये सजाई सेज सन्दली है
आज ऋतु ग्रीषमकी अजब बहार है ॥

खूब खसबोइके खजाने खोलड़ारे भारे
खोले खसखाने धरे कुसुम गुलाब के ।

'घनश्यामप्यारे' ओप अवली फुहारन की
परत हजार धार केशरके आब के ॥
बिजना ढुलावैं चंहु औरतें चतुरनार
कोई पानदानी लिये मुख मेहताब के ।
राधिका गुविन्द अरबिंदके कुशल हाथ
कुसुम बिछाये सेज भर भर छाब के ॥

प्हेरे पट छीने ओ उतार धरे आभूषन
चन्दन चढाये अङ्ग रावटी उसीरकी ।
"घनश्यामप्यारे" घनसार की बनाई माल
मोतिया के पंखा मोज शीतल समीरकी ॥
सुन्दर सुराइ फेर ओरा ले बरफ मांझ
बरफी बरकदार शीरी शुभ नीरकी ।
हीरक कनी की चंहु ओर झग मग होत
चुभी राधिका के दृग दीठ वा अहीरकी ॥

ग्रीषमकी सांझ सेल सुरभी समीर हूकी
बरफ शिलान की बिछायत बिछाय के ।
'घनश्यामप्यारे' फैल फरक फुहारन के
सुन्दर सुराई धरे बरफजमाय के ॥

खुलगे खजाने खसखाने के खुशीमे खास
. ओराको मिलाय भर प्याले प्यास प्याय के ।
लिपट गई मालासी हियेसो मिलाय चन्द्र
गेर घनसार खड़ी विजना डुलाय के ॥

छूटत फुहारे जल धारे त्रे गुलाब नीर
सीतल समीर सेज सन्दली बिछाय के ।
' घनश्यामप्यारे ' घनसार केसे आभूषन
मोतिया सरस सारी अजब सजायके ॥
खसके अतर खास छिरके बसन गेल
चेल बेल फेल सब ग्रीषम मिटाय के ।
बरफ बरास चहुँ औरतें ढुरावे व्यार
पोढे प्रानप्यारी को सु छातीसों लगायके ॥

वर्षा—

आली ऋतु ग्रीषम विताये दिन पीय विन
कठिन कठिन करि वचि हौं मरी मरी ।
अबतो इलाज को न रह्यो कछू काज लखि
उठी है घटान विथा उमडी खरी खरी ॥
अजहू न आये हरि झरी जलभरी झूम
चहुँऔर देखो वन हो रहीं हरी हरी ।

छूटन लगेरी धीर धुरवा धवारी प्रान
    लूटन लगेरी बोल मुरवा घरी घरी ॥

जोलों जेठ लाग्यो तोलों जिद्द कर जाग्यो जीय
    रोसभरी रुखहूसों दूर दूर डोली में ।
' घनश्यामप्यारे ' मान मदतें मतंग भई
    अब लों कहिंन मनहूकी बात खोली मैं ॥
एहो कान मोकों वृषभानकी दुहाई लाल
    मानती कभीन बिछवाती कर झोली मैं ।
गाज उठ्यो गजबी आसाढ़सों दशो दिशमें
    देख 'घनश्याम' घनश्याम तोसों बोली मैं ॥

सावन सनेही सुन्यो आवन असाढहू में
    सोच सोच समझ तराजू बात तोली मैं ।
' घनश्यामप्यारे ' मेन मारेगो जरूर पिक
    एती सुन उमङ्ग उठेरी कुच चोली में ॥
कुक उठी कोयल कलापी मतवारे बीर
    विरहा जग्योरी ज्यों पडीरी आग होली में ।
उठे आडबल्लातें न जाने कोन सल्लाधार
    देख 'घनश्याम' घनश्याम तोसों बोली में ॥

पावस प्रवेश आज सकल समाज साज
गाज गाज मधुप ये मृदँग बजावेरी ।
कंज पुञ्ज मञ्जु मल्लीकान अनुराग आली
अवली अलापत अनङ्ग सरसावेरी ॥
झिलियां विहंग संग रंगमें तरंग लेत
कूक कूक कोकिला अचूक तान गावेरी ।
प्यारो घनश्याम आली आवत हमारे धाम
मेघ मदमातो आज चंचला नचावेरी ॥

पावस विलास सुखरास ये सनेह भरे
चात्रक उचारे सुर कुंजन सघन में ।
झीलीगन झनक बजावें झांझ झन झन
बाजत मृदंग धुन घेर घेर घनमें ॥
अब ' घनश्याम ' गुनी गावत मलार टेर
सुख उपजावे छटा कुंजन सघन में ।
दौर नाचे दादुर चकोर चहुँ ओर नाचें
घोर नाचें बकुल औ मोर नाचें वन में ॥

कड कड कड घूम घड घड धाड धाड
घरर घुमंड घोर आयो चहुं ओर तें ।

' घनश्यामप्यारे ' यों समीर के सपाटे होत
सडड सटाक झूम झंझा की झकोरतें ॥
डग मग होत तरु पल्लवसुमन भर
विरही प्रबल ज्वाल मदन मरोरतें ।
सन सन झनन झमंका होत दामिनी के
तडत तडक घन आयो बडी जोरतें ॥

कारे कारे घन कजरारे कढ़ आये अति
घोरे घोरे धारा धार धुरवा धुके परै ।
' घनश्यामप्यारे ' चकचौंधा होत दामिनी के
पवन प्रचण्ड हूते पंछी लुके परै ॥
काहू काहू कामिनी के पियु परदेश याते
पावस में जुलम जवासे से झुके परै ।
गद्दरसे आय नभ उलट समुद्दरसे
चद्दरसे झूम झूम वद्दर झुके परै ॥

घरर घरर चहुं ओर घिर आयो घन
प्रगट प्रचण्ड पौन प्रबल प्रकाशकी ।
' घनश्यामप्यारे ' धुरवान की धमंके धांर
मारकी मचक ये मरोर मनखास की ॥

बान सम बूंद विरहीन को बचावे कोन
डरत अकेली अटा चढत निवास की ।
ऐरी बीर मेघ के कडाके कडाबीनन के
तेगसी चमक जात बिजरी अकाश की ॥

कूक उठी कोयल कहूं ते आय कुंजन में
मधुप मयूर मोय सबद सुनावेरी ।
'घनश्यामप्यारे' घनगरज उठे हैं घटा
बरज उठो है बोल बिरहा सतावेरी ॥
चमक उठी है चारु चंचला चहुं दिशते
अबला अटापे चढ मोय तरसावेरी ।
मदन जगावे मोय विरहा सतावे आली
देख घनश्याम घनश्याम याद आवेरी ॥

सौरभ समीर सरसावें चहूं औरन ते
बरसत नीर बीर धीर ना धरावेरी ।
'घनश्यामप्यारे' नभ मेघ मतवारे फिरें
गरज घन घोर जोर जुलम मचावेरी ॥
दौर दौर दामिनी दिखावे मोय दूनी दुति
टर टर बोल बोल दादुर डरावेरी ।
मदन जगावे मोय विरही सतावे आली
देख 'घनश्यान' घनश्याम याद आवेरी ॥

घन न गरजे ऐगी हाकम हुकुम देत
जुगनू न होय ये कनिष्ट विलभारी है ।
' घनश्यामप्यारे ' पिक मोर हून जानिये जू
लेत एलकार जों इजार इकत्यारी है ॥
पूछत सवाल क्यों विदेश को पठायो पिय
महा रितु लागी तोको कोन विध खारी है ।
हुक्म सुरराज कीनी ड़िग्री रितुराज हू की
पावस न होय ये दिवानी फोजदारी है ॥

बैठी ही अटापे घटा देख के नवेली बाल
चंचला चमंके इत धूम धुरवान की ।
' घनश्यामप्यारे ' चहुँ और चढी चित्रचाप
होले बक वृन्द मनो फ़ोज गुरवान की ॥
आइ सुधि बालम की ताही सैन चौंक उठी
बरसत मेह लता लूम झुरवान की ।
कोयल की कूक सुन हूक उठी हिय मांझ
मदन मरोरे धुन सुनि मुरवान की ॥

क्योरे ओ पपैया पीउ पीउ बाकि बोलत है
क्योंरे श्रो मयूर ऐसे जुलम करेगो का ।

'कहैं घनश्याम' क्योंरे मदन मरोरे लेत
क्योंरे मेह बरस सब भवन भरेगो का ॥
पिय परदेश सों संदेश नहिं आवत है
पावस को पेशखानो दसर परे गो का ।
बेर बेर बढ़के घमंड़े घन घोर घोर
गरज गयो है फेर गरज करेगो का ॥

कोन ठौर सोतनके रह्योरी विदेशी छाय
कौन भोन नीको तहां सुख मानवे को है ।
'घनश्यामप्यारे' बात कहे ते बनेन कछु
सुख दुख नीको भलो जीय जानिवे को है ॥
आईरी सुहाई बीर वरषा की ऋतु येरी
मोसो औ अनङ्गसो का वैर ठानवे को है ।
बूंद बरसैंगी परसैंगी बीर अङ्ग अङ्ग
हम तरसेगी पिया नाहिं मानवे को है ॥

कैसे घन गाजे दल साजे भट वीरन के
मंड़ली छ्कमे श्याम जलज वितान के ।
घन सब कारें वे कडाके कडाबीनन के
तोपन के तुंग धन नाद वीरवान के ॥

घूम घूम घुंआ घूघ घर घर धारा धार
घुरवा निहार फेल फरक निसान के ।
दौड़े देन मदन मतंग मतवारे मेघ
मदन मरोड तोड़े देत गढ़ मान के ॥

मोरन को कीजो जो चकोरन को चुप्प करे
औरनसों कीजो कोई राग रंग गावेना ।
'घनश्याम' सब भूपन सों कीजो जाय
लायके गवैया तान पातर नचावे ना ॥
कीजो रंगरेज सों रंगे है सोही रंगे रंग
और कहूं अजब अनोखों रंग लावेना ।
जोलों कीर कोकिला कपोतन कों बंद करो
जोलों प्रानप्यारो हमें दरस दिखावे ना ॥

दौर चहुँ ओर ते झपेटे देत झंझा पौन
बिजुरी कड़ाके उत घन के घमंका है ।
'घनश्यामप्यारे' अंधियारी निसि घोस महा
झींझी झनकत जुगनू न के झमंका है ॥
चली प्रानप्यारी बनवारी के मिलन काज
मदन उमंगे पग पायल गमंका है ।

नेह काज मेह में नवेली अलबेली वधू
होन लागे पन्नग मनीन के चमंका है ॥

निसि अँधियारी घटा कारी कजरारी महा
लागत डरारी बरसारी झुकि झूम झूम ।
'घनश्यामप्यारे' चित्रसारी मे संवारी सेज
प्यारी बनवारी के लगीरी मुख लूम लूम ॥
दामिनी दमंक इत घनकी घमंक होत
चतुर प्रवीन पिय लेत मुख चूम चूम ।
जों जों घरियार दार मोगरी लगावे त्यों त्यों
बाला के वदन दुख व्यापत है रूम रूम ॥

कैसे जाऊँ उत घन घटा घहराय आई
इतको संजोग प्रीतहू को पथ गाढो है ।
'घनश्यामप्यारे' इत नदी नद बहन लागे
इतको अनंग नैन सेन दिये आडो है ॥
जों जों गरजे है त्यों त्यों बरजे विरेनी बाल
अचरा पसार गृह पलक सों झाडो है ।
कैसे होत जाय कहो कुंवर ओनार सिंह
नेह रोक ठाडो इत मेह रोक ठाडो है ॥

नीलो चटकीलो पीलो सोमनी रंगीलो श्वेत
केसरी कपासी फागताई छवि छायो है ।
'घनश्यामप्यारे' सब्जो सन्दली सिन्दूरी श्याम
मोतिया मंजीठी फालसाई रंग आयो है ॥
नारंगी नीबुआ गुलाबी ओ गुलेनार
चंपिया सुवापंखी नभ लै सुकायो है ।
दामिनी दलाल संग अजब खिले है रंग
सावन में इन्द्र रंगरेज बनि आयो है ॥

कारो सुनेरी स्याह सरबती बसन्ती लीलो
अगरगजई खसखसी रंग लायो है ।
निबुआ कपूरी श्वेत पीरो पिरोजाई तुसी
मूंगिया गुलाबी आंबी जाफर जमायो है ॥
मोतिया हरचो सिन्दूरिया गुलेनार सोसनी
केसरी सबजीसुं औरहि सरसायो है ।
दामिनी दलाल जरकसीसिंजाप दिये
सावन में इन्द्रजू बजाज बनि आयो है ॥

बोले ना मयूर पिक चात्रकन कूके कहूँ
दौर दौर दामिनी दिशान में दमके ना ।

'घनश्यामप्यारे' ठौरै ठौर ना पुकारै भेक
जोर ओर आये घन घोर के घमंके ना ॥
अजब विचित्र कैसे चढ़त है चित्र चाप
देखवो मधुर झिल्ली झिंगुर झमंके ना ।
बसवो विदेश चित फसवो हमारो आहि
तोलों प्रानप्यारी पग पायल ठमंके ना ॥

देख घन घटा प्यारी चढ़कै अटापे आव
अंजन अगाडी चले डब्बा मनो रेलसे ।
'घनश्यामप्यारे' गजराज काही बाज कैसे
कहीं जलमच्छ काही चीता काहि बेलसे ॥
गिर से शिखर काही मीलसे सुजभ धार
रथ से रचे हैं काही रुई के पहल से ।
छतरी से छतसे छपीसे छोलदारी से
काही गढी गढ़से मढी से काहि मेलसे ॥

कब घन घोरे कब बरसे सजल जल
केकी कीर कूक तैसी कंज हु ङ्किते गए ।
'घनश्यामप्यारे' घाम कां गई प्रभाकरकी
जलधर छाते सो जहां के तहां रहै गए ॥

दादुर दुकार ते सो दबगे दरारन में
अवध असाढ़ हग मगमें चितै रए ।
अनलोन आई पाती लाल मनभावन की
सावन में पीयसो सो आवन कों के गए ॥

मधुर मृदंग धुन गरजत मंद मंद
कोकिला कलापी तान रस तो भरी सीहै ।
'घनश्यामप्यारे' भेक खरज उचारे सुर
मधुप सरंगी झांझ झिल्लिन खरीसी है ॥
सबज दुलीचा भूम जुगनु चिराक चारु
पावस विलास सुरराज सुघरीसी है ।
नभमें निराली गति ले ले के अजब आज
परम प्रवीन नाचे चंचला परीसी है ॥

गरजे घन घोर घटा बरसे तरसे
विरही पिय प्यारे विना ।
घनश्यामजु दामिनि दौरे दुरे
नहिं मानि है केकी पुकारे विना
बहे कोकिल कीर कदंबनपे
पिक छांडे नहि कामि मारे विना ।
जुगनू चमके डर मोय लगे
पति मानें नहिं जिय जारे विना ॥

सुख सावन आयो अरी सजनी
कोई राग मलारन गाए नहीं ।
मन भावन आवन के जुगये
फिर नेक संदेश पठाए नहीं ॥
घनश्याम कहे अब कैसि करो
बदरा वरसे मन भाए नहीं ।
अब कीजिये कोन उपाय अली
बन भूमि हरि भइ आए नहीं ॥

बोले मयूर चहुं दिशते पिक
चात्रक गावन २ को लिख्यो ।
काम उमंग उठी घनश्याम तुमे
चित चावन २ को लिख्यो ॥
झूले हिंडोरन में मन भावते
सुख आवन सावन २ को लिख्यो ॥
पूरन प्रेमकी पत्रिका में मन भावन
आवन २ को लिख्यो ॥

ऊंचि अटापे घटा गरजे
बरजे विरही कर जोडे खडी ।
घनश्यामजु देख रही नभ को
परदेश पिया मतलाव झडी ॥

अब माने नहीं मुरवा कुहूके
इतको सुरराज की चांप चडी ।
कल नांहिं पडे पल पीय विना
ऋतुराजने मोंसों लईहै अडी ॥

कवित्त—

मोसोंने मायकें ते न्योत के बुलाई मोय
जेमन को पठाई मैंतो आइ नीठ डर डर ।
'घनश्यामप्यारे' जिय सकुचत सोई भई
मगमें मिल्योरी कान कांप उठी थर थर ॥
एते में अचानक ही वरसन लग्योरी मेह
आली बनमाली ले चल्योरी पांय पर पर ।
कामरी उढाई मोय भिजत वचाइ बीर
देख सूखी चूनरी चवाब होत घर घर ॥

आई संग आलिन के ननद पठाई नीठ
इत बनवारी आयो बेग पाय घर घर ।
'घनश्यामप्यारे' वह कुंजमें मिल्योरी मोय
ले चल्यो अचानक ही हाथ गहे सर सर ॥
बरसत मेह जल परत अपार धार
भाजि गई संगकी सहेली भाजि भर भर ।

मोय तो बचाई कान कांमरी उढ़ाई वीर
देख सूखी चूनरी चवाब होत घर घर ॥

पिय परदेश सो सन्देश नहि आनत है
घनन की घोर सुनि फटी जात छाती है ।
'घनश्यामप्यारे' वे चमाके चपला के होत
गिन गिन द्योस आली निशिनिशिजाती है ॥
पड पड पावस के प्रवल दुलीचा बीच
छतिया हमारी हाय पिस पिस जाती है ।
मदन कटाते वेध प्राननि पटा तें तैसी
उंमड अटा तें घटा घिस घिस जाती है ॥

बद्दलन होय तम्बू श्वेत श्याम लाल लखे
धुरवान होय डोर बांधी चहुँ फेरा है ।
'घनश्यामप्योर' ये गरजेरी जंजीर तोप
जुगनून होय ज्योति जाम की जगेरा है ॥
बुंदेना बरसे अवाज रम ढोलन की
वगुलान होय लगे गौरन के घेरा है ।
विरही विचारि को पावस न होय एरी
मदन अजंट के रंगीले रंग डेरा है ॥

छिन छिन मचकी चढाबे आसमान बीच
छिन छिन भोटा तरु भूमि परसत है
'घनश्यामप्यारे' गावें मधुप मराल तान
मोरन की टेर चंहु ओर दरसत है ॥
हरी हरी भूमि जलभारी चहुँ औरन तें
वहरत बीर वधू शोभा सरसत है ।
राधिका गोविन्द झूले सघन निकुंजन में
दरस करेरी आली हिये हरसत है ।

घन गरजेगे वन सघन होंवेगे सब
कीर चहकेंगे भौर भ्रमर गुंजारेगे ।
'घनश्यामप्यारे' सब सरिता भरेंगे कूप
भरन भरेंगे दौर दादुर पुकारें गे ॥
बालम नएंगे दुख कैसे ये सहेंगे वीर
मदन जगें गे पिक पीवहू पुकारें गे ॥
विष अचवेंगे दुख एतो ही सहेंगे आली
योंही प्रानलेंगे ये जरूर मोरडारें गे ॥

सावन सुहाव उपजावन बिरह विथा
जोर जोरे बद्दल ये घोर २ आवेरी

पाती ना पठावे प्राणप्यारो परदेश हू ते
छातीयों जरावे मेन मदद लगावेरी ॥
कूक कूक कोयल करे जो करे हूक हूक
शुक शुक सारी रटे कारी पर जावेरी ।
गारी सुनावे मोय नेक ना सुहावे वीर
देख नन्दलाल नन्दलाल तरसावेरी ॥

सरर सरर सीरो समीरन सुमन से
घरर घरर घोर घन घन घिरावेरी ।
अरर अरर बरसत वरसात बूंद
दरर दरर दौर दायन दरावेरी ॥
करर करर करे कले जो पिया रे बिन
फरर फरर फेर फुहारे फिरावेरी ।
झरर झरर नीर नैनन निहार बीर
देख नन्दलाल नन्दलाल तरसावेरी ॥

घनन की घोर चहुं और सोर मोर की
कूक कोकिका ये मलारन की गावनी ।
कोन भांति धीरज धरोरी वीर मन माय
'अब घनश्याम' घन लहकत दामिनी ॥

बालम विदेश बरसामें तरसान लागे
एहो निरदई छाई कोन देश छावनी ।
मदन जमावनी लगावनी पियासों नेह
विरह जगावनी ये आइ तीज सावनी ॥

सावन की तीज आज हरष हिंडोरे बीच
सोलह सिंगार साज झूले मन भावनी ।
'घनश्यामप्यारे' इत बादल गरज आये।
गावत मलार धुन लागत सुहावनी ॥
चलत समीर पचरंग चढी चित्र चाय
धुरवा धमंके इत दमकत दामिनी ।
लगन लगावनी है नीकी छवि छावनी है
चित्त उमगावनी है मदन जगावनी ॥

अतर उमद गुलकंद छन्द वारीतिय
अधिक अनंद मुखचंदकी उजारी में ।
'घनश्यामप्यारे' परि जंक पे प्रसून सेज
रति पति तेज होय हरक हुस्यारी में ॥
राग रंग होय अरु उमंग हो अंगहू में
खान पान हूकी सब चीज हे अथारी में ।

खीज नहिं चहिये ओ रीझ हो गुनन पूर
एती चीज चाहें वीर तीज की तयारी में ॥

आइ सज साजते सहेलिन के संग आली
झूलन हिंडोरे की सो मोज मन भावनी ।
' घनश्यामप्यारे ' पुंज सघन निकुंजन में
गुंजत भवँर कीर कोयल सुहावनी ॥
हंस हंस देत दोन्यो दोरे कर जोर जोर
पटुरी धरे है पाय मचकी मचावनी ।
अहा यह कटि लचकावनी त्रिया की देख
एरी चन्द्रमुखी तोपे वारो तीज सावनी ॥

बरसत मेह पिय कोनसो सनेह कीनो
दमकत दामिनी यो कामनी नचावेरी ।
' घनश्यामप्यारे ' जब हीते स्याम न्यारे भये
प्यारे भये साथिन के जीय अकुलावेरी ॥
हरी हरी भूम तामें इन्द्रवधू फैल रही
बोलत पपैया मोर मदन जगावेरी ।
दादुर डरावे मोय नेक ना सुहावे आली
देख ' घनश्याम ' घनश्याम याद आवेरी ॥

सखी सब झूलत हिंडोरे तीज सावनकी
मोय मनभावन की सुरता सतावेरी ।
'कहे घनश्याम' सब हरी जलभरी भूम
जलधर घून घूम झुक झर लावेरी ।
कूक कूक कोयल कलापी कुंज पुंजन में
कोऊ अपराधी ये मलार रागगावेरी ।
मदन जगावे मोय विरहा सतावे आली
देख 'घनश्याम' घनश्याम याद आवेरी ॥

झूलन कों आईरी अलीनपे चलीरी मिल
वाटिका सघन कुंज देखे मन भावनी ।
'घनश्यामप्यारे' चहुँ ओर धुन चात्रक की
तैसीये हरित भूम लागत सुहावनी ॥
डारी सखि रेशमकी डोर झूलवे के हित
सीखे विपरीत रीत चतुर ये कामनी ।
पावस प्रवीन चट साल में पढन काज
रीझ मन भावन ये आई तीज सावनी ॥

जैसी घन घटा झुक आईरी दशोंदिशतें
तैसी पुरवाई पौन चलती लहर के ।

'घनश्यामप्यारे' गोरे मुख की गुराई लखि
मन्द मन्द पडे कंद ठहर ठहर के ।
कहूँ कर जोड मत चढरी अटापे बाल
तोय देख दूनो क्षिति पडे हून सर के ।
मूंद री दृगनहू को मत ना निहार प्यारी
खून्द ये करेगी लाल चूंदरी हहरके ॥

श्याम घन सघन तमाल तरुनी के तल
उमग उमग संग झूम झुक झोरेपे ।
'घनश्याम प्यारे भो ये चपला चमक चोप
बोलत पपैया पिय नेहके निहोरेपे ॥
प्रीतकी प्रनाले ये समीर प्रेमहू को पुर
पड पड बूंदें झडलाग्यो गात गोरेपे ।
अहा कोइ चात्रक चकोर देखबे को सुख
कैसो वरसे हैं झुक बादर न वोरेपे ॥

जैसी यह पावस की परम पुनीत ऋतु
निठरु पपैया बोल चित्त चसवो भयो ;
'घनश्यामप्यारे' यह करें क्यों कलापी कूक
जोपे विरहि जनको जीव फसवो भयो ॥

और घन घोरे त्योर मदन मरोरे लेत
 तीज सुन एरी पंचबान कसबो भयो ।
और और नारी कैसी फिरें मतवाली हाय
 मेरी प्राणप्यारी को विदेश बसबो भयो ॥

दृडक दृडक पडें वूंद नभमण्डल तें
 खडक खडक केल पत्रतें रडक जात ॥
" घनश्यामप्यारे " अड अडक अटातें घटा ।
 फडक फडक घन बिजुरी कडक जात ॥
तडक तडक झंभा पौनतें विटप डाल ।
 बडक बडक अवनीपे येपडक जात ॥
भडक भड़क उठे विरही भवन मांझ ।
 पीयाविन जीय छाती धडक धडक जात ॥

गरजे आसाढ घन लरजे हीयेमे बाल ।
 खरजे अलाप तरे हेरी सुर गाय गाय ॥
" घनश्यामप्यारे " ऐसी पावस प्रवीन ऋतु
 कोन देश प्रीतम रहेरी छवि छाय छाय ॥
उमडे अकाश घन घुमडे घनेरी बीर
 अब ये बेपीर दुख देन लागे चाय चाय ।

अब न जियेंगी री पियेगी विष घोल आली
बरसनलाग्यो प्यारी विदेशन जाय जाय ॥

उमड घुमड घनघोर घहरात आवे
बरसत बूंदबान और ही तमीजपे ।
'घनश्यामप्यारे' लाल लहरिया रंगादेउ
लंगर छुडा जो चितहोय और चीजपे ॥
एहो प्रानप्यारी झूलो मेरे उर लाग लाग
कहूँ कर जोड़ हटछोड रीझ खीजपे ।
येही चितभायो आयो ब्रजतें उमायो मन
धीरज धरोतो मिलो सावनकी तीजपे ॥

वरसे जलधार प्रचण्डमहा चपला चहुँऔरन तें चमके ।
'घनश्याम' घटानकी पांति लगी नभमें घनघोर घने घमके ॥
अति व्याकुलहो विरही कहके अन्धियारिनिशा जुगनू झमके।
जिनके पियप्यारि तू हीय लगे परजंकपे वे विछिया छमके॥

सजके शृंगार नार झूलत मयंकमुखी
मचकी मचावे गुण चतुर निधान है ।
'घनश्यामप्यारे' वह तरुणी लचावे लंक
झूलत निशंक चीर फहरे निसान है ॥

झोटा बडे तरु छिन अवनी अकाश उर
गावत सहेली वो मल्हारनकी तान है ।
मेनका तिलोत्तमा उरवसी के मन्जुघोषा
उतरत परी के आसमानतें विमान है ॥

झूलन हिंडोरे की सो चाह करी चन्द्रमुखी
प्यारे नन्दलाल सो इसारो दृग कर कर ।
' घनश्यामप्यारे ' दोउ ओरतें नजारे होत
कान्ह वृषभाननन्दनी को ध्यान धर धर ॥
हाथ गहे प्यारीलाई पकर गोविन्दहू को
दोउ मिली झूलें मोहि लागत है डर डर ।
वे कहत आप झूलो वे कहत आप झूलो
आपस में करें मनुहार अंक भर भर

नाजुक नवीन ओ प्रवीन अलबेलीनार
न्योरे करिलाई सहेली नीठ घरते ।
' घनश्यामप्यारे ' चलती चाल धरनीपे
छबि वरनी न जाय नेक कविवर ते ॥
चली चन्द्रमुखी वो मरालगति झूलनकों
जुलफ जहाज चले ऐसी विधि तरते
करते पकर लर लंक लचकाय चढी
लाख कीने नखरे पटरीपे पांव धरते ॥

शरद ऋतु—

कवित्त—

सोहत मुकट शीश कुंडल श्रवण श्याम
मधुर मधुर धुनि बाजे कांन कारेकी ।
'घनश्याम' मण्डलबनाय व्रज गोपिन को
आंगुरीतें आगुरी मिलाय प्रानप्यारे की ॥
बाजत मृदंग सुर साजत समाजन के
सरस सरंगी ताल तरज केदारे की ।
चरनकी नूपुरकी नृत्यकटि काछनी की
चुभी मुसक्यान प्रान नन्दके दुलारे की ॥

चारों और चन्द्रिका चमाचम चमंके चारु
झिल मिल होनलागी तारनके वृन्दकी ।
'घनश्यामप्यारे' राका शशि के प्रकाश होत
कैसी उजियारी प्रानप्यारी मुखचन्द्रकी ॥
अतर इलायची के सौरभ समाज साज
चांदीके डब्बेमाँहि मुरब्बे कनी कैन्दकी ।
दूधके कटोरा दूधपेडा दूधपूडी साज
श्वेत सेज स्वच्छ तापे मोजें है अनन्दकी ॥

---

१ शरद में सेवन योग्य पाक ।

हेमन्त शिशिर-

बडे बड़े बीर बलवाननसों चूके नांहि
छत्री छत्रधारिनपे प्रबल परयो करे ।
' घनश्यामप्यारे ' नांहि डरत नवाबनसो
जिज्ज लाठ पलटनके अंगमें भरयोकरे ॥
विप्रनको वैश्यनको छांडत न एको पल
फक्कड गरीबनसों दूनो ही अरयो करै ।
माने नांहि गद्दर दुलाई ऊनवस्त्रन को
जाड़ो बदमास जरा आगसों डरयो करै ॥

कोहेकाशमीर को फकीर कोन पीर को तू
करत अदाह कैंधो जगके जनाने मे ।
' घनश्याम ' कैसे तपसीनको सतावत है
काहेको समात सबही के पटताने में ॥
रविके उदय तेरी छवि ना रहेगी शीत
भीतह्वे भजेगो ग्रीषमके सरसाने में ।
आवे दिन द्वेमे अब ग्रीषम विषम मांहि
पापतें अधमतूहि मुदेंगो तहखाने में ॥

मंजुल मसाले शीत कालके समूह राखे
चारों ओर चिकऊ डराई द्वार द्वारपे ।

' घनश्यामप्यारे ' मृगमद मलडारे चूर
वह्निजंत्र वारे धारे अंगतिय सारपे ॥
अम्बरके अतर अंगिठिनमें छांटि छांटि
बांट बांट केशर दुशाले रंगे तारपे ।
गलिम गलीचनके गेदुंआ गद्दप्पे तोहु
मेरो मनलागो वा नवेली नव नारपे ॥

काहेको कराये कशमीरके बनातकोट
जातवेदजंत्र मृगमद को धुकायके ।
' घनश्यामप्यारे ' मोज गुमज मकानमध्य
अम्मरके अतर कपूरीपान खायके ॥
गीलम गलीचा ऊनवस्त्रमें दबाये चारु
झडके दरनवेही दुलीचा विछवायके ।
पालाके मसाला वे चिराकनकीमाला आली
पोढो प्रानप्यारीकूं दुशालामें दबायके ॥

नवल वधूको केलिभवन बुलाय सेज
डारदीने पड्दा रंग केशरि जरद में ।
' घनश्यामप्यारे ' मृगमद मलडारे चूरि
जंत्र जातवेद के धरे हैं वे गरदमें ॥

मुसकहिनाकी दीक दबमा मकान मध्य
मंजु मुखराजे मानो चन्द्रमा शरदमें ।
लपट पर्‍यो है दाबि दशन दबायलेके
आहकर उचटी दुशालेकी फरदमें ॥

ऊनवस्त्र केशरीके झडपे गोखजारिन में
अम्मर को अतर मकान के फबै नहीं ।
' घनश्यामप्यारे ' धरे जंत्र जातवेद हू के
मृगमद डोरे तोहू उसनता छुवे नहीं ॥
बाज नवनीसी अङ्गकांपत न वोलत सुद्ध
गीलम गलीचन में लगत लवै नहीं ।
चारों ओर चमक चिरागन की माला आली
जोंलों तब वाला वो दुशाला में दबे नहीं ॥

वही जंत्रवारे भारे लपके सुगन्ध तैसे
आल दीपमाल लाल जालन जरें रहैं ।
परम प्रवीन बीन लेले सुखकारी सीर
दारचीन चीन राग रंगन भरे रहैं ॥
चूम चन्दवदन छिपाय पाय पायनसो
उरज उतंग अङ्ग अङ्गन अटे रहैं ।

गरदे करन सीत सरदे समूर कर
जरद दुशालन के परदे पड़े रहें ॥

चारों ओर महल में बांधके कनांते कोट
दरन दरीचनतें दपट दरारदे ।
'घनश्यामप्यारे' झाड़ झड़त फानुसनके
झड़प झरोकनको खोल चिकडारदे ॥
अम्मर अतर मृगमद के धुकाय धूम
चमक चिरागन की चहुंधा पसारदे ।
गलिम गलीचा गोल गिन्दुक दबाय चाय
प्यारी को परासि सीत बाहिर निकारदे ॥

सवैया—

सब महलन द्वारन द्वारन पर
चिक केशरि साटन डारि होवे जब।
लंप चिरागन की अवली
मृगमद की धूम धुकारि होवे जब ॥
घेंटुन लौंगदरा घनश्यामजू
तापर सेज सवारि होवे जब ॥
वह नटनागर प्यारो होवे इत
वह नटनारि प्यारि होवे जब ॥

श्रृङ्गारतरङ्ग—

दोहा--सप्तम मधुर तरंग ये, रस श्रृंगार की जानु।
या मे नायक नायिका, सुन्दर भेद बखानु ॥

वृषभानुसुता नन्द नन्दन आनन्द--
कन्दकों यों मनतें नितध्याऊँ।
ओ व्रजवीथिन कुंजविहारनि
लीलाचरित्र अनेक सुनाऊँ ॥
दम्पति के पदपंकजको 'घनश्याम'
घडी घडि सीस नमाऊँ ।
ध्याउ सदा गुनगाऊं यही सुनिये
'घनश्यामविलास' बनाऊँ ॥

दोहा--लोचन आनन मुखवचन उपजत गति मतिसार ।
ताहि बिलोकत नायिका वर कवि कहत विचार ॥
मैं कविता जानत नहीं रस नहिं देख्यो कोक ।
सकल कविन सों वीनती लीजे ग्रन्थविलोक ।
भाव सरूप विलोकि के कीनो कछुक विचार ॥
सो वरणो श्रृंगाररस मेरी माति अनुसार ॥
कहूँ नायका भेद यह आनन्द पूरन काम ।
लीला राधारमणकी वरन कहत 'घनश्याम' ॥
उनयो यौवन तरुणि तन प्रकट्यो चहुंदिशि आन ।
दुरेन दम्पति जगमगे ज्यों कतान में भान ॥

त्रिविध बखानो नायिका ग्रन्थ बिलोकि प्रमान ।
स्वकीय परकीय पुनि; तीजी गनिका जान ॥
त्रिविध नायका कहत है प्रथम स्वकीया जोय ।
पुनि परकीया जानिये तीजी गनिका होय ॥

स्वकीया—

निज पतिके अनुराग में निशदिन रहत अधीन ।
ताहि स्वकीया कहत है कवि पण्डित परवीन ॥
प्रीतरीत प्रीतम गहे सो नहि अनत विचार ।
गुरुजन जानत लाज है नित नायक सों प्यार ॥
त्रिविध भेद स्वकीय कहि मुग्धा प्रथमहि बाम ।
पुनि मध्या प्रौढा बहुरि वरण कहत 'घनश्याम' ॥

मुग्धा

नवजौबन को आगमन कछुक बालतन जान ।
रस ग्रन्थनको सार यह मुग्धा ताहि बखान ॥
नव जौबन दुति देखिके पियरुचि बढत अनन्द ।
लगी लालसा नेहकी ज्यों चकोर लखि चन्द ॥

स्वकीया मुग्धा—

राजे मंजु म्लेलमध्य मुदित मयंक मुखी
सालिल सुभाव सुध शीतल निवाह की ।
घनश्यामप्यारे' लाज लपटी सकलगात
जाकी रुचि पतिमें प्रवीन गति चाहकी ॥

शुद्धगुन सकल सिखाये कुलकान आन
गेर कर गेरन पढावे गुन ठाह की ।
काहूकी न माने दोस चित्तपे न आने ठाने
रेन दिन एन जाकी चाह निजनाह की ॥

कछु कछु चालमें मरालगति होन लागी
कछु कछु मन्द मुसक्यान में मिठाई है ।
'घनश्यामप्यारे' ऊंचे अचल उरोजनतें
कछु कछु बोलन में बढी चतुराई है ॥
कछु अंखियानतें विलोंके लगी बंकदीठ
वदनासिंगार कछु लागत सुहाई है ।
कछु कछु जोबनकी झपट झकोर लागी
सोतनके साल बाल विधने बनाई है ॥

चन्दसी उजारी मुख महकत मन्द मन्द
ललित छल छन्दन अनन्द की भरीसी है ।
'घनश्यामप्यारे' पीय पकरी अचानक ही
लचि लचि जात लंक कटि केहरीसी है ॥
पूरके प्रसूनन की सेजपे सुवाईं श्याम
बोलत न बाम काम लाजकी धरीसी है ।

रही सिरनाय कभी चितवत जात जों जों
नाह चितचाह अंक दाबत खरीसी है ॥

गोरी गोरे मुखकी गुराई अति गोरे गात
तेरो रूप देख रति पति हीं लूभानो हैं।
'घनश्यामप्यारे' वह हाटक फटक ओप
चटक फटीसी प्रभा पुञ्ज अकुलानो हैं ॥
सजत श्रृंगार प्रतिवृन्द उपमा को वृन्द
दीपति दुरेन दिव्य देह दरसानो हैं।
मानो अन्धकार को विदारके दरार कर
पूरन कलाको ससि हँस मुसकानो हैं ॥

मुग्धा भेद—

दोहा—दोय भेद मुग्धा कही, लखिग्रन्थन की बात।
बरन कहत हौं नायिका, एकज्ञात अज्ञात ॥

मुग्धा अज्ञात यौवना—

जोबन अपनी देहमें जो नहि जानत बाम।
सो अज्ञात बखानिये बरन कहत 'घनश्याम' ॥
जाय कहूंगी माय तें वह आवत नन्दलाल।
भीतर भवन बुलायके चूमत मेरे गाल ॥

कहा कहूं आली बनमाली ने रचायो फ़ाग
बाजे ढपढोल तहां देखत खरी खरी।

' घनश्यामप्यारे ' एते आयगो सुघरश्याम
अचक उठाई तन कांपत डरी डरी ॥
लेके चल्यो भीतरके भवन बुलाय मोय
उरते लगाय मुख चूमत घरी घरी ।
गेरके गुलाल दोउ हेर कुच कंचुकी में
टेर कर दीनी वेर नेकन करी करी ॥

ज्ञात यौवना—

दोहा--जोवन तनमें आगमन, आयो जाने वाम ।
ज्ञातयौवना नायका, तासों कहे 'घनश्याम' ॥

भोहें कबान दृगबान है निसान चीर
मन्द मुसक्यान है दिवान ध्यान धरिके ।
' घनश्यामप्यारे ' फोज सजत मनोजहूकी
छूटीलट सांग कुचढाल दोई अरि के ॥
सोलेही सिंगार है वरूद खास खेमा खूब
चक्र चन्द्रहार है हटेन युध लरिके ।
जोवन गनीमके नगारे आन बाजे तबे
भाजे शिशुताई के सिपाही कूँच करके ॥

दोहा--सकुचत है गुरुलोगसो मुखमंजन चित काम ।
फिर फिर पुनि पुनि भवन में दरपन देखत वाम ॥

नवोढा—

कछु भयतें कछुलाजते रति नहि चाहत पीय ॥
कहत नबोढा ताहि सों सकुचत कम्पत जीय ॥

आई संग आलिन के देख्यो बनमाली तहां
नइ दुलहिन मन धीरज धरै नहीं ।
'घनश्यामप्यारे' यों लपेट लई लाज हूनें
कांपत करेजों पग मगमें भरै नहीं ॥
भोत भांत संगकी सहेली समझाय रही
काहूकीन माने सुधि नेक विसरे नहीं ।
भाजगई भवन परोसनके पास जाय
पति की प्रतीत रंच रतिहू रहे नहीं ॥

चंचल चमक चित धरन प्रजंक पर
उरज उतंग अंग अंगन उरन देत ।
कहे 'घनश्यामप्यारे' उछरीसी मछरीसी
लगी थरथरी बाल अंकन भरन देत ॥
चौंक चौंक चकित चहुँधा चितवत जात
पिउके उछाह चाह कबौना करन देत ।
परसन देत तन सरसन देत काम
दूर दूर दूर होई भूमिपे चरन देत ॥

इत सरिता को नीर सजल तरंग उठें
वाटिका में चातक चकोर शब्द मोरको ।
'घनश्यामप्यारे' कर मंजन उपट अङ्ग
अतर गुलाब मन्द पवन झकोर को ॥
कंचुकी में कठिन कुच युगल सरोज दाब
कोर दार सारी लेंगा घूंघट मरोर को ।
सजके शृंगार ले सहेलिनको रंगचली
गावत प्रवीन जोर जोवन के जोरको ॥

बोलवो तिहारो मन मोसवो मयंक मुखी
चपल चातुरीसों ये बातन वनायवो ।
'घनश्यामप्यारे' अब जुलम कहां लो कहूं
तीरसोलगत तेरे नैननको बायवो ।
चालमें चलाकी चपलाकी चंचलाकी देख
गति गजराजकीसी सनमुख धायवो ।
जानको है लेन तेरो घूंघटको ओट देवो
प्राणको हरण तेरो हंस मुसक्यायवो ॥

विश्रब्ध नवोढा--

कहत बात समझाय पिय तियको परसत गात ।
शर्म मर्म भयते बने ज्यों लजवंती पात ॥

पिय आवत देख्यो सदन तिय जिय अतिहि सकाय।
प्रकट पडोसनके भवन भाजगई भयखाय ॥
कछुक पतीजत पीयको कछु चित सकुचत दौड।
ग्रन्थनको मत देखि काहि सो विश्रब्धनवोढ ॥

लपट झपट कर कपट कलाई मोर
सपट सटाक निकसी री भरी अंकते।
'घनश्यामप्यारे' पकरी यों सफरीसी
झिझक परीरी दुर दौरिके प्रजंकते ॥
फेर गह गेर गलबांइ समझाई अति
नांई नांई कहत मुख आतुर अतंतते।
होले होले हंसके भुलाइ भूल बातन में
अचक उठाइ तोहू लचक गई लंकते ॥

बातन भुलाय के बुलाय केलमन्दिरमें
लाइसब संगकी सहेली समझाय के।
'घनश्यामप्यारे' नवदुलही निगाह करि
देख परजंक बाल बोली सकुचायके ॥
सौरभ सुमन स्वच्छ कौतुक कहा है आज
एते नन्दलाल आयो लीनी लपटाय के।
भाजी भौनहूते डाल कर झर झोर मोर
अंकहूते उचट परी है गिरिखाय के ॥

उर लिपटाय कह्यो मुकुर मुकुर जाय
अति सकुचाय चाय चितसों करै नहीं ।
'घनश्यामप्यारे' फिरे चितवत चारों ओर
होके निशंक द्रग मग मह भरै नहीं ।
थिरना रहे थर थरात रोम उठिजात
श्वास न सभय भूल बात बिसरै नहीं ।
अति अकुलात बात कान न लगात हात
बोलत न साफ धाय धीरज धरै नहीं ॥

मध्या—

मध्यातासों कहत हैं दोइ संग लाजरु काम ।
रस ग्रन्थन को देखके वरण कहत 'घनश्याम' ॥
उठी बाल अलसायके मदन रह्यो तनछाय ॥
केलि भवन के द्वारपे खरीबाल सकुचाय ॥

चन्द्रसी उजारी प्यारी बैठी चित्रसारी बीच
आये बनवारी वो सँवारी सेज सुखकी ।
'घनश्यामप्यारे' अंक भरके प्रजंक हूपे
सुन्दर सवाई मन भाई मोज रुखकी ॥
कामकी कलान में प्रवीन कर प्यारो पीय
मांडी है मनोज छाप दोऊ ओर मुखकी ।

प्रात समें प्रीतम उठयो ही चाहे अंक छोड
बाल हिय छाई सो दिखाई रुख दुखकी ।

चन्द्र सम भाल रूप राजत विशाल जाको
चक्षु मृग छोना से हैं कटि मृगराज की ।
'घनश्यामप्यारे' कीर नासिका अधर बीच
नागनसी अलकें कंठ कोकिल अवाज की ॥
मधुप निकेत नाभी जंघ कदली को मध्य
मन्दिर मनोज सींच उपमा समाज की ।
बीरी मुखलाल चाल चलन गयंद गति
लाजपें अनोखी छवि मदन मिजाज की ॥

चक्रत चहुंधा केहि नर चकराये फिरें
तोय देख चन्द्र चारघडी ठहरयो करे ।
'घनश्यामप्यारे' केही पड़त पछाड खाय
जाही समे सारी सीस श्याम पहरयो करे ॥
केकही विलोक हँस हंस मुसक्याय मन्द
कोमल कपोलनपे लटी थहरयो करे ।
जाहर जहान जग जागत तमाम तोय
तेरे द्वार रूपको निसान फहरयो करें ॥

जैसी ये सफाई मुख कुचकी कठिन ताई
ललित लुनाई तरुनाई की झलक है ।
'घनश्यामप्यारे' देखी चित्तकी चपलताई
अतिही निकाई प्रेम प्रीतिकी मलक है ॥
तिरछी कटाच्छ धनुबान की धसन हीय
मन्द मुसक्यान खुशी देखत खलक है ।
कारी कारी कुटिल सपारी मनो पन्नगीसी
छूटी लटकारी इन्दु मुखपर अलक है ॥

भवन मे तडाग के तटही निकट तहां
सरस सीडी है ताल ललित सनेह की ।
जाके मध्यचन्द्रमा अनन्द सुख कन्द राजे
जामिनी उजारी आभा झिलमिल गेहकी ॥
'प्यारेघनश्याम' प्रेम पूरन प्रतीत व्रत
बहत अखण्ड नदी सुधारस नेहकी ।
ऐसी सुकुमारता उदारता मनोहरता
हेमलता कोमलता नाजुकता देह की ॥

नीर भरवे को चली सुभग शरीरवारी
मुख महताप ताप मृगकीसी आंखरी ।

' घनश्यामप्यारे ' बेनी फबत फनिन्द कीसी
 शीशफूल मानो चन्द्र शरद निशाकरी ।
चाल देख चक्रत मराल मुरझाये फिरे
 धन्नहै विधाता ताकी अजब अदाकरी ।
सुन्दरविलासतें सरायलों विछाय राख्यो
 गीलम गलीचापे गुलाबनकी पांखरी ॥

एक कर नरम कलाइ बांह उचीकर
 दूजे कर कूपतें भकोर नेज खेंचवो ।
' घनश्यामप्योर ' कटि लचिवो सुहागिनीको
 जितैको चितैवो ताको होत पर केंचवो ॥
हंसि बतरावो मुसक्यावो प्रानप्यारीको
 मीन सम दृगवारी भर भर उलेचवो ॥
शीस धर मटकी मिजाजतें मरोर कटि
 चलवो मराल चाल प्राननकों एँचवो ॥

प्रौढा —

काम कलोलनमें चतुर प्रौढा परम प्रवीन ।
पिय मुख चुम्बन दे रही दृग मिलाय लवलीन ॥
निज नायक के संग ऋतु लीला करत नवीन ।
लिपटी गलवथ होयके चिपटी चतुर प्रवीन ॥

अंकभरि बाय परिअंक पे सुवाई सेज
छाई छवि आहा दृग चितवन बंककी ।
'घनश्यामप्यारे' तहां महक प्रसुननकी
अतर गुलाब तर बतर निसंककी ॥
कर परिरंभ सिसकीन के मचाये सोर
जोर मनमथ पग पायल झमंककी ।
मेरे उर छाई वो छबीली की अनोखी छबि
लचकन अंक मुख हसन मयंककी ॥

आज निस सुखकी घड़ी है प्रानप्यारे संग
फूले जो कुमुद तो निसापति तजै नहीं ।
'घनश्यामप्यारे' कोइ बीनले अटापे चढ
डाटले कुरंग चन्द्र रथले भजै नहीं ॥
गिरजैयो सारथी ये टूटें रथचक्र कहूँ
कोहू मृगमारै तो सिकार का सजै नहीं ।
राहूपे घेरलेतो चकोर नहिं जानदे तो
फरज न होय हाय गजर बजै नहीं ॥

उठी अलसाय अंग केसर उपटि न्हाय
भूषन वसन केल मन्दिर सजाय के ।
'घनश्यामप्यारे' स्वच्छ सुन्दर सवार सेज
सौरभ समीर शुद्ध सुमन बिछाय के ॥

अंग लिपटाय निज पियको प्रवीन नारी
सब निस केलिकला कीनी सुखपाय के ।
लीनी भारि अंक परियंकपे पकरि बांह
जावन न दे हों मुखबोली मुसक्याय के ॥

पिक चातक चहुं औरते केका करत पुकार ।
दंपति काम कलानतें करत परस्पर प्यार ॥

मध्यमा प्रौढा भेद—

तीन भांति तिय होत है मध्या प्रोढा बाम ।
धीरा एक अधीर तिय धीरा धीरा नाम ॥

मध्या धीरा भेद—

कोप करे तिय पीय सों वचन कि रचना जानि ।
मध्या धीरा कहत है तासो परम सुजानि ॥

तुमतो सुघरश्याम सुन्दर सुजान होजु
तुमें कहा दोष यामें दोष ही हमारो है ।
भोर उठ आये भौन कोन तुम दीनी संक
'घनश्यामप्यारे' भयो भानुको उजारो है ॥
धन्य बलिहारि मोपे ऐसी कृपाकीन आज
प्रात ही प्रथम भयो दरस तिहारो है ।
पागन के पेचतो सवांरो व्रजराज प्यारे
काहूकी न माने ये हमारो कहा सारो है ॥

माढिगये कमल कपोलपे मधुप पियारे दांत ।
लालन अबतो मेटिये प्रकट प्रेमकी बात ॥

मध्या अधीरा—

मध्या होत अधीर सो बोल कठोर सुभाव ।
कोप जतावे पीयसो बरण कहत कविराव ॥

काहू.कीन मानो कान कोन तुमे केन वारो
करो मन भायो चितचायो कोन वरजे ।
'घनश्यामप्यारे' कोइ लाख कहो कैसी बात
तुम नन्दलाल भूल नांहि न विसरते ॥
बोलो ना विहारी ये वढाओ रसवाद योंही
हमसो जतावो कहा यामे कोन हरजे ।
करे जो परेखो देखो आछी बुरी बातन को
आओ या न आओ श्याम कोन सुने लरजे ॥

प्रगट पीठ कंकन गडन कुम कुम चमक प्रवाल ।
ठौर ठौर मनमानि धरयों तँह जाओ नन्दलाल ॥

मध्या धीरा धीरा—

कहत वचन तिय पीयसों रोय जनावे रोस ।
मध्या धीरा धीरये कछुक करो संतोष ॥
वह नायक कैसो अहो तुमसो कैसो मान ॥
बात कहत ही तीय दृग उमगे अति अँसुवान ॥

आज अंग आलस सिंगार तजबेठी बाल
बोलो बोल रूखे ऐसी कोनपे रुखाई है ।
घनश्यामप्यारे ' कुच कंचुकि संवारो नांहि
विथुरत बार कोइ नारिने सिखाई है ।
जीयको जरूर दुख क्योन कहो प्रानप्यारी
आँखिया असुवानसों भरत दुवाई है ।
कहा दुखमेरो जहां तुमसे मन भावन कान
करन लागे बातनमें नीकी चतुराई है ॥

प्रोढा धीरा—

रोस जनावे पीयसो रीति सो रे घनमन्द ।
प्रोढा धीरा कहत है पूरन चतुर दुचन्द ॥

रूखी मुसक्यानतें दृग न मिलावत है
ढीली भरि अंक यो प्रजंक चित लावे ना ।
' घनश्यामप्यारे ' कहा चूमत कपोल एसे
चातुरी चपल हाव भाव दरसावे ना ॥
ठानत गुमान नांहि करत अधर पान
चारोंओर सुमन सुगंध चितचावे ना ।
रुर परिरंभ पिय उरतें लगावे तोहु
कामकी कलाके ख्याल खुश हो बतावे ना ॥

कोप करि दृगनसों लोप कछु नेह हूको
बरन बनावे बात अंक भरि भरि कें ।
'घनश्यामप्यारे' रोस करत परोसन पे
कछु मुसक्यात इतरात मन हरि कें ॥
गद गद कंठ करि गरभुज डारि डारि
श्याम सुकुमारहू को ठाडी ह्वे पकरि कें ।
काहे को लगावत हो दोष अनदोषिन को
वृथाही बढावो वाद झूठे ही झगरि कें ॥

मान जतायो पीयको चतुराई अति कीन ।
सुन्दर भाव बनायके निपट कियो लवलीन ॥

प्रौढ़ा अधीरा—

भय बताय निज नाह को देत दृगन के बान ।
प्रौढा कहत अधीरतिय सुन्दर चतुर सुजान ॥
देत बान दृग बानके लागत कोमलगात ।
ठौर ठौर यह श्यामके जहाँ तहाँ चिह्न लगात ।

प्रगट प्रभाकरके पग मग धारे पीय
सदन सिधोस आये सौतिनके धामतें ।
अंजन अधर पीक पलक प्रतच्छ लखि
दृग कर लाल बाल बोली 'घनश्यामतें' ॥

काहेको कुटिल कान आये हो हमारे गेह
कैसे मिल्यो ओसर अंचभो आज कामतें ।
खेद भयो इते आत पावन मुलायमतें
दाबदेहो जागि आये रजनी तमामतें ॥

प्रौढा धीराधीरा—

करत उदासी रति समै नाह देत डर नार ।
प्रोढा धीराधीर यों कहे घनश्याम विचार ॥
वही आद बोलनलगी परम खुशी भयो जीय ।
पियकर पकरत ता समे किये क्रोध हग तीय ॥

आये प्रान प्रीतम प्रभात रति चिह्न लिये
बेठी पलकापे बोल लाई नैन भरिके ।
'घनश्यामप्यारे' गद गद कंठ धीर धरि
रहि सिरनाय खान पान हूं विसारिके ॥
बांह गही आन जबे सुन्दर सुजान कान
कोप कर कछुक सकोर मुख फरिके ।
दोष ना वखान्यो वो परसनको प्रीतमको
बोली नांहि बाल त्रो निहारी रोस करिके ॥

जेष्ठा कनिष्ठा—

दो तिय जेष्ठ कनिष्ठिका दो व्याही मित्र वाम ।
प्रथम पियारी दूसरी प्यारी पूरण काम ॥
अतर सुंघावत एकको एके कुसुम गुलाब ।
एके देत इलायची एके गुलकन्द आब ॥

सेज सुकुमार दोइ प्यारी आय बेठी बाम
बीच बनवारी को अनन्द बड़ो भारी है ।
'घनश्यामप्यारे' एक आसन बतायो चित्र
एक कुच कंचुकी में दाबत विहारी है ॥
एक कहि रातको रहूंगी आज तेरे म्हेल
एक कहि घोसमें सजाऊं चित्रसारी है ।
एक दियो बीडा मुसक्याय गलबांही गेर
एक मुखचूम माल मालतीकी डारी है ॥

ऊढा अनूढा भेद—

प्रेम पराये पुरुषसों करत तीय जो केत ।
ऊढा के द्वै भेद है बहुरि अनूढा देत ॥

ऊढा लक्षण—

और पुरुष पाणी ग्रहणी नित औरन को संग ।
तासों ऊढा कहत हैं सो कवि जन रस रंग ॥

कैसे या विहारी को विलोकों इन नैनन तें
एरी बीर गुरुजन तें अतिही डर्‍यो करूं ।
'घनश्यामप्यारे' नेक देखत कलंक लगे
शंक ब्रजबालन की उरमें धर्‍यो करूँ ॥
अबतो विचार मन बार बार आवत है
बेठके इकन्त जप तप ही कर्‍योकरूँ ।

येही वर मांगूं करतारसे पुकार कर
मोहन को अंक में निसंक ही भर्यो करूं ॥

कान्ह रंगायो लहरिया पोढी पियके संग ॥
हसत तीय पिय वचन सुन उड़ नहिं जावे रंग ॥

अनूढा—

करी सगाई और सों और पुरुष अनुराग ।
अनुढा तासों कहत हैं कविपण्डित बडभाग ॥

सवैया—

हौं बलिहारि तिहारि कृपानिधि
मङ्गल काज गणेश मनाऊँ ।
चोथको व्रत्त करों नित रीतसों
प्रीतसों ले नैवेद्य बनाऊँ ॥
पान ओ पुष्प सबै धरिके
'घनश्याम' कहे यह अर्ज सुनाऊँ ।
मात पिता अरु भ्रातको ये मन
फेरिये कृष्णसो मैं वरपाऊँ ॥

नन्दभवन चरचा सुनी सखी तिहारी बात ।
व्याह नन्दकिशोर को व्याह तिहारे साथ ॥

सुरत गुप्ता—

बात दुरावे वह वधू देत नही संकेत ।
बरन कहत 'घनश्याम' यों गुप्ता तासों केत ॥

परकीया मुग्धा....

चंचल चतुर हेके चांदनी के चन्द्रमा है
चपलाहै के अबला है कोन हे अटारी में ।
' घनश्यामप्यारे ' गजगामिनी के कामनी है
कैंधों दामिनी है रसनेहकी घटारी में ॥
जुड जुड खोल खोल बोल न सकत बाल
काहू बेर मार लेत नेनकी कटारी में ।
दरस दिखारी नेक सनमुख आरी प्यारी
हमे देख केसें मुख मूंदलेत बारी में ॥

परकीया मध्या—

के गइ बताय कर पल्लव प्रवीन बाल
मिलन मनोरथ को इसारो दृग देगइ ।
' घनश्यामप्यारे ' वे दलाल दूतिका ही मध्य
वेही निज भवन जहां की तहां रेगई[1] ॥
एकली अलीनतें गलीन छुट आगे बढ़
चंचल चलाकी कर चतुर चिते गई ।
छे गई छटासी घटा प्रीतम की प्रतच्छ आंन
मंद मुसक्यान में चुराय चित ले गई ॥

---

१ रह गई

अरि नीचे निहार मयंक मुखी
बिनती ये इती दृढ ठानति हो।
तिरछे चित वो कर जोर कहूं
'घनश्याम' की एति न मानति हो॥
खरसान संवारे चोधारे पटे
तुमरे जिय में तुम जानति हो।
दृगवान से भेद कवान अजो
कर कान लों कोनपे तानति हो॥

परकीया स्वाधीनपतिका—

बेनी नेजहु ते चढ्यो मो मन चकोर चोर
ठेरयो घडी एक शीशफूल तट जायके।
घनश्याम' लट हूते ' लटक कपोलनपे
अटकरह्यो है वो अनन्द छवि छायके॥
ग्रीवासों फेर नाल उतरयो पयोधर की
पोच्यो नाभिकुल कूप अति सुखपायके।
नाभी कूपहूते चढयो मेनमंत्र साधिवे को
बेठयो दोउ कुचन बीच आसन जमाय के॥

केधों कोहु पर्व पाय सर्व मन्त्र जन्त्रन तें
तकि तकि तंत्रनते चित्त हरलीनों तें।

' घनश्यामप्यारे ' का लिख्योरी भोजपत्रहू मे
केधों अष्टगन्ध को सुगन्ध भरलीनों तें ॥
केधों कहा कागरूको मोहिनी चलायो मंत्र
केधों इन्द्रजाल कोसो जाल जंत्र चीनो तें ।
केधों रूप सुर की तू झुरकी बनाय प्यारी
कहा जानूं कोन विध मोय वस कीनों तें ॥

नायक विचार—

सांचो दृढ़ नेम हेम जाँचो जो कसोटी मांझ
बांचो है वेदन ओ पुराण सो बताऊं मैं
'घनश्याम' अमित अखण्ड़ अरवीली प्रीत
याही रीत प्यारी दीठ नाहिन दुराऊं मैं ॥
तेरी सोंह मदन महीप की दुहाई मोय
लिखत करावे तो लिख्यो ही लिखजाऊं मैं ।
खातिर तिहारी जमा खातिर जरूर राख
तू जो बेचदेय तो जरूर बिकजाऊं मैं ॥

छलबल चातुरी सों और चित्त खातरी सों
और जो अनेक विध जांच जचवाय ले ।
'घनश्याम प्यारे' और जरसो जमासो और
तेग तरवारन सों सुरमा बनाय ले ॥

कोक की कलासों गानतान कविता सों तेरी
दिलचाय वासो जासों सामने भिडाय ले ।
प्रीतमों प्रतीत सों प्रवीन रस रीत प्यारी
एकबार आसिक को पहिले अजमाय ले ।।

कविप्रिया—

जाके नेक देखे जियचैन अति पावत है
जाके बेन सुनें तें सकोच काग नारी को ।
'घनश्याम' जाकी गलबांही गेरवे की छवि
मोसर नहीं है कोई और विभचारी को ।।
जाकी कटि देख मृगराज बन भूले फिरें
कुच देख भूलें वहे किंदुक अनारी को ।
गोरे मुखवारी के गरूर गारवे के हित
कैसी रचि विधिने हमारी प्रानप्यारी को ।।

कदाचित कनक तो नाहिन सुगन्ध वामें
जोपे चन्द्रमुख चख मृगसम पावैना ।
'घनश्याम' प्यारे कटि होय मृगराज कीसी
तोपे कवि कथ कुच कलश बतावे ना ।।
जंघ कदली को मध्य सुन्दर सुभग स्वच्छ
मन्दिर मनोज रोम रहित लखावे ना ।

रूपवारी नारिन के रूपक बनावें पर
सबै गुन मेरी प्रानप्यारी सम पावे ना ॥

चपल चरित्रन के चोंचले दिखावे दृग
असन कपोल मुसक्यान वो छबीली की ।
'घनश्याम'प्यारे वह तरूनी चलावे लंक
बंक छीनवारी प्यारी रमना रसीली की ॥
आई अलबेली के इशारे प्रीत पक्ष हू के
चलन मराल चाल राजत रंगीली की ।
कुच उचनीकी नीकी निपट परी की गति
दीखत चतुर चित्त चाह चटकीली की ॥

वह मृगनैनी वह चन्द्रमुखवारी नार
वह गजगामिनी वो नाजनी जहूर हूर ।
'घनश्याम' प्यारे वह कोयल से कण्ठवारी
कटि मृगराज कीसी बरसे दुचन्द नूर ॥
ऐसी वनितान सों संजोग भोग कीजियत
भाग्य बिन भली वस्तु कां मिले कहुं जरूर ।
काहू ठौर काहु के कुरूप निजनारी होय
जोपे पति वाको व्यभिचारी नहि होत धूर ॥

हंस मुसक्यावे नेह नेक न लगावे देख
'घनश्याम' पे न आवे येही चित्तमें धारले ।
कभी दृग फेरे कभी मिस मिस होत नेरे
वृथा मन गेरे ममताई क्यों न मारले ॥
समझ विचार प्यार करिबो कठिन अति
यातें अति कठिन निभैवो प्रण पारले ।
जीत गुरु लोगको फजीती को न राखे डर
प्रीतिहू करे तो प्रीत करिबो विचारले ॥

बारे तेंहि वीस लों पचीस लों कदापि ठीक
तीस परियंत तो मजा के गल गच्चे है ।
'घनश्याम' प्यारे तरुनाई के तमासे सबे
जोबन जरूर के जुलूस सब सच्चे है ॥
फेर तो प्रसूति मजबूती तो रहे न कछु
इती करें नैन ये रङ्गीले रङ्ग रच्चे है ।
जोबन को ढलन आगमन जराक होत
उछल उछल करे येही दिन अच्छे है ।

लाख बेर बिनती करोर बेर केन करी
मैं करी अब मदन नैन कहा धारी है ॥

'घनश्याम' प्यारे छिन छिन छिन तो सों कहूं
तोसी राजकन्या है न और कोउ नारी है ॥
अब गिरिधारीसों मिलो जो चित्तधारी होय
तेरे बिन प्यारी मोय पूरी बेकरारी है ।
गरजी भये हैं हम फरजी तुमे है पार
अरजी हमारी आगे मरजी तुम्हारी है ॥

मैंही देश पूरव पछाहलों विलोक आयो
दछन उतरबीच तोसी रूप रेखीना ।
घनश्याम सागर सुधाको भरदीनो कहा
समझ अपार बात सांची कहूं सेखीना ॥
हारगई चातुरी विचारगये मीन मृग
ढारगये सिंघ वे अनार छवि लेखीना ।
बूड गये व्याल वे मराल चाल भूलगये
प्रानप्यारी तेरी सोंह तोसी तिय देखीना ॥

पेरे जरीतास तामें अतरन की श्वास बास
मुख को उजास देख चन्द हू लजायगो ।
दृगन के देखेतें कुरङ्ग बन बास तज्यो
भौंह के तजेतें अब भौंर सकुचायगो ॥

नासिका के देखते हि कीरबन शीश धुन्यो
दशन के देखते हि कुन्द सरमायगो ।
तेरे छूटे बालन पे मेरो मन बँध्यो आली
बांध मत बाल मन मेरों बँध जायगो ॥

तीखे तरुन तेग तिच्छन तीर वीरन से
बरछी बन्दूक तलवार कीसी धारी से ।
'घनश्यामप्यारे' ये कमल कालिकँजन से
खञ्जन भरे से यह उपमा हजारी के ॥
तोहि देख सकल सरमिन्द भये तेरी सौं
चँचरीक और सब बन मृग चारी से ।
मतना निकास मुख तेरोरी प्रवीन आली
बारी तें नैन तेरे लागत ये कटारी से ॥

तारा सम प्यारी म्हने बीजूं नाहिं प्यारु लागे
जेटले न देखूं म्हारो जीव अकुलाय छे ।
केटलो कठोर कीधो प्यारा मन दीपक सो
म्हारो मन पतङ्ग ज्यों मरवाने धाय छे ॥
कोटि मुनि मुक्तिमाटे गोविन्दनो गान करे
म्हारोतो प्राण फकत तारा गुन गाय छे ।

एहो प्राणप्यारी म्हारी सुध न विसारो हाय
तारा मिलवाना माटे म्हारा प्राण जाय छे

जबसे लवसे लव जाय मिली
तब तें कलनाह घडी पल है ।
'घनश्यामजु' वो सुख सोवत में
मृग नैनी त्रिना न रती कल है ॥
रति के समै चुम्बन चाह करे
ते करे मन मानस में बल है ॥
जिहि के घर कामिनि ऐसी भली
तिहि के घर नौनिध ही मल है ।

जाहि लखे मुख माधुरि मूरति
सो छबि नैननसो न हटेरी ।
अङ्ग गुराइ लुनाई मनोहर
देखत इन्दु कलाइ घटेरी ॥
ये दृग वे मृग देखत ही
बनवासि भये मननाह डटेरी ।
ये मधुरी मुसक्यान सदा
'घनश्याम' के प्रानहि में खटकेरी ।

खण्डिता—

जाके परिपैया जाके रहे हो कन्हैया रेन
जाके गल लागो जाके अब गल लागे हो ।
'घनश्याम' जाओं ढीट कपटी कुटिल कान
सोतिन के संग जागे उन रस पागे हो ॥
अब चतुराई कहा हमसों करन लागे
जानी सगुराई भए प्रीत अनुरागे हो ॥
सोंहे नहिं खाइये जु अब न सकाइये जू
जाइये जरूर श्याम जाके भौन जागे हो ॥

प्रोषित पतिका ।

पोढी परियंक सेज व्याकुल विकल बाल
बेर बेर बालम में जीय भटकत है ।
'घनश्याम' प्यारे वो सरापे देत सोतन को
ननदी बिचारिन पे दूनी कटकत है ॥
मोर मुख चन्द्र तोर तोर माल मोतिन की
सुरता सनेह हूं की आय अटकत है ।
लटकत सोचहू की लटपे लिपट बाल
खटकत प्रानहात पाटी पटकत है ॥

चोखे चत्रमासे की अन्ध्यारी रात शोभा देत
कैसे जुगनून के झमंका झमक्यो करे ।

घनश्याम ' प्यारे कैसे दादुर हुंकारे करे
चोखी चंचलान की चिराके चमक्यो करे ॥
नदी नद नाले खाले आले निपट अथाह नीर
नभमें निराले आले घन घमक्यों करे ॥
बालम विदेश सो संदेश नहि आवत है
विरहन के अंगमें अनंग दमक्यो करे ॥

विरोहोत्कण्ठिता—

बारे ही बरस मांझ सोलह सिंगार किये
बैठी परजंक पर सकल सुख घूंट के ।
दीपक जगाय के ओ बनाके विछाय सेज
चन्दासी उजारी प्यारी रही सुख लूट के ॥
एते में दूसरी ही सखीने दुःख दीनों आन
दृगन तें आंसूं परे गई पार फूट के ।
'स्याम' को वियोग सुन एसे रही चुप्पचाप
जैसे बीन बाजती को तार गयो टूट के ॥

कृष्णा भिसारिका—

चली प्रानप्यारी बनवारी सों मिलन काज
निस अँधियारी में उजारी दीप माल है ।
घनश्याम ' प्यारे सब चमकी चुडेलनी हू
चित्तमें चकोर जानि चन्दका उजाला है ॥

कंज जान्यो हंस सब सिंहन भवानी जानी
असुर अचंभे भये कौतुक निराला है।
मेघजानी चंचला औ काम निज बाम जानी
नाग नाग कन्या देव जानी देव बाला है॥

ओढे स्यामसारी चहुँ ओर झुकी घटा कारी
निसि अँधियारी उर लाग्यो काम सर सर।
'घनश्याम' प्यारे नीलमणि के सिंगार किये
नीलकंज हार गले भरे भृंग पर पर॥
मृगमद बिन्दुभाल शोभित विशाल अति
सुरती सनेह की विहार याद कर कर।
मणिगण वारे वे भुअंग के समूह बीच
चलीजात बाल पूछहूपे पांय धर धर॥

नायक विरह–

लिखन सकोंरी लिखतो न रहूं तोहू पत्र
कहां लिख भेजू पर हाथ बात पाती में।
'घनश्याम' प्यारे मोय तेरी सुध आवत है
जबर जुदाइ जोर कसके या छाती में॥
कब मिलियोरी कब करिहौं इकन्त वास
डारगलवांही मोसों संग दिनराती में।

श्रावण सुदं आई भादों हुचकी चलि आई
ये आश आसोज लागी वेग मिलो काती में ।

आयो प्रानप्यारीजूको परम प्रवीन पत्र
जीव अकुलायो चित मिलन चह्यो चह्यो ॥
'घनश्याम' बांचन सक्यो री प्रीतहू की व्यथा
एते में अथाह नीर नद सो वह्यो वह्यो ।
बह गये वगर बजार पुर धाम के हू
रह गये निरस कठोर सो कह्यो कह्यो ॥
हाय मृगनैनी पिक बेनी सुख देनी तिया
तो बिन छबीली छिन जात न रह्यो रह्यो ॥

वैश्या

जोरदार जैपुर की अच्छी उदयपुर की
दगाबाज दिल्ली की ओ ठीक ठीक गाम की ।
'घनश्याम' प्यारे इन्दौर की है इरादे बन्द
छन्दवारी जोधपुर नारी रति काम की ॥
काशी की मुलायम मथुरा की मिजाज दार
बीकानेर पुंगल की छाया छवि बाम की ।
कोटा की अफण्डी गुजरात की गजर गण्ड़ी
ठण्डी निगाह की देखी रण्डी रतलाम की ॥

कुलटा

गौर अङ्गवारी प्यारी मिल सब नारी वृन्द
केसरी कपासी सारी ओढ़ें किनारी की ॥
'घनश्याम' प्यारे तरुनाई वा जुदाइ मध्य
शोभा सरसाई कंचु की है स्याम तारा की ।
लचकत लङ्क घूम घेरदार घाघेर की
चली मृगनैनी तान तीके सुर भारी की ।
अघर अघर पग घरत धरनि बीच
देखलो प्रतच्छ छवि छेल छिद गारी की ॥

धन है न दौलत है जर है न जोखम है
दूध के उफान को ले कहां घर राखेगी
' कहे घनश्याम ' मत रूपको मिजाज कर
बनजा बजाजन तू फेर मुख ताकेगी ॥
सोदा कर हमसों हमगाहक तिहारे है
दिलको दलाल कर नफ़ा फेर जाकेगी ।
हुस्न महबूब पाय वृथा जन्म तेरो जाय
सुख संसार को देख फ़ेर कब चाखेगी ॥

मुखकी झमंक ज्यों दमंक दामिनी की होत
रसकी रमक है सजाई घर ढोल्याकी ।

' घनश्यामप्यारे ' कंचुकीमें कुच शोभादेत
उर लिपटन ज्यों लड़ाई नाग नोल्याकी ॥
हम सुख भोगें सो लोगन के लागे लाय
और व्याभिचारीन के चार कड़कोल्या की ।
कहा कहों वाकी त्रिपोल्या की अनोखी छवि
घाघरी म.मंक पे ठमंक होत गोल्या की ॥

अब कानि दुरानि जिठानिफिरै घरमें ननदी मनमानि रहे
'घनश्याम'जु साल सवारहिते अपने जियरार मसानिरहे ॥
निज बालम जाय विदेश बसे भृकुटि ये परोसन तानिरहे ।
तुमभौननैं सोवो विदेशी भले यहां भूतनि त्यारि भयानिरहे॥

नारी महात्म्य--

चालमें चतुर चतुराई मांहि चोगुनी है
प्रीतमे प्रवीन रस रसमें रसीली है ।
" घनश्यामप्यारे " गुनगुनों में गुनों की खान
रूपकी निधान उपमान में सजीली है ॥
नाजुक है नरम नरमाई में नवीन बाल
जोवन में जुल्म रसतानमें रंगीली है ।
गोरी है गुलाबसी गुराईमें गरक कैधों
कोमल किशोर अतिलाज में लजीली है ॥

वैराग्य-तरङ्ग ।

यह तरंग वैराग्य की अष्टम ज्ञानगरिष्ठ ।
इहि लखि माया मदन सें बनत रु सन्त वरिष्ठ ॥

धायो प्रहलाद खंभ फाडके दरस दीनों
कंचन महल दीनें विप्र वा सुदामाको ।
'घनश्यामप्यारे' पांच पाण्डव बचाय लीने
द्रुपदाकी राखी लाज धायो जब रामाको ॥
ग्राहतें बचायो गजराज सब जानत है
भक्तनके हेत आप मार्यो निज मामाको ।
एसो वो दयाल एक छिनमें निहाल करे
रट्यो अष्टजामा सत दीनों सतभामाको ॥

गरुडकों छांड आप गजकी पुकार सुनी
अनल ते बचाये आइ बच्चा मंजारी के ।
'घनश्यामप्यारे' नाम देवजूकी छाई छान
कहांलों बखानो भक्त तारे जो अगारी के ॥
पीपा प्रहलाद सेन भक्त रइदास आदि
नानक कबीर वे कपोत जग जारी के ।
हिम्मत तिहारी तोसों अरज हमारी सुन
गाये गुन पाये पद अवध विहारी के ॥

गीता ज्ञान गावे समझावे सुबोधनी हूको
भागवत खोल के बतावे द्विज बार बार ।
'घनश्यामप्यारे' राम राम रामायन कहे
और भी अनेक ग्रन्थ धर्मसिंधु को विचार ॥
गरग संहिता है एकादशी अनेक ग्रन्थ
कृष्णजन्मखण्ड हरिनाम ही को तत्व सार ।
सुनियो तमाम धन धाम ना चलेंगे साथ
एरे नर मान एक पाप पुण्य तेरे लार ॥

बाजि पे चढेगो गजराजपे चढेगो तख्त
राजपे चढेगो पुण्य प्रथम जतावे गो ।
'घनश्यामप्यारे' ये सुकृत फल सिद्ध सिद्ध
जाय कर बैठ कै समाधि को चढावे गो ॥
माला फेर आसन हि बिछाय मृगछाला को
होयगो उजाला तेरो ताला खुलजावे गो ।
वेद समझावे राम नाम नर ध्यावे जब
बार बार तोंसो कहो एतो सुख पावे गो ॥

कपटको गेह कर राख्यो वित्तहू सो नेह
चित्तहूपे राखे नित चाह व्यभिचारी की ।

'घनश्यामप्यारे' घनी देखी मृग नयनी कौं
कंजु मुख वारी मंजु रूप उजियारी की ॥
तासौं कहूं भूलना भरोसो कीजिये हो मित्र
जालवारी जुल्मी वे जंजीर तीव्र धारीकी ।
खोटी सतसंग याहि रंगमे न रीझियो रे
भूलमत कीजियो प्रतीत पर नारी की ॥

प्रथमतो पंचन में भांवरी फिराई तो हि
कर पकराइ कह्यो उदर भरेगो तूं ।
'घनश्यामप्यारे' कुल वेद मरियाद कीनी
वेद धुनि बीच दीनीं तोहू ना डरेगो तूं ।
एरे ए अधम कैसे लीनो कर कन्या दान
अब पर नारी प्रानप्यारी हू कहेगो तूं ।
परनी कूं पीठ देकें करनी करेगो फिर
कैसे फिर जाय वहां तरनी तरेगो तूं ॥

डेरा पाल आय बेठ्यो मंजुल मराल एक
सर वर देह तामें लगत सुहावनो ॥
'कहे घनश्याम सीप सलिल निकारि देत
मुकता अमोल चुगे अति मन भावनो ॥

सुकृत सनेह हूतें केतिक बिताये द्योस
चेत्यो जब चित्त सिंधु लाग्यो पछितावनो ।
काहू समझाय कह्यो समझ समझ सिंधु
रोक्यो ना रहेगो ये विदेशी हंस पावनो ॥

नैनन् की सेन है न सेनये नरक हू की
हाथनको झालो ना बुलावो यमराज को ।
' कहे घनश्याम प्यार करवो न जानियेजू
पाप ही की ज्वाल मुसक्यावो हँस लाजको ॥
उर लिपटावो नाह गाहिवो अनल खंभ
चुम्बन नहीं है मुख वायस औ बाज को ।
सांच कहूँ लोक परलोकको बिगारवो है
खोटी पर नारी प्रीत करवो अकाज को ॥

धरम घटावनी बढावनी प्रतच्छ पाप
महा दृढ मुनिनके मनको डुलावनी ।
' कहे घनश्याम ' बुद्धि बल की नसावनी है
कुलटा कपट हूकी रचना रचावनी ॥
चिंता भय शोक कष्ट दुखित करावनी है
कर चतुराई परधनको चुरावनी ।

तेज भय कोप यमराज को बतावनी है
नरक पठावनी बनाई परकामनी ॥

दोउ धर्महीन कर्महीन शर्महीन भये
पापहू की बांधी पोट खरची अगारी को ।
' घनश्यामप्यारे ' कैसे चलिये निगम मग
छांडि निज पति निज पत्नी बिचारी को ॥
तजत पियूष बिष पीवत अथाह अति
हंसि हंसि वेद रुचि देत करतारी को ।
धिक धिक ब्रह्मन को धिक यह प्रीत हू को
धिक परनारी सो धिक व्यभिचारी को ॥

का तू करार कर आयो अरे मूढ नर
बुरो मत मान एक छोटीसी अरज है ।
' घनश्यामप्यारे ' जब मानस जनम पाय
हरि गुन गायवे को सिरपे करज है ॥
चन्द्र मुख वारिन के चक्र में पडोगे लाल
बाकी चाल चोखी चतुराई की तरज है ॥
ये तो है अजबघर अजब खिलोना यामें
हरी की गरज है के परी की गरज है ॥

सुमर हरिको डर काल को मिटाय देरे
ज्ञान करें ज्ञान शुद्ध ध्यान धर मन में ।
'घनश्याम' जब ही मिटेगी यमत्रास तेरी
और मारतण्डको प्रकाश होय छन में ॥
त्याग परदारा पर धन पे न राखु चित्त
त्रस्ना ही बुझाउ ऐसी बुद्धि राख तन में ।
परम पद पावे या अमर हो जावेगो रे
फेर नहिं आवेगो रे तू आवा गमन में ॥

एरे नर हेराना हरिको वहां तेरा कोन
ब्रह्मा भी घनेरा गीता ग्यान के प्रभाव में ।
'घनश्यामप्यारे' जब घेरा जम जालहूं ने
पावत वसेरा जाय कोन के मकान में ॥
बांधकर फेंका नीच नरक अठारे द्वारे
उलटा जब टेरा पीट कीटन थान में ।
पुत्र गढगाम मेरा और धन धाम मेरा
मेरा मेरा करत भये डेरा समसान में ॥

सुवरण दान गज दान भूमि धेनु दान
काहे को पडे हो अश्व दान के विचार में ।

'घनश्यामप्यारे' अन्न दान सो न और कोहू
व्यास शुकदेव लिख्यो अष्टादश सार में ॥
धरम को मूल दया दया मूल हरिनाम
काहू को सताओ मत रीजो या करार में ।
पण्डित बने भले हि कीजियो बिरानो काम
अश्वमेधको सो पुण्य पर उपकार में ॥

गाफल जनम क्यों गमावे नर देह पाय
चेत ओ अचेत कब चेतेगो चिता में तू ।
राम हु नहि ध्यावे हराम चित्त राखे हिये
पाप क्यों कमावे मोह जाल के किता में तू ॥
दारा धन धाम 'घनश्याम' सब स्वारथ के
काहे को लगावे चित मात ओ पिता में तू ।
कोन जन्म दीना भव सागर में भेजा कोन
कोन जीव कां से आया भूलता इता में तू ॥

करके पवित्र चित्त आसन जमाय दृढ
राम राम रटना रटोगे एक क्रमसो ।
'घनस्यामप्यारे' सुख भोगो भव-सागर के
चित्त हेत भूलके फिरोगे कहा भ्रमसो ॥

प्राणायाम प्रथम हि चढाय ब्रह्माण्ड हू में
बैठ के पद्मासन पे जोग मत श्रमसो ।
रचना अनेक खान पान रूप दारा सब
परी से मिलोगे के मिलोगे परब्रह्मसो ॥

कंजहू ते कैसी त्रिय कोमल कपोल वारी
परम पवित्र वाकी प्रीति में लुभायगो ।
'घनश्यामप्यारे' हाव-भाव औगुण न देख
वाके नैन बानन तैं सुधि बिसरायगो ॥
दूर ही फिरे कहा फसेगो मोह जाल हूं में
चाल देख लाल तेरो चित्त फँस जायगो ।
मान मत मान भले तान प्रीति की कमान
घेरे जमराज जब पीछे पछितायगो ॥

मोगरीन मार पग पैदल खड़ग धार
जमदूत लार अंधियार घोर निसमें ।
'घनश्यामप्यारे' भगवान को भज्यो न कभी
दौड दौड आवत फनिंद फैल रिस में ॥
बिच्छुन के डंक डर लागत कठिन पन्थ
रुदन करत कीट चौंटत है विषमें ।
श्रोणित नदी मे कैसे उतरत होत पार
तीव्र तुण्ड वारे जन्तु दौडे चहुं दिश में ॥

बांके बांके पेचा पचास बांध लीजो भले
मल मल अङ्गहूं पे अतर लगावेगो ।
'घनस्याम' प्यारे आच्छी मुल मुल मंगा खूब
कारीगर हू पे कोट कुरता सिमावेगो ॥
नीची नीची धोवती ओ झुकाई चस्माई कोर
मोज हू में मिसी को लगाय पान खावेगो ।
जब जमराज तोपे समन्नो पठाय देगो
देखें फेर कोन सी गली में भाग जावेगो ॥

स्वारथ में डोल्योरे प्रपञ्च में झकोल्यो अङ्ग
रह्यो धन सञ्चय में पुन्य तो कियो नहीं ।
' घनश्यामप्यारे ' पर तिय में लगायो चित्त
पुष्कर प्रयाग कोई तीरथ छियो नहीं ॥
एरे मूढ देगो कहा ज्वाब जमराज जू को
पूछे गो प्रतच्छ दान विप्र को दियो नहीं ।
मार मार मोगरीन चामडी उडाय देगो
एरे दुष्ट राम नाम कबही लियो नहीं ॥

प्रथम तो पापते प्रतच्छ बच रेवो ठीक
उरमें उदारता को रंच ही घटावे ना ।
'घनश्यामप्यारे' दान दीजे शुचि विप्रनकों
द्वार पर आवे संत रीतो फिरि जावे ना ॥

झूठ नहिं बोलिये तपस्या सब छीन होत
धीरजको धार कभी धेनु को सतावे ना ।
जींव को बचावे निज चरनन चित्तलावे
राम गुनगावे नर कभी दुःख पावे ना ॥

येतो भवसागर है भ्रमर अनेक यामे
विविध विचित्र ख्याल जाल में समावेगो ।
कहे ' घनश्याम ' ये अजबघर जानिये जू
चन्द्र मुख वारिन को देख ललचावेगो ।
खान पान राग रंग जज्ञ भोग भूतलपे
महलन में गलिम गलीचा बिछावेगो ।
धाम धाम देख्यो सुन्यो कामको प्रचण्ड तेज
राम चितलावेगो के बाम चित्त लावेगो ॥

माला मृगछाला ले इकंत जाय बेठ बन
सुद्ध भूमि सोध तामे जल छिडकायले ।
कहे ' घनश्याम ' पद्म आसन जमाय फेर
साधके समाधि आदि ब्रह्ममें मिलायले ॥
बंकनाल हूते श्वांस सो हमेस बंद होत
सुगम सुगम मगहूते पद जायले ।
आवा औ गमन सब छूट जैहे आशाधाम
छोड सब काम रामनाम गुन गायले ॥

आलसमें औसर तू गमावे का मूढ नर
ले ले हरिनाम तासूं भोत सुख पावेगो ।
' घनश्यामप्यारे ' कर सुकृत बढ़ाव पुण्य
जिंदगी सुधार नहि फेर पछितावेगो ॥
रेल जैसे ऊमर सटाक लौं सटाकि जात
फेरतो जरामे श्रम कहा बनि आवेगो ।
चेत तो चेत क्यों अचेत होय बेठयो प्यारे
फेर का चितापे जाय राम गुन गावेगो ॥

कह तू करार कर आयो गर्भ वास हूमे
भूल गयो भूल मन माया मोह जाल में
' घनश्यामप्यारे ' नहि विसरु हरि को नाम
जब ही निकास्यो लिपटयोरे नीच ख़ालमें ॥
लागत ही समीर संसार की अचेत भयो
बालतें तरुन भयो जोवन विशालमें ।
कोन भगवान् बाम काम लवलीन भयो
खबर नहीं है जो फ़स्यो है काल गालमें ॥

रूप देख घूंघट लगाय मुसक्याय देत
त्रियाके चरित्र देख भूल जाय रामको ।
शिव ब्रह्मादि आदि गजराज इन्द्र चन्द्र
कामको प्रताप बल पूछो घनश्याम को ॥

मोहित भये है नर नारी पशु पछी सब
लख छुज मुख चन्द्र मृगनेनी बाम को ।
दृढ़ चित राखियोरे ताकियो त्रियाको मत
नै तो खोय बैठे किये पुण्य हितनाम को ॥

बांके बांके पेच पाघ निरखत जात अंग
जोवनके रंगहूमें बोलत गुमान में ।
'घनश्यामप्यारे' देख ताकत फिरे है त्रिया
धनके गरब बीच अंत्र दोइ कानमें ।
मोचदार मखमलकी मोचडी बनाइ है है
कोन मो समान दीठ राखे आसमान में ।
आवे जब जम वे लगावे मार सोगरी की
रामको न लीनो नाम छिपा कोन थानमें ॥

थिर ना रहेगो धन योवन सदाई धाम
पानीके बबूला ऐसे देखत विलायगें ।
कहे 'घनश्याम' यह अल्प सुख अवनी पे
मात पिता पुत्र कोइ नजर न आयगें ॥
सभी ख्याल माया जाल झूठ रच दीनो राम
आय भवसागर में जीय वलमायगें ।
मानव तू माने तोय मान मान सांची कहूं
राम कूं न ध्यावे नर पीछे पछितायगें ॥

माया मोह माल सुख स्वारथ सनेह जाल
एरे लाल येतो सब झूठ ही के झांसे है ।
कहे 'घनश्याम' कोन मात तात भ्रात है जू
कोन जीव कां सो आये जाल बीच फांसे है ॥
ख्याल रच्यो विधिने रचाये नाम न्यारे घर
रुदन करे मृत्यु समें जीवन के सांसे है ॥
व्याव भयो व्याव भयो अब मुकलावो करो
पोढो फेर सेज तीन दिनके तमासे है ॥

शुद्ध चित्तही सों खुद भज भगवान नाम
त्याग परदारा अंगनी के खंभ गेगो ना ॥
'घनश्यामप्यारे' बेठ जायगो विमान हू में
बैतरनी रुद्रकी नदी भी उतरेगो ना ॥
कपट छल झूठ औ त्यागदे प्रपंचन को
परधन छांड त्रास यमकी सहेगो ना ।
देख मद अंध होय सुखमें धसेगो जब
फंदमें फसेगो जो तूं राम नाम लेगोना ॥

राजा कहां रंक कोइ जोगी जटाधारी कहा
सन्यासी बानप्रस्थ वसे जाय काशी हैं ।

'घनश्याम प्यारे' केई जोग धरें भोग करें
केइ केइ लोगन के देख गल फांसी हैं ॥
भेष धरें केई मद मास खाय मस्त रहें
धेन बध करें ऐसे नीच विसवासी हैं ।
बाल घात करते सकेन अब देखो बिने
जाए जब जानो सब नरक निवासी हैं ॥

कल कल करत नांहि करत अक्क काम
कहे 'घनश्याम' बात छानले तो छान ले ।
बेर बेर फेर नर देह ना मिलेगी मित्र
घटमें हरीको रूप जानले तो जान ले ॥
चोखी चन्द्रमुखीन चारित्रि हू न देखे कभी
प्रीतिकी कबान खेंच तानले तो तानले ।
रीति भय आपके हि नाहक फजीतो करे
जीती जिन्दगी को सुख मानले तो मानले ॥

भूल भ्रम माने एरे जाने नांहि जाकी विधि
पापहूं के गेहमें चलावे चाह लाज की ।
कहे 'घनश्याम' ये है कुम्भीपाक हू को पन्थ
हाव भाव बातें सब कपट मिजाज की ॥

रूप रसना ते जोर जकरत जालहूं में
जेते गुण पारिधि के सकल समाज की ।
चित्त को चुरावे मुसक्यावे वो बतावे राह
कामिनी नहीं है दूतिका है यमराज की ॥

वाकी कृपा होवे चित्त होत न चलाय मान
वोही जब तारे तब तारवो बने हेरे ।
'घनश्यामप्यारे' सुन मानव की कोन ताप
देव दानव की मोत वाही के कने हेरे ॥
खलक खपाये जग उपजावे एक छिन
कूर औ पण्डित बात एक न मने हेरे ।
केतो ही विचार करि देख नित्त नित्त मीत
क्षीर नीर न्याय चित्र गुप्त के कने हेरे ॥

मान नर मूढ ध्यान धरले गुविन्द जू को
भूले अब सान तेरी मत विसरानी है ।
'घनश्यामप्यारे' कहा रङ्ग में रचे है लाल
गीता ज्ञानहू की बात एकहू न मानी है ॥
आगे का करेगो जब घेरे यमदूत आय
कछु न चलेगी तेरी बन्द होय बानी है ।

धाम धन पुत्र मित्र कुटुम्ब यहां ही रहे
जायगो यहां ते फेर खुले कर पानी है ॥

ब्रजरज अंगमें लगाय लेंगे चारों ओर
मल मल अङ्ग गंग हू के जल न्हायगे ।
'घनश्यामप्यारे' देंगे कंठा औ तिलक छाप
माल तुलसी की गल देख के सब्यायगे ।
श्रवन सुनेंगे गूढ गीता को कठिन ज्ञान
जय जय राम मंत्र कृष्ण गुन गायगे ।
याही रीत हुसों भव सागर तरेंगे मित्र
हम ना डरेंगे जम आप डरजायगे ।

कमल मुखी के मृग नैनी के मिजाज लखि
मत इतरारे मान बचन हमारे हैं ।
'घनश्यामप्यारे' मतवारे भये डोलत हो
पाप पुञ्ज अन्ध कूप कारागार वारे हैं ॥
कहा रूप रंगके अधीन भये भूले फ़िरो
सोचके विचारो चारु धारके कटारे हैं
रामगुन गारे भव-सागर उतर जारे
तज दे विकारे यह मूत के पनारे हैं ॥

आनन्द तरङ्ग ।

पृथक पृथक रस भाव की कविता रङ्ग विरंग ।
आनंद नवम तरंग में लखु लखु अतिहि उमंग ॥

ठाडो रघुपति समरथ को सन्देशो पाय
जाडो बलवान हनुमान ध्यान धरके ।
'घनश्याम' राममुख कहत सियाको नाम
सुध करि करत प्रणाम पांय परके ।
मारों दशकन्ध कों विदारों सह मेघनाद
जारों फेर लंक महावीर युद्ध लरके ।
डंका दे विजै कपि कूदत निसंका खाय
मारके फलंका कूद्यो लंका लंका करके ॥

कहत मन्दोदरी सुनहो प्रिय लंक पति
तेरी शूरवीरता को बिरद घटावेगो ।
'घनश्याम प्यारे' कित जैहे फेर मेघनाद
कुम्भकरन हूं को पतो न करि पावेगो ॥
कहा भ्रम भूल्यो, भ्रात मिल्यो रघुवंशिन सों
मान मान मेरी तोय कोऊ ना बचावेगो ।
कहा इतरावे एतो मनमें गरूर लाय
जानकी न पावे जान गांठ की गमावेगो ॥

कूदत कुलंग कलाजंग पेच पेचन पें
मलफ मलंग वीर प्रबल निधान को।
'घनश्याम प्यारे' रामदूत अंजनी को सुत
फेलत फलांग फेर फांदत उड़ान को।
कूद कर छज्जे दरवज्जे दिवाल कोट
बागन मरोड तोड़ करत तोफ़ान को॥
आयो बली बंका दशकंध खाय शंका
जौ लंका पें आय बज्यो डंका हनुमान को॥

पूछे दश कन्ध सुन एहो द्विज शुक्र चारु
कौतुक लखाई पडे कहा करवे के हैं।
'घनश्याम प्यारे' कर जोरि विप्र केन लागे
वचन विचार कान ध्यान धरवे के हैं॥
क्रोध नहीं कीजे हो सुभट रण धीर वीर
होत बलवान सोतो युद्ध लरिवे के हैं।
सिया हरिवेके लेख तोय मरवे के सुन
लंकपति लंकहू के अंक जरिवे के हैं॥

चले चक्रवान इत फहरे निशान तुंग
बड़े बडे जोधा बलवान बलधारी है।

'घनश्याम प्यारे' भ्रात लछमन साथ वीर
इतै मेघनाद कुंभकरन अगारी है ॥
फेंकें तरु ओ बरषावे झड अनल पुञ्ज
उडे धूर धूधर घरापे धूम भारी है।
दोऊ और सेनापति साज दल गाज गाज
लंक पति देख देख वीरता विसारी है ॥

कूदें भालू कपि किलकारे करें कोतूहल
मारो मारो शब्द होत लंकाके दुवार पे।
'घनश्याम प्यारे' इतता कर इताउ काहू
बीर हांक बाजे बजे युद्ध के करार पे ॥
भभकत वीरघन गरजत मेघनाद
बानन की वृष्टि होत दोउ दल सारपे।
लङ्काके कोट पर फलंका खाय रामदूत
वामें जा असुरपुर जारियो विचार के ॥

देख बहे छत्रिन के छत्र जगमग होत
दूर तें बिलोक्यो तेज कोटिक दिनेश को।
'घनश्याम प्यारे' फेरें निशान रघुवंशी के
गरजें वितुण्ड फन फैलजात शेष के ॥

सुन सुन बालीके हि बचन विचार कर
आगर है अङ्गद के भुजबल वेश के ।
लंकापति लंका को संभाले क्योंन बेग अबे
आन बजे डण्का बीर अवध नरेश के ॥

तुम हँस बोले तो हम हूं हँस बोल लेंगे
तुम नहिं बोलो तो हमे न चित चेना है ।
घनश्यामप्योर ' जो हो परवा हमारी तुम्हैं
तोपे तुमारी ही परवाह बिच रेना है ॥
मन्द मतिवारे मित्र मन में मिजाज करे
तोपे शिर नाय नहिं राम राम केना है ।
काहे को वृथा इतरावो अरु घमण्ड लाके
खुशरो पियारे यहां लेना है न देना है ॥

भीड पडे भागे नर जागतो न जागे होत
स्वारथ को आगे ऐसो लोभी बड़े दामको ।
बोले ते न बोले गांठ चित्त की न खोले मन
और को टटोले भोत भोगी पर वामको ॥
ऐसे नर नीच के निकट नहिं राखे राम
दूर वसरेवो सांच कहवो 'घनश्याम' को ।
नाम बदनाम होय कामना सरे है कछु
सुनियो तमाम मित्र ऐसो नहिं कामको ॥

चलत समीर झट दीपक बुझाय देत
डसत भुजंग ताको उद्दना भरत है ।
'घनश्यामप्यारे' झट बीच्छू डंक मारुजात
डारजात विष अंग दूनों पजरत है ॥
ऐसे जान वायस बिगाड जात घट नीर
काट जात मूसा थान काजका सरत है ।
चुगल विरानो काम नाहक बिगाड जात
ऐसे बेईमान नहिं रामसों डरत है ॥

अनल को काम लक्ष लंकको पजारि देवो
दीपक को काम सदा तेल चसवे को है ।
कहे 'घनश्याम' पकवान दस घोस रहै
सागहू को काम दूजे दिन बुसवे को है ॥
चुगलन को काम तो चुगली चितायवे को
एसे नलायकसों ना पस्म खुसवे को है ।
चोरन को काम चुपचाप घर घुसवे को
गण्डक को काम तो सदा ही भुसवे को है ॥

आयो हों उमेद करि आपसों मिलन काज
वरजो अनेक बार काहू कीन मानी मैं ।

'घनश्याम' प्यारे जल बिन ज्यों तलफे मीन
प्रीतकी प्रतीति की प्रवीन रीत ठानी मैं ॥
बीचही बकील बात डारदई ठट्ठा मांहि
प्यारे के तिहारी अबौं भूल्यों ना निशानी मैं ।
देके विसवास फेर मिलतन आय पास
आशकी निरास भई जारी मेंस पानी में ॥

कैसे कैसे मनुज मिजाजमें न मावत हैं
मठठ लगावें बातें अकल अथाग की ।
कहे 'घनश्याम' मोप डोरा को घमंड करें
कभी ना होवेगी होड हँस अरु काग की ॥
जाने नांहि साहित संगीत रीत राजन की
डीडूं ते न होय होड मनधारी नाग की ।
मूरख तैं चातुर की कभी ना होवेगी होड
चीतातें न होय होड पचहत्ता बाघ की ॥

साबतही कोट पतलून पायजामा टोप
बूंट बढिया है कैंधो मनमथ को छोग है ।
'घनश्यामप्यारे' मेज खुरसी सिकारी श्वान
मेंम है मजा की नर नारिन को जोरा है ॥

आवरी अटापे प्यारी देखतो छटा ये कहा
तम्बू है के तोप है के बङ्गल को कारा है ।
तूल मखतूल कैसे गङ्कर गयन्द गिर
तुम ही विलोको ये फरङ्गी है कि गोरा है ॥

१

सिंह कि डाढमें श्याल बचे नहि
नारि बचे न जहां व्यभिचारी ।
काल के आगे मराल बचे नहि
जाल के आगे है मीन की ख्वारी ॥
ज्यों खगराज के चोंचमें पन्नग
मूस हि आय मिले है मंजारी ।
राम बचावे बचे तबही सुन
जैसे सरोता के बीच सुपारी ॥

कपि ईस लियो करपे गिरि को
गिरि कन्दरा में इक स्यालियो सोयो ।
आधि गई निसि वो 'घनश्याम' जु
जाग्यो जबै इत बीत को जोयो ॥
बोले विराद्र के जबही तब
वाकोई बोलिवे को मन होयो ।

१ इस कविता में घनश्यामजी का नाम नहीं है परन्तु उनके प्रेमी उन्हीं का मानते हैं ।

ये सुन शब्द चहूं दिसतें जब
जंबुक जाय अकाश में रोयो ॥

समता लई सूर सुभट्टन नें
अवनी पर अंश नदारद है।
जब तेज बढ्यो अंगरेजन को
सब भूप भये मुनि नारद है॥
'घनश्याम' जु मद्य धुसो धरनी में
सुनी यह बातको हारद है।
कवि कायको सोच बिचार करे
इहि कारन भारत गारद है॥

सुन एति कृपा करतार करे
नवनिद्ध भण्डार सबे भरदे।
'घनश्याम' जु देह दुरस्त करे
कछु पिण्ड पराक्रम हू धरदे॥
फिर होय हवेली नवेली तिया
पितु मातु ओ भ्रातु भर्‍यो घरदे।
बरदे जो कदाचित कृष्ण भले
जरदे फिर पुष्ट देही करदे॥

अधर सिला छे रंगबाड़ी बडी ताजा छे जी
चून्यो तो जिमाय दो भायलाजी चालो बागामें ।
'घनश्यामप्यारे' थांका गोठ्यानें बुलाओ फेर
छोगा भी गुलाबका धरोने खूब पागा में ॥
मिसरी मंगालो और भांग्या भी घुटालो आज
करालो अनन्द वो वसन्त और फागा में ।
सेजा भी बिछास्याँ पान बीडा मगवास्यां
सुणो रंग माळवाकी चालो म्हाकी जागा में ॥

कीनी बहुत चातुरी चलाकी ओ चतुराई
ऐसे छल बल भेद काहू के कनै नहीं ।
'घनश्यामप्यारे' तेरे तात मात भ्रातहूं पे
डाऱ्यो इन्द्रजालरूख रोससों तनै नहीं ॥
कहा करू केतो पचहाऱ्यो हौ उपाय रच
तोसों सजोग आज मिलवे को बनै नहीं ।
तेरो वह चेरो चोर चूतिया गवांर गोल
हीजडा हरामजादो हमसों मनै नहीं ॥

कैंधो सूरदासम तें सहर भऱ्यो है सर्व
चोथो दरवाजो फेर काहेको फुड़ा दियो ।

' घनश्यामप्यारे ' मतवारे भये बोलत है
गिनतीन जानो बोल टोलसो गुड़ा दियो ॥
चतुरन को चोखी विध बार द्वार दीखत है
चारन की अवलां तें एक को तुड़ा दियो ।
है तो चारपोल्या ताको कहत त्रिपोल्या तुम
एकद्वार आखो ही अडंगा में उडा दियो ॥

गोरे गोरे गिलगिले गुलाबी रंग अंग के
थौरे थोरे ड़ोरे वे कसूंभी नैन धारे में ।
'घनश्याम' प्यारे कैसे भोरे भोरे बोलत है
हँस गहे हात लिये जात ये निवारे में ॥
उरतें लिपट कैसी चेटक लगावें चित्र
ठेठके सिखण्डी जुडे रहे न कभी तारे में ।
अजब अमोल स्वच्छ सुन्दर कपोल वारे
गोल गोल मोडें के हि लोंडे नाथद्वारे में ॥

बगतेश चारण रचित—

काली किलकार हनुमन्तकी हुकार फन
आवत हजारतें फुंकार नाग शेसकी

कपिल कटार नरसिंहजी की थाप कैंधो
खुली विकराल आंख तिसरी महेश की ।
कडक पडत पडी ताकी दृष्टि डाकनी की
राजत प्रचंड जोत द्वादश दिनेस की ।
कोन घोस बारे अरे कालकी अनल उत्राल
काल को तमाचो तरवार वगतेस की १

भरतपुर के गोपालकवि रचित २

वसन्त—

संतरी ध्यान धरे जिनको
तिनहूं नहि पार न पावत तंतरी ।
तंतरि तान तमूरा लिये
कर बाजत झांझ सबे विध जंतरी ।।
जंतरि जीवनमूल गुपाल जो
कंसकुं मारि कियो भसंमतरी ।
मंतरि कान लगी अबला जिन
द्वारस जाय मनायो वसंतरी ।।

१,२, वगतेश कवि और गोपाल कवि की रचनाएँ घनस्यामजी के संग्रह में गुथी हुई थी उन्हे इस सागर से पृथक् करने का विचार किया था परन्तु कविके प्रेमीगण ऐसा नहीं चाहते है। अत; लिखनी पडी है । स.

आयो छे वसन्त आंबा मारिरह्यो ठामा ठामा
त्यांथी बीण वृछे फूल्या फूल कंठ मालाने ।
झीणो झीणो ओढीने लगाड़ी कंचुकी में चोवो
भरसूं गुलालने रमीसूं नन्दलालाने ॥
सांकरी वहूने तो लगारे परवाह नथी
आखो दाडो सासूना रहेछे हात चालाने ।
आली प्रेम वाई पेली सांकरी वहूने एवी
आंकरी परीछे जोवा जैयना गुपालाने ॥

थाको रूप देखवाको आंख्या के अनोंखा चाव
अगम उछाह नित करा गुणवन्ताजी ।
पलका को पांवडा बिछास्या व्रज नन्द प्यारा
गौरीने निहाल कीजे नेह उलहंताजी ॥
मन म्हाकों थांसू मनमोहनजी लाग्योरहे
सांची कहां साजन सनेह मेहमंताजी ।
प्यारी थांकी वालमजी नीत प्रीत वढी रहे
इ ऋतु बसंतमें मिलोगा कद कंथाजी ॥

होरी —

एक और सुन्दर सखिन संग श्याम लसे
एक और ग्वालिन से प्यारेनंद वारे है ।

एक ओर वीथिन के बीच रंग कीच मची
एक ओर केशर के छूटत फुहारे है ॥
एक और सोहत गवैयन के गोल आछे
बीन ढप ढोल एक ओर धुधकारे है ।
उड़त गुलाल नभमण्डल में लाल आज
तारे आसमान के गुलाबी रंग धारे है ॥

कोऊ है निसंक लंक लावेना नागरी को
कोऊ बृजवारे पर घूंघट उघारे है ।
कोउ पिचकारी मारे स्वांगहू संवारें कोउ
द्वारे द्वारे दौर दौर फाग ललकारे है ॥
केशर सहाब औ गुलाब आबवारे भरे
छूटत फुवारे लाल धोरे नदीनारे है ।
भारे भारे परवत चोखे उपवन सारे
तारे आसमान के गुलाबी रंगवारे है ॥

खेलत विहारी अरु कीरत कुमारी फाग
सो छबि निहार लाल तस मन पारे है ।
संग गोपी ग्वाल अंग अंगमें अनंग रंग
प्रेम औ उमंग भरे गारी हू उचारे है ॥

आज व्रज कुंकुम अबीर और केशरके
सुन्दर गुलाब युत छूटत फुंहारे हैं ।
उडत गुलाल नभ मण्डलमें लाल आज
तारे आसमान के गुलाबी रंग धारे हैं ॥

धोरे बहे रंग ओ गुलालन के चहुं ओर
शोर के अबीर येक वीर ललकारे हैं ।
कोरे कहा येरी व्रजराज तज लाज आज
डोलत ये वीथिन में बनिता निहारे हैं ॥
हारे दीप काम देख युगल अनूप छवि
दबिगो दिमाग सुध बुधही बिसारे हैं ।
सारे भुवमण्डल समुद्र लाल लाल भये
तारे आसमान के गुलाबी रंग धारे हैं ॥

बासन बगीचे सींचे अतर उगीचे कीचे
अतर सुगन्धन के परत फुँहारे हैं ।
राजत हृदेश फाग मन मथ मोहनपे
उडत गुलाल जनु जलधर धारे हैं ॥
बाल भाल मोतिन के मालपे गुलाल परी
भामत रसाल छवि जाल चटकारे हैं ।

मान पंचबान के सिंगारे रूप धारे भारे
तारे आसमान के गुलाबी रंग धारे हैं ॥

चोवा चारु चन्दन की हलचोट बंदन की
चाले लगी सही नन्द नन्दन अगारी तें ।
आई ब्रजनारी सुकुमारी जे दुलारी तने
करत सुमारी गाय गारी पिचकारी तें ॥
तब सिरदार मूंठ मूठसी तिहारी राधे
संग दृगबान मारी लगत चलारी तें ।
जोहीं बनवारी लयो गाफल गरीब तोही
बड ब्रजनारी कियो पकर पिछारी तें ॥

स्याम चोखूँटी अरु सुघाट ठाठ देखि या को
पहिले कल्दारनसों होय जात भेटी है ।
नाम डोडसों को लेत डोलासो उथल जाय
और एर गेर को तो देखवो ही छेटी है ॥
राग रागनीन के भरे है कुँज पुंज यामें
गुँजत मधुपन की सतसुर पलेटी है ।
प्यारे गुपाललाल धरत नाहिं हेटी याहि
अजब अनोखी पेटी इस्क में लपेटी है ॥

महबूब सागर

हाव भाव रस है अलङ्कार ओ नायिका है
    ...ते सुमृति है रस शब्द ललिताई के।
'घनश्यामप्यारे' अनुप्रास के प्रकाश तामें
    भोग औ विलास के मिलाप सुगराई के॥
चतुरन और सुघरन को शिरोमणि है
    मूरख नपुंसक को लगै दुःखदाई के।
रूप के उजागर सागर महबूब तामें
    इस्क के झकोरे झकझोरे आशनाई के॥

तेरी सुध आती मोय निसिदिन आठो याम
    बेर बेर मतो गजनेर को विचारतो।
'घनश्यामप्यारे' देतो जव्वर जुवाबी तार
    मन हूँ की बात रात बैठ उर धारतो॥
तेरी सोंह सांची कहूँ सेर हूँ न खातो नाज
    एरी चन्द्रमुखी तोहि भूलना विसारतो।
नींदनमें आधीरात ख्वाब में खुशी के साथ
    एरी जाफरा[illegible] जाफ़रान के पुकारतो॥

बासक को खेल जैसे कठिन हो खड्ग धार
    जातें अति कठिन फलंग मृग राज की।

घनश्यामप्यारे ' नट नाटक को खेल जैसे
मोमको तुरंग चलवो पावक अंदाज की ॥
रीझ खीज रोस रस राजत पृथीपति सी
उपमा कहांलों कहूं रूपके जहाज की ।
ओबे बेवकूफ ओ नालायक हरामजाद
तू का बात जाने मेहूँ भूपके मिजाज की ॥

चात्रक मही में जल बरसे अकाश हूं ते
चन्द के विकास तें चकोरको सहारो क्यों ।
दीपक दिखातो जो सरूप उजियारो नाह
आतुर पतंग जर मुरतो विचारो क्यों ॥
श्रवन सुहाये सुर सबद सुनाये बिन
छाय फम प तो कुरंग बल हारोक्यों ।
जोपे यह नीत रीत ऐसी 'घनश्यामप्यारे '
मेरो महबूब मोसों रहत नियारो क्यों ॥

जा दिना सतायो महबूब को बुलायो यहां
रच्यो हो प्रपंच वह पचोली पासवानी को ।
अधरम विचार चितधारके वही साथ
नेकीको हि त्याग काम कीनो बेइमानी को ॥

चौंक भये चक्रत कचेरी सब कूर भई
रूप देख पूरन मयंक दिलजानी को
संग न्हाल्यो नीच पाछ नागडा त्रिभंग न्हाल्यो
संग न्हाल्यो ठाकुर कपूत ठुकरानी को

तेनें हँसदीनो मैंने मनमें समझ लीनो
तेने दृग फेरे मैंने तुरत पेंचाने हैं
' घनश्यामप्यारे ' वे ईशारे आंगुरी के किये
इस्कके अनूठ मग देखकें दिखाने हैं
प्रेम चटशालमें पढ़े सोहि प्रबीन होय
करे जो कदापि याते कठिन निभाने हैं
मनके मिलाने सरमाने दरसाने नेह
नैन के लगाने नये प्रीतिके निसाने हैं ।

जाके लिये नृपति निहोरा करें बार बार
जाके लिये मित्र घट लावें शीश पानी के
' घनश्याम ' जाके वे हजार जने हा हा खाय
हाथ जोड ठाडे रहें एक पगवानी के
एरी मृगनयनी मयंक मुखवारी नार
तें चित चपल किये ब्रह्मा मुनि ज्ञानी के ।

तेरे ना चाकर तेरे बापके न चाकर ये
चाकर हैं एक तेरी हुस्नके जवानीके ॥

चपल चरित्रन के चौंचले चपल चित्त
नेनन नचाय चाय मंद मुसक्यावेरी ।
कालिंदी किनारे नन्दलाल गोपबालन में
गइया गोपग्वाले ये घेर घेर लावेरी ॥
ताके मध्य सांवरो सलोनो व्रजराजप्यारो
चंचल चलाकी चाल चालमें दिखावेरी ।
जीय हुलसावे पिय नांहि घर आवे बीर
देख नन्दलाल नन्दलाल तरसावेरी ॥

फेंक बजरंग तेरी बांकडीसी वज्रमूठ
काकडीसी नार याकूं सहज चबायजा ।
करजा कलेवा याके करेजाके काली नाग
रुद्र छांड छांड और प्रेतन छकायजा ॥
चखजा चटाक चौक फारडार देखेकहा
आंतन की दांतन तू कर चट धायजा ।
पाजी पालीवाल मतराख या कचेरीबीच
नीच विप्र जमन्याके निश्चे प्राण खायजा ॥

एकहू श्वांस नहि खोइये खलक बीच
कीचड कलंक अंग धोयले तो धोयले ।
उर अंधियारो पुन्न पापसो भरी है देह
ज्ञानके चिराग चित जोयले तो जोयले ॥
मनसा जनम बार बार ना मिले है मूढ
प्रभु जू सों प्यारो प्रेम होयले तो होयले ।
छिनभंग देह याहि निश्चल विचार नर
बीजके झमंक मोती पोयले तो पोयले ॥

कुञ्जा ये कुचामन के लाये मथुरेश कवि
पूछी जब कहि यामैं ठंडो नीर चाखिये ।
'घनश्यामप्यारे' पक्को पांच सेर मावे जल
रूप कहा लागे कहों झूठ नाहि भाखिये ॥
तीन कलदार की कही सो ये कवी की वात
याकी सुघराइ देखि और कहां झांखिये ।
थोडेही दामको श्रो मुसाफिरी के काम योग
मोज मन होय तो भले ही पास राखिये ॥

उपसंहार

नाथ पुर सर्वस श्रीनाथ के द्वितीय तनु
पूज्य श्री पितामह के आश्रय चढी चढी ।
' कवि घनश्याम जू की ' भक्ति रस भावपगी
कविता सुकामिनी सी मोदले कढी कढी ॥
हाय पर कालगति बिच्समें विचित्र घटी
दुःखित बिचारी असहाय ह्वै पढी पढी ।
गोस्वामी तिलक पूज्य गोविन्द तिहारी कृपा
आज वही अधिक उमङ्ग तें बढी बढी ॥

वल्लभ सुपुष्टिपथ सतत प्रवासी भासी
वागरोदी कृष्णचन्द्र नाम गुण पा लिये ।
सेइ के श्रीनाथजू के पादपद्म तापहर
तेरी ही कृपाकी कोर शीश सुखछालिये ॥
भाव रस भक्तिभरे कवि घनश्यामजू के
कवित अनूठे तिन्हे सुघर सजालिये ।
घनश्याम सागर ये नामदे तरङ्ग नव
संग्रह किया है उसे गोविन्द ? संभालिये ॥
अति कठिनाइ साज कविवर श्रीघनश्याम का ।
सागर पूरण आज हुआ गोविन्दकृपालुभाजि ॥
इति शुभम्